वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT
1995-96

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
NEW DELHI

विषय-सूची

संकल्पना 3

न्यास का निर्माण 4

संगठन 4

संक्षिप्त विवरण तथा झलकियां 6

कलानिधि

कार्यक्रम क : संदर्भ पुस्तकालय 13

कार्यक्रम ख : राष्ट्रीय सूचना प्रणाली तथा डेटा बैंक 19

कार्यक्रम ग : सांस्कृतिक अभिलेखागार 20

कार्यक्रम घ : क्षेत्र अध्ययन 24

कलाकोश

कार्यक्रम क : कलातत्त्वकोश 30

कार्यक्रम ख : कलामूलशास्त्र 32

कार्यक्रम ग : कलासमालोचन 36

कार्यक्रम घ : कलाविश्वकोश और कलाओं का इतिहास 39

जनपद सम्पदा

कार्यक्रम क : मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह 41

कार्यक्रम ख : बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां 42

कार्यक्रम ग : जीवन शैली अध्ययन 42

कार्यक्रम घ : बाल जगत तथा गतिविधियां 46

कलादर्शन

कार्यक्रम क : संग्रह 48

कार्यक्रम ख : संगोष्ठियां और प्रदर्शनियां 48

कार्यक्रम ग : स्मारकीय व्याख्यान 51

कार्यक्रम घ : अन्य कार्यक्रम 52

सूत्रधार

क	:	कार्मिक	53
ख	:	आपूर्ति एवं सेवाएं	53
ग	:	शाखा कार्यालय	53
घ	:	वित्त एवं लेखे	53
ङ	:	आवास	54
च	:	शोधवृत्ति योजनाएं	54
छ	:	राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ संबंध स्थापन	55
ज	:	अंतर्राष्ट्रीय संवाद	58

भवन परियोजना 65

अनुबन्ध

1.	:	इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्यों की सूची	66
2.	:	इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की सूची	68
3.	:	अधिकारियों की सूची	69
4.	:	इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में परामर्शदाताओं की सूची	72
5.	:	वरिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं/कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं की सूची	73
6.	:	वर्ष 1995-96 के दौरान हुई प्रदर्शनियों की सूची	74
7.	:	वर्ष 1995-96 के दौरान संगोष्ठियों/कार्यशालाओं की सूची	74
8.	:	मार्च, 1996 तक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशनों की सूची	75
9.	:	फिल्म/वीडियो प्रलेखनों की सूची	105
10.	:	अप्रैल 1995 से 31 मार्च, 1996 तक हुई घटनाओं की तालिका	108

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

वार्षिक रिपोर्ट - 1995-96

संकल्पना

श्रीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति में स्थापित इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कल्पना एक ऐसे संस्थान के रूप में की गई है जिसमें सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक अलग अस्तित्व रखते हुए भी पारस्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति में, प्रकृति, सामाजिक संरचना और ब्रह्मांड व्यवस्था के साथ पारस्परिक रूप से सम्बद्ध हो।

कलाओं के विषय में यह दृष्टिकोण जो मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखण्ड रूप से जुड़ा है, और उसके लिए आवश्यक भी है, श्रीमती गांधी की इस मान्यता पर आधारित है कि कलाओं की भूमिका मनुष्य के लिए व्यक्तिगत रूप में तथा एक सामाजिक प्राणी के रूप में उसके अंतरंग गुणों को विकसित करने के लिए आवश्यक है। यह दृष्टिकोण सम्पूर्ण विश्व को एक समझने की (विश्वबन्धुत्व) एवं विश्व की अखंडता की भावना (वसुधैव कुटुम्बकम्) में समाविष्ट है जो भारतीय परम्परा में सर्वत्र मुखरित है और जिस पर महात्मा गांधी तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे आधुनिक भारतीय मनीषियों ने भी बल दिया है।

यहां कलाओं के क्षेत्र को बहुत व्यापक रूप में देखा गया है, जिसमें शामिल है : लिखित तथा मौखिक रूप में उपलब्ध सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और लेखाचित्रकला से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म जैसी दृश्य कलाएं, अपने अधिक से अधिक व्यापक अर्थों में संगीत, नृत्य, नाट्य जैसी प्रदर्शनात्मक कलाएं और मेलों, उत्सवों तथा जीवन शैली में उपलब्ध वह सब कुछ जो किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो। प्रारंभ में केन्द्र अपना ध्यान भारत पर ही केन्द्रित करेगा, लेकिन आगे चलकर वह अपना क्षेत्र अन्य सभ्यताओं तथा संस्कृतियों तक बढ़ा लेगा। अनुसंधान, प्रकाशन, प्रशिक्षण, सृजनात्मक कार्यकलाप तथा प्रदर्शन के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से केन्द्र कलाओं को प्राकृतिक तथा मानवीय परिवेश के संदर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेगा। अपने समस्त कार्य में केन्द्र का आधारभूत दृष्टिकोण बहुविषयक तथा अन्तर्विषयक दोनों प्रकार का होगा।

केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

1. कलाओं, विशेषकर लिखित, मौखिक और दृश्य स्रोत सामग्री के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना।

2. कला, मानविकी और सामान्य सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित संदर्भ ग्रंथों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों के अनुसंधान और प्रकाशन के कार्यक्रम हाथ में लेना।

3. सुव्यवस्थित रूप से वैज्ञानिक अध्ययनों और सजीव प्रदर्शनों का आयोजन करने के लिए क्रोड संग्रह के साथ-साथ जनजातीय और लोक कला प्रभाग स्थापित करना।

4. प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के माध्यम से विविध परम्परागत तथा समकालीन कलाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद, विचार-विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराना।

5. दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना, ताकि बौद्धिक समझबूझ के उस अंतर को दूर किया जा सके जो अक्सर एक तरफ आधुनिक विज्ञानों और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति, जिसमें परम्परागत कला-कौशल तथा ज्ञान शामिल हैं, के बीच उत्पन्न हो जाता है।

6. भारतीय प्रकृति के अनुरूप अनुसंधान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन के लिए मॉडल तैयार करना।

7. विविध सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल ताने-बाने के रचनात्मक तथा गतिशील तत्त्वों को स्पष्ट करना।

8. भारत और विश्व के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता को बढ़ावा देना।

9. कला और संस्कृति के अन्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ संचार साधनों का विकास करना और कला, मानविकी और सांस्कृतिक धरोहर के संबंध में अनुसंधान कार्य करने और उनको मान्यता प्रदान कराने के लिए भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों और अन्य शिक्षा संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करना।

विशेष कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं के माध्यम से कलाओं में अन्योन्याश्रय संबंध, विभिन्न क्षेत्रों के बीच परस्पर प्रभाव तथा जनजातीय, ग्रामीण और शहरी तथा लिखित एवं मौखिक परम्पराओं के बीच पारस्परिक संबंधों का पता लगाया जाएगा और उनको अभिलिखित तथा प्रस्तुत किया जाएगा।

न्यास का निर्माण

भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, कला विभाग के संकल्प संख्या एफ. 16-7ऽ86- कला, दिनांक 19 मार्च, 1987 के अनुसरण में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास को नई दिल्ली में दिनांक 24 मार्च, 1987 को विधिवत् गठित एवं पंजीकृत किया गया था।

प्रारंभ में एक सात सदस्यीय न्यास स्थापित किया गया था। बाद में भारत सरकार की अधिसूचनाओं के द्वारा न्यासी मंडल में नए सदस्य जोड़े गए।

वर्ष 1995-96 के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के न्यासियों की सूची अनुबंध-1 पर दी गई है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की जो कार्यकारिणी समिति भारत सरकार द्वारा गठित की गई थी उसके सदस्यों की सूची अनुबंध-2 पर दी गई है।

संगठन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संकल्पनात्मक योजना में वर्णित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए और अपने प्रमुख लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए केन्द्र अपने पाँच प्रभागों के माध्यम से कार्य करता है, जो संरचनात्मक दृष्टि से स्वायत्त होते हुए भी कार्यक्रमों के आयोजनों के मामले में परस्पर जुड़े हुए हैं।

इन्दिरा गांधी कलानिधि : इसमें (क) मानविकी विषयों तथा कलाओं में अनुसंधान के लिए प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप

में कार्य करने के लिए बहुविध संग्रहों से सुसज्जित सांस्कृतिक संदर्भ पुस्तकालय है, जिसे सम्बल प्रदान करने के लिए (ख) कलाओं, मानविकी विषयों तथा सांस्कृतिक परम्पराओं (धरोहर) पर एक कम्प्यूटरीकृत राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डेटा बैंक और (ग) सांस्कृतिक अभिलेखागार तथा कलाकारों/विद्वानों के बहुविध व्यक्तिगत संग्रह और (घ) क्षेत्र अध्ययन की व्यवस्था है।

इन्दिरा गांधी कलाकोश : यह प्रभाग आधारभूत अनुसंधान कार्य करता है। यह ऐसे दीर्घकालिक कार्यक्रम आरंभ करता है, जिनमें (क) कला और शिल्प की आधारभूत संकल्पनाओं का एक कोश तथा बुनियादी तकनीकी शब्दों का संग्रह और अंतर्विषयक शब्दावलियां, (ख) भारतीय कलाओं के आधारभूत ग्रंथों की शृंखला (कलामूलशास्त्र), (ग) भारतीय कलाओं के विषय में समीक्षात्मक कृतियों के पुनर्मुद्रण की शृंखला (कलासमालोचना) और (घ) भारतीय कलाओं का एक बहुखंडीय विश्वकोश सम्मिलित हैं।

इन्दिरा गांधी जनपद-सम्पदा : यह प्रभाग (क) लोक तथा जनजातीय कलाओं और शिल्पों से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री का संग्रह तथा प्रलेखन करता है, (ख) बहुविध संचार माध्यमों के जरिए प्रस्तुतियां करता है, (ग) जनजातीय समुदायों की बहुविषयक जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए व्यवस्था करता है जिससे कि समग्र भारतीय सांस्कृतिक दृश्य प्रपंच और पर्यावरणात्मक, पारिस्थितिक, कृषिविषयक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक आयामों के ताने-बाने के वैकल्पिक मॉडल तैयार किए जा सकें। इनके अलावा, (घ) उसने एक बाल रंगशाला स्थापित की है और (ङ) एक संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित करेगा।

इन्दिरा गांधी कलादर्शन : यह प्रभाग कला एवं संस्कृति के एकीकृत विषयों तथा संकल्पनाओं पर अंतर्विषयात्मक संगोष्ठियों एवं प्रदर्शनियों के लिए एक मंच की व्यवस्था करता है। इसके भवनों में तीन रंगशालाएं (थियेटर) और बड़ी दीर्घाएं होंगी।

इन्दिरा गांधी सूत्रधार : यह अन्य सभी प्रभागों को प्रशासनिक, प्रबन्धकीय और संगठनात्मक सहायता तथा सेवाएं प्रदान करता है।

संस्था के शैक्षणिक प्रभाग अर्थात् कलानिधि तथा कलाकोश अपना ध्यान प्रमुख रूप से बहुविध प्राथमिक एवं गौण सामग्री के संग्रह पर लगाते हैं, आधारभूत संकल्पनाओं की खोज करते हैं, रूप के सिद्धान्तों का पता लगाते हैं और पारिभाषिक शब्दावलियों को स्पष्ट करते हैं। वे यह कार्य सिद्धान्त और पाठ (शास्त्र) और बौद्धिक चर्चा (विमर्श) और निर्वचन (मार्ग) के स्तर पर करते हैं। जनपद-सम्पदा और कलादर्शन प्रभाग लोक, देश तथा जन के स्तर पर अभिव्यक्ति, प्रक्रिया, जीवन-कार्य तथा जीवन-शैली और मौखिक परम्पराओं पर ध्यान देते हैं। चारों प्रभागों के कार्यक्रम सम्मिलित रूप से कलाओं को उनके जीवन तथा अन्य विषय-संबंधी मूल संदर्भों में प्रस्तुत करते हैं।

प्रत्येक प्रभाग में अनुसंधान करने, कार्यक्रम बनाने और अंतिम निष्कर्ष निकालने की रीतियां एक-जैसी हैं। हर प्रभाग का कार्य दूसरे प्रभागों के कार्यक्रमों का पूरक होता है।

वार्षिक रिपोर्ट

अप्रैल, 1995 से मार्च, 1996 तक

संक्षिप्त विवरण तथा झलकियां

प्रस्तावना : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र वर्ष 1995-96 के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी तथा उसी न्यास की कार्यकारिणी समिति के प्रधान श्री पी० वी० नरसिम्हा राव से प्राप्त मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन के साथ और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की अकादमिक निदेशक डॉ. कपिला वात्स्यायन के साङ्गोपाङ्ग पर्यवेक्षण में, अपने सुपरिभाषित उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में प्रगति करता रहा। इसके लिए वह कलाओं के एक प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में सेवाएं प्रदान करता रहा। कला तथा संस्कृति के क्षेत्र में अध्ययन तथा अनुसंधान जैसे पारिभाषिक शब्दावलियों के निर्माण, और कलाओं तथा तत्संबंधी विषयों पर आधारभूत ग्रंथों तथा रिपोर्टों के प्रकाशन के समेकित कार्यक्रम सम्पन्न करता रहा। इसके अतिरिक्त, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, व्याख्यानों तथा अनेक प्रकार की प्रदर्शनियों तथा बहु-माध्यमिक प्रस्तुतियों के जरिए सृजनात्मक तथा समालोचनात्मक संवाद के लिए मंच की व्यवस्था करता रहा। इन सभी गतिविधियों का विषय-क्षेत्र बहुत व्यापक रहा जिसमें मूलभूत विज्ञानों और मीमांसात्मक विचारों तथा संस्कृतियों से लेकर पुरातत्त्व, मानव विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, पुस्तकालय विज्ञान, कम्प्यूटर, मानविकी विषय तथा कला इतिहास तक सभी विषयों पर समकालीन अनुसंधान तथा चिंतन के कार्यक्रम शामिल रहे।

एक अग्रणी संसाधन केन्द्र के रूप में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने प्रदर्शनियों तथा संगोष्ठियों जैसे तरह-तरह के कार्यक्रमों के माध्यम से जन-साधारण तथा विद्वद्वर्गीय स्तरों पर ज्ञान के प्रसार में योगदान दिया। केन्द्र ने भारत में तथा विदेशों में स्थित अनेक संस्थाओं तथा विद्वानों से सम्पर्क स्थापित किए और बराबर बनाए रखे। इसके अलावा, केन्द्र कई संस्थाओं के साथ चल रहे अपने सहयोगात्मक कार्यक्रमों को और गहन तथा व्यापक बनाता रहा। आज राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक संस्थाएं तथा व्यक्ति इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के साथ सम्पर्क सूत्रों में इतनी घनिष्ठता से बंधे हुए हैं कि उन्हें एक तरह से केन्द्र के बृहत्तर परिवार का सदस्य माना जा सकता है।

संग्रह

वर्ष के दौरान केन्द्र पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्मों, स्लाइडों तथा फोटोग्राफों, कला वस्तुओं की नई प्राप्तियों से अपने भंडार भरता रहा और विभिन्न विषयों पर प्रकाशन निकालता रहा। केन्द्र के पुस्तकालय में विख्यात लेखकों की 5,719 चुनी हुई कृतियां जोड़ी गई। माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश प्राप्त करने के कार्यक्रमों के अन्तर्गत, दुर्लभ भारतीय पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्मों की 2,547 कुण्डलियां और प्राप्त की गई। 8776 माइक्रोफिशें भी "इनियन", मास्को, तथा एस. बी. पी. के, बर्लिन से प्राप्त की गई। स्लाइडें प्राप्त करने के एक अन्य बड़े कार्यक्रम में, संदर्भ पुस्तकालय ने रामपुर रजा लाइब्रेरी संग्रह की सचित्र पाण्डुलिपियों के छायांकन तथा प्रलेखन का काम पूरा किया। इसके अलावा पुस्तकालय में ए. सी. एस. ए. ए से और दूसरी संस्थाओं से प्राप्त तथा स्वयं बनाई हुई स्लाइड मिलाकर कुल 5179 स्लाइडें ट्रांसपैरेन्सी संग्रह में जोड़ी गईं।

कार्यक्रम

दक्षिण-पूर्व एशियाई, पूर्व-एशियाई और स्लाविक तथा मध्य-एशियाई कार्यक्रमों के अन्तर्गत, सुसंगत अध्ययन क्षेत्रों से संबंधित महत्त्वपूर्ण संदर्भ सामग्री चुनी और जोड़ी गई। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने "भारत और चीन : परस्पर

दृष्टि" विषय पर एक कार्यक्रम प्रारंभ किया है। इसके अन्तर्गत कार्यशालाएं तथा संगोष्ठियां आयोजित की जाती हैं जिनमें भारत तथा चीन की सभ्यताओं पर विचार-विमर्श करने के लिए दोनों देशों के विद्वानों तथा विशेषज्ञों को आमंत्रित किया जाता है। बौद्ध धर्म तथा तत्संबंधी अन्य विषयों पर प्रसिद्ध रूसी विद्वान ओल्डनबर्ग द्वारा किए गए शोध कार्यों को दर्शाने वाला एक खंड सम्यक् रूप से सम्पादित तथा अनूदित रूप में प्रकाशनार्थ तैयार किया जा रहा है। यूनेस्को के तत्त्वावधान में अप्रैल, 1995 में एक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका शीर्षक था "अन्तर्जात सांस्कृतिक आयाम के विकास में एकीभाव के लिए सूचना प्रतिमान", चीन, भारत, इंडोनेशिया, जापान, दक्षिण कोरिया, श्रीलंका, थाईलैंड तथा वियतनाम से अनेक विद्वानों ने इस में भाग लिया।

अध्ययन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में शोधकार्य, शब्दकोशों के निर्माण तथा कला और स्थापत्य तथा संस्कृति सहित तत्संबंधी विषयों पर विवेचनात्मक रूप से सम्पादित तथा अनूदित कलामूलशास्त्रीय ग्रंथों के प्रकाशन संबंधी केन्द्र के लम्बी अवधि तक चलने वाले कार्यक्रमों ने वर्ष 1995-96 में अच्छी प्रगति की। कला, संस्कृति, लोक साहित्य और तत्संबंधी विषयों पर अनेक नए प्रबन्ध ग्रंथ प्रकाशित किए गए। कला इतिहासकारों की सुविख्यात समालोचनात्मक रचनाओं, विशेषत: ए. के. कुमारस्वामी की संगृहीत कृतियों के पुनर्मुद्रण की योजना में अनेक ग्रंथों का प्रकाशन किया गया।

भारतीय कलाओं की आधारभूत संकल्पनाओं के शब्दकोश कलातत्त्वकोश का तीसरा खंड मुद्रण की अवस्था में है। इसी परियोजना के चतुर्थ खंड में प्रकाशित किए जाने वाले लेख सम्पादित हो चुके हैं। खंड पाँच का कार्य प्रारंभ किया जा चुका है और लेखकों का चुनाव कर लिया गया है। कलामूलशास्त्र-ग्रंथमाला के अन्तर्गत 1995 में प्रकाशित ग्रंथों में उल्लेखनीय है – प्रो० शहाब सरमदी द्वारा सम्पादित तथा अनूदित *"रिसाल-ए-रागदर्पण"*। आर. सत्यनारायण द्वारा सम्पादित तथा अनूदित *"नर्तन-निर्णय"* खण्ड 2 तथा 3। सी. आर. स्वामिनाथन द्वारा सम्पादित तथा अनूदित "काण्व-शतपथ ब्राह्मण" खण्ड 2 मुद्रण में हैं।

कलासमालोचन ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रकाशित कुछ महत्त्वपूर्ण ग्रंथ हैं : *"स्तूप एंड इट्स टेक्नोलॉजी : ए. टिबेटो-बुद्धिस्ट परस्पेक्टिव"* - लेखक : पेमा दोरजी; *"इंडियन आर्ट आफ कॅनोसरशिप"* - सम्पादक : जॉन गाई; *"इंडियन टेम्पल आर्किटेक्चर : फार्म एण्ड ट्रान्स्फॉर्मेशन"* - लेखक : ऐडम हार्डी; *"ऐस्थेटिक्स एण्ड मोटिवेशन्स इन आर्ट्स एण्ड साइन्स"*- लेखक : के. सी. गुप्त, माइकेल डब्लू माइस्टर द्वारा सम्पादित *"एसेज इन आर्किटेक्चरल थ्योरी"* (भाग - 2); कपिला वात्स्यायन द्वारा सम्पादित *"ट्रांस्फॉर्मेशन आफ नेचर इन आर्ट्स"*। इनमें से कुछ में स्रोत सामग्री की व्यापक जांच करनी पड़ी तथा यत्र तत्र कुछ संशोधन भी करना पड़ा।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के जनपद सम्पदा प्रभाग द्वारा वर्ष 1995-96 में प्रकाशित पुस्तकें हैं : *"कम्प्यूटराइजिंग् कल्चर्स"* - सम्पादक : बी. एन. सरस्वती; *"क्रॉस-कल्चरल लाइफ-स्टाइल स्टडीज"* - सम्पादक : बैद्यनाथ सरस्वती; *"गिफ्ट्स ऑफ अर्थ"* - सम्पादक : स्टीफन हुयलर; *"बुन्देलखंड की लोक संस्कृति का इतिहास"* - लेखक : नर्मदा प्रसाद गुप्त; *"आर्ट एज डायलॉग"* - लेखक : गौतम विश्वास; *"इंटरफेस ऑफ कल्चरल आइडेंटिटी एण्ड डेवलपमेंट"* - लेखक : बैद्यनाथ सरस्वती; *"रिच्युअल आर्ट आफ तेय्यम एण्ड भूताराधना"* - लेखक : सीता नम्बियार; *"गोविन्ददेव टेम्पल : ए डायलॉग इन स्टोन"* - सम्पादक : मार्गरेट केस; *"ईवनिग् ब्लॉसम्स : दि टेम्पल ट्रडिशन ऑ सांझी इन वृन्दावन"* - सम्पादक : असीमकृष्ण दास; और *"तंजवुर बृहदीश्वर : एन आर्किटेक्चरल स्टडी"* - लेखक : पियर पिशर।

संगोष्ठियां

इस वर्ष केन्द्र द्वारा निम्नलिखित अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संगोष्ठियां आयोजित की गईं :

1. भारतीय मुस्लिम संदर्भ में राजनय तथा प्रशासन

"भारतीय मुस्लिम संदर्भ में राजनय तथा प्रशासन" विषय पर जर्मनी के हाइडेलबर्ग विश्वविद्यालय के दक्षिण एशियाई इतिहास विभाग द्वारा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सहयोग से इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में 26-27 जुलाई, 1995 को एक सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें केन्द्र के अध्येताओं/विद्वानों ने भाग लिया।

सम्मेलन में उद्घाटन भाषण दक्षिण एशिया संस्थान, हाइडेलबर्ग की डा० मॉनिका बोएम-टेटलबाख द्वारा दिया गया जिसमें उन्होंने विषय की प्रस्तावना प्रस्तुत की। सम्मेलन में 17 वीं तथा 18 वीं शताब्दी के भारत के राजनीतिक तथा राजनयिक इतिहास के भिन्न-भिन्न विषयों पर आठ शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। ये सभी शोधपत्र मूल स्रोत सामग्रियों पर आधरित थे और उनमें इस विषय संबंधी ऐसे नए तथ्यों को प्रकाश में लाया गया जिनके विषय में अब तक विद्वान बहुत कम जानते थे।

2. अनादि–पूर्वोत्तर भारत की कालातीत जनजातीय कला

दिवंगत श्रीमती इन्दिरा गांधी का 10वां बलिदान दिवस मनाने के लिए, "अनादि–पूर्वोत्तर भारत की कालातीत जनजातीय कला" शीर्षक पर एक संगोष्ठी अरुणाचल प्रदेश के ईटानगर में 19 से 21 नवम्बर, 1995 तक आयोजित की गई।

उस स्थल पर पुष्पाञ्जलियां अर्पित की गईं जहां श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अरुणाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के उद्घाटन के अवसर पर 1984 में स्वयं एक "रुद्राक्ष" का पौधा लगाया था।

अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल समारोह के मुख्य अतिथि थे। अरुणाचल प्रदेश के मुख्य मंत्री तथा शिक्षा मंत्री भी उपस्थित थे।

अरुणाचल प्रदेश के विभिन्न भागों से आए छात्र तथा अध्यापक बड़ी संख्या में उपस्थित थे। संगोष्ठी में बड़ी सटीक चर्चाएं हुईं। यह एक ऐसा महत्त्वपूर्ण अवसर था जहां प्रदेश की विशिष्ट पहचान को सुरक्षित रखने के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों से पारस्परिक संबंध बढ़ाने के विषय में प्रामाणिक तौर पर आवाज सुनाई दी। संगोष्ठी विषयक एक संक्षिप्त विवरण प्रकाशित किया जा रहा है। इस संवाद को आगे बढ़ाने के लिए अन्य कार्यक्रम भी प्रारंभ किए गए।

3. भारत तथा चीन - परस्पर दृष्टि

"भारत तथा चीन - परस्पर दृष्टि" विषय पर एक संगोष्ठी चीनी अध्ययन संस्थान, नई दिल्ली के सहयोग से, नवम्बर, 1995 में आयोजित की गई जिसमें भारतीय तथा चीनी विद्वानों ने भाग लिया। इस संगोष्ठी में इतिहास, रणनीति, राजनीतिक प्रवृत्तियां, आर्थिक विकास तथा भविष्य जैसे विषयों पर शोधपत्र प्रस्तुत किए गए और उन पर चर्चा की गई। संगोष्ठी में दोनों देशों के सामाजिक-सांस्कृतिक व्यक्तित्वों के कुछ अपेक्षाकृत अल्पज्ञात पक्षों पर प्रकाश डाला गया।

4. वियतनाम तथा कम्बोडिया की कला

"वियतनाम तथा कम्बोडिया की कला" विषय पर एक संगोष्ठी नवम्बर, 1995 में आयोजित की गई। इस संगोष्ठी को भारत में कम्बोडिया के महामहिम राजदूत तथा भारत स्थित वियतनाम राजदूतावास के मिनिस्टर काउंसिलर द्वारा संबोधित किया गया। संगोष्ठी में भाग लेने वालों ने अनेक शोधपत्र प्रस्तुत किए, जिनमें से कुछ के विषय थे : "वियतनाम में छम मंदिरों की कला", "वियतनाम की दोंगदुओंग कला शैली", "अंगकोर वाट में अप्सराएं" और "दक्षिण-पूर्व एशिया की मुख्य भूमि का पुरातत्व और कला इतिहास के लिए उसके निहितार्थ"। यह संगोष्ठी गुरु-गंभीर अध्ययनों के लिए एक अच्छी शुरुआत साबित हुई।

5. ऋत : ब्रह्मांड व्यवस्था तथा अव्यवस्था

दिक् एवं काल के विषय में, भिन्न-भिन्न शास्त्रीय विषयों तथा संस्कृति के माध्यम से शाश्वत सरोकारों, चिरस्थायी चिन्तनीय विषयों तथा बीजभूत संकल्पनाओं पर अनुसंधान करने के उद्देश्य से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा तैयार किए गए कार्यक्रम के अन्तर्गत, "ऋत : ब्रह्मांड व्यवस्था तथा अव्यवस्था" - शीर्षक से एक विशाल अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी 18 से 22 दिसम्बर, 1995 तक आयोजित की गई। इस संगोष्ठी के साथ, "आकाश", "आकार", "काल", "महाभूत" और अब "ऋत" (ब्रह्मांड व्यवस्था तथा अव्यवस्था) विषयों पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा आयोजित बहु-विषयशास्त्रीय संवादों का पहला दौर समाप्त हो गया। पूर्व संगोष्ठियों की तरह, इस संगोष्ठी ने भी वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, समाज वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, साहित्यिक समालोचकों, कला इतिहासकारों तथा कलाकारों को परस्पर गुरुगंभीर संवाद का असाधारण अवसर प्रदान किया। संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्रों तथा चर्चाओं पर आधारित एक खंड तैयार किया जा रहा है।

6. वाक्

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने "वाक्" विषय पर अपने परिसर में 10 से 12 जनवरी, 1996 तक एक संगोष्ठी का आयोजन किया। बार्सिलोना (स्पेन) के प्रोफेसर रेमंड्स पणिक्कर इस विषय के प्रमुख वक्ता थे। डॉ० कपिला वात्स्यायन ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा अन्य संस्थाओं के अनेक विद्वानों ने इसमें भाग लिया। प्रोफेसर पणिक्कर ने एक नए दृष्टिकोण के साथ अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया, जिसे सम्पूर्णतावादी कहा जा सकता है। उन्होंने वाक् के चार पक्षों का उल्लेख किया और "वाक्" को "ब्रह्म" की संज्ञा दी, जैसे कि भर्तृहरि ने अपने "वाक्यपदीय" ग्रंथ में विवेचन किया है। उन्होने शब्दों तथा पदों को अर्थ की भिन्न-भिन्न परतें प्रकट करने वाला बताया। संगोष्ठी में भाग लेने वाले विद्वानों के बीच इन पक्षों पर जीवन्त चर्चा हुई जिससे उनके मानस में नई जागरूकता उत्पन्न हुई।

इसी के साथ, वाराणसी में "वाक्यपदीय" पर एक अन्य संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यहां परम्परागत शैली के विद्वानों ने एक भारतीय ग्रंथ के स्वरूप का पता लगाने की दृष्टि से "वाक्यपदीय" पर चर्चा की। इन दोनों संगोष्ठियों के कार्य-विवरण के अवगाहन से वाक् तथा शास्त्रीय विचारों को समझने के विभिन्न दृष्टिकोणों के विषय में गहरी जानकारी मिलेगी।

7. रूस में सामाजिक विशिष्टताओं की पहचान तथा रूपान्तरण, 19वीं - 20वीं शताब्दी

"रूस में सामाजिक विशिष्टताओं की पहचान तथा रूपान्तरण, 19वीं - 20वीं शताब्दी" विषय पर नई दिल्ली में 20 से 22 फरवरी, 1996 तक एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का कार्य-विवरण अगले वर्ष में प्रकाशित किया जाएगा।

कार्यशालाएं

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने इस वर्ष बहुत-सी कार्यशालाओं का भी आयोजन किया :

1. अंतर्जात सांस्कृतिक आयाम के विकास में एकीभाव के लिए सूचना प्रतिमान (मॉडल)

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा "अंतर्जात सांस्कृतिक आयाम के विकास में एकीभाव के लिए सूचना प्रतिमान"

विषय पर एक कार्यशाला सांस्कृतिक विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र विश्व दशक की रूपरेखा के भीतर, 19 से 23 अप्रैल, 1995 तक आयोजित की गई। चीन, भारत, इंडोनेशिया, जापान, दक्षिण कोरिया, श्रीलंका, थाईलैंड और वियतनाम के वरिष्ठ विद्वानों, योजना-निर्माताओं तथा बुनियादी स्तर के सामाजिक कार्यकर्ताओं ने कार्यशाला में अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए और विशेष रूप से एशिया के संदर्भ में, संस्कृति के सिद्धान्तों से लेकर विकास की समस्याओं तथा संभावनाओं तक अनेक अति-महत्त्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की।

कार्यशाला में उन विश्वस्तरीय समस्याओं पर विचार किया गया जो आज मानव जाति के सम्मुख हैं; साथ ही आगे किए जाने वाले कार्यो का भी निर्धारण किया गया। उसमें सांस्कृतिक विकास के विभिन्न आयामों का अनुशीलन किया गया और अन्तर्जात विकास के विभिन्न पक्षों को उजागर किया गया, जिनसे सूचना प्रतिमान (मॉडल) तैयार करने में सहायता मिलेगी। समापन सत्र में एक 32-सूत्रीय रिपोर्ट का प्रारूप पेश किया गया जिसे भाग लेने वालों ने कतिपय संशोधनों के साथ अनुमोदित कर दिया।

2. पाण्डुलिपि विज्ञान तथा पुरालिपिशास्त्र

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने "पाण्डुलिपि विज्ञान तथा पुरालिपि" विषय पर पूना विश्वविद्यालय के सहयोग से पुणे में 5 जून से 24 जून, 1995 तक एक 21-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। यह आयोजन केन्द्र के तथा बाहर के भी शोधकर्ताओं की नई पीढ़ी को प्रशिक्षण प्रदान करने के कार्यक्रमों के अन्तर्गत किया गया था।

3. प्राथमिक शिक्षा तथा परिस्थिति विज्ञान के क्षेत्र में स्वदेशी प्रयोग

प्राथमिक शिक्षा तथा परिस्थिति विज्ञान के अनेक पक्षों पर अगस्त, 1995 में एक राष्ट्रस्तरीय कार्यशाला का संचालन किया गया। विभिन्न संस्थाओं के अनेक शिक्षाविदों तथा पर्यावरणीय कार्यकर्ताओं ने भाग लिया और अंत में एक रिपोर्ट तैयार करके यूनेस्को को भेजी गई।

4. पुत्तलिकाकला

पुत्तलीकला विषय पर सामान्य आश्रम, बिहार के सहयोग से, गांधी स्मृति के परिसर में एक 15 - दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य बच्चों को पुत्तलिकला की परम्परा से परिचित कराना था।

प्रदर्शनियां

आलोच्य वर्ष में केन्द्र में निम्नलिखित प्रदर्शनियां लगाई गईं :

1. तीसरी आंख - श्री आश्विन मेहता द्वारा छायाचित्रों की प्रदर्शनी

गुजरात के विख्यात फोटोग्राफर श्री आश्विन मेहता द्वारा लिए गए फोटोग्राफों की एक प्रदर्शनी "तीसरी आंख" (थर्ड आई) शीर्षक से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के माटी-घर में सितम्बर-अक्तूबर, 1995 में लगाई गई। ये छायाचित्र जो प्रकृति में एक अमूर्त विधान तथा उद्देश्य का चित्रांकन करते हैं, उत्कृष्ट संवेदनशीलता तथा कल्पनाशीलता के द्योतक हैं।

2. द फेमिनिन ऑफ गॉड : सिबैस्टिना पापा द्वारा प्रस्तुत एक चित्रकार का नारी विषयक चिंतन

इटली की एक विख्यात फोटोग्राफर सिबैस्टिना पापा द्वारा लिए गए छायाचित्रों की एक प्रदर्शनी "परमात्मा का स्त्री रूप" (दि फेमिनिन आफ गॉड) इतालवी सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोग से जयपुर हाउस, नई दिल्ली में लगाई गई। असाधारण प्रतिभा की धनी सिबैस्टिना ने अपने जीवन के अनेक वर्ष साधारण जनजीवन के दृश्यों तथा नृत्य की भावभंगिमाओं को अपने कैमरे में कैद करने में बिताए हैं। इस प्रदर्शनी में डॉ. पापा के लगभग सत्तर अद्भुत छायाचित्र प्रस्तुत किए गए। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी ने 1 नवम्बर, 1995 को इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। छात्रों, विद्वानों तथा जनसाधारण में इस प्रदर्शनी का अच्छा स्वागत हुआ।

3. प्रतीक तथा आख्यान

समकालीन आस्ट्रेलियाई वस्त्रों की "प्रतीक तथा आख्यान" (सिम्बल एण्ड नैरेटिव) शीर्षक प्रदर्शनी इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा आस्ट्रेलियाई उच्चायोग के सहयोग से, केन्द्र के परिसर में स्थित माटी-घर में 30 अक्तूबर से 5 नवम्बर, 1995 तक लगाई गई। आस्ट्रेलियाई उच्चायोग के उप-उच्चायुक्त श्री राकेश आहूजा ने 30 अक्तूबर, 1995 को प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

4. ऋत : ऋतु (ब्रह्मांड व्यवस्था ऋतु चक्र)

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने "ऋत : ऋतु" : ब्रह्मांड व्यवस्था तथा ऋतु चक्र विषय पर 4 जनवरी से 15 फरवरी, 1996 तक एक प्रदर्शनी का आयोजन किया। यह इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की ऐसी पाचंवीं प्रस्तुति है जिसमें भिन्न-भिन्न संस्कृतियों की सीमाओं को न मानने वाले विश्वजनीन विषयों पर केन्द्र का दृष्टिकोण दर्शाया गया है। इससे पहले की चार प्रदर्शनिया खम्, आकार, काल तथा प्रकृति विषयों पर थी।

पुत्तलिका प्रदर्शन

पुत्तलिका कला पर आयोजित 15 - दिवसीय कार्यशाला के बाद, पुत्तलिकला विशेषज्ञों की एक मंडली द्वारा बोधगया जिले में अनेक पुत्तलि प्रदर्शनी (पपेट शो) किए गए। इसके बाद रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली की झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले बच्चों द्वारा "दिशा" नामक एक गैर-सरकारी संस्था के सहयोग से, एक अन्य पुत्तलि प्रदर्शन किया गया। गांधी जी के जीवन पर छाया पुत्तलियों का एक प्रदर्शन धारवाड़ (कर्नाटक) में 18 अगस्त, 1995 को कन्नड तथा संस्कृति विभाग, कर्नाटक सरकार के साथ मिलकर किया गया। बालकों को खेल के माध्यम से गांधी जी के विचारों तथा जीवन मूल्यों से परिचित कराने कि उद्देश्य से केरल में रंगप्रभात चिल्ड्रन्स थिएटर के सहयोग से बीस स्थानों पर ऐसे पुत्तलिका प्रदर्शन आयोजित किए गए।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने महात्मा गांधी के जीवन पर "रावण छाया" नामक एक पपेट शो का आयोजन किया जो उड़ीसा के कलाकारों द्वारा 2 अक्तूबर, 1995 को गांधी संग्रहालय, नई दिल्ली में प्रस्तुत किया गया। इसके बाद दिल्ली के भिन्न-भिन्न भागों में इसके तीन और शो हुए।

स्मारकीय व्याख्यान

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने वर्ष 1995-96 के दौरान दो स्मारकीय व्याख्यान आयोजित किए।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारक व्याख्यान माला का बारहवां व्याख्यान आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मृति न्यास के सहयोग से 19 अगस्त 1995 को आयोजित किया गया। यह व्याख्यान विख्यात उपन्यासकार श्री अमृत राय द्वारा (हिन्दी में) दिया गया, विषय था : "लेखक की प्रतिबद्धता एवं उसका संकट"। समारोह की अध्यक्षता राज्य सभा के सदस्य डॉ. बिशम्भर नाथ पाण्डे ने की।

प्रो० निर्मल कुमार बोस स्मारक व्याख्यान माला का दूसरा व्याख्यान नई दिल्ली में 22 तथा 23 जनवरी, 1996 को हुआ। यह व्याख्यान डॉ. वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य द्वारा दो भागों में दिया गया। व्याख्यान के पहले भाग का विषय था - "बोस के पाण्डित्य पर गांधी जी के विद्रोह का प्रभाव" और दूसरे भाग का विषय था - "रवीन्द्रनाथ तथा गांधी जी : भारतीय वस्तुस्थिति पर उनकी प्रतिक्रिया"।

गीतगोविन्द परियोजना

वर्ष के दौरान "गीतगोविन्द" परियोजना का कार्य परस्पर सक्रिय प्रतिमानों (पैरोडइम), चित्रात्मक ब्राउजिंग तथा संकेतात्मक इंडेक्सिंग तथा पुनरुद्धार के माध्यम से आगे बढ़ता रहा। तालबद्ध ब्राउजिंग तथा नृत्य की भावभंगिमाओं की डिजिटल प्रस्तुति के संबंध में भी प्रयोग किए गए। द्वितीय संस्करण के प्रस्तुति उपकरण विकसित किए गए जो अब प्रदर्शन के लिए तैयार हैं। आशा है कि यह परियोजना दिसम्बर, १९९६ के अंत तक पूरी हो जाएगी।

यू.एन.डी.पी.

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू.एन.डी.पी.) के अन्तर्गत, विषय के विशेषज्ञों तथा तकनीशियनों की सहायता से बृहदीश्वर, शैल-कला तथा अग्नि-चयन संबंधी बहु-माध्यमिक कार्यक्रमों को विकसित करने के लिए कार्यवाही प्रारंभ की जा चुकी है।

वार्षिक कार्य-योजना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कार्यकारिणी समिति ने वर्ष 1995-96 की वार्षिक योजना का अनुमोदन किया और फिर अनुमोदित कार्यक्रमों की परिधि में विस्तृत लक्ष्य निर्धारित किए गए। यह संतोष का विषय है कि भिन्न-भिन्न प्रभागों को, कुल मिलाकर, इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफलता मिली। केन्द्र की कार्यकारिणी समिति तथा न्यास द्वारा अनुमोदित 10 वर्षीय योजना की रूपरेखा के अन्तर्गत केन्द्र के कार्यकलापों का विस्तार किया गया।

प्रत्येक प्रभाग की प्रमुख उपलब्धियों का ब्यौरा आगे के पृष्ठों में दिया गया है :

कलानिधि

(पुस्तकालय, सूचना प्रणालियों, सांस्कृतिक अभिलेखागार तथा क्षेत्र अध्ययन का प्रभाग)

कलानिधि प्रभाग कलाओं तथा मानविकी विषयों से संबंधित संदर्भ सामग्री के विशाल भंडार के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान करता है। कलानिधि प्रभाग के मुख्य घटक हैं : एक संदर्भ पुस्तकालय, बहुमाध्यमिक डेटाबेस की सुविधाओं के साथ कलाओं तथा मानविकी विषयों की सूचना प्रणालियां, सांस्कृतिक अभिलेखागार और क्षेत्र अध्ययन संबंधी कार्यक्रम।

वर्ष 1995-96 में संदर्भ पुस्तकालय ने कम्प्यूटर तथा सूचना प्रौद्योगिकी विषयक सामग्री के अलावा कला रूपों, इतिहास, पुरातत्त्व, धर्म, दर्शन, भाषा, मानव विज्ञान, लोक साहित्य, तथा मानवजाति विज्ञान आदि सभी विषयों से संबंधित पुस्तकों, प्रबन्ध ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं, माइक्रोफिल्म व माइक्रोफिश, फोटोग्राफ, स्लाइडों, फिल्मों, श्रव्य-दृश्य सामग्रियों आदि के संग्रह से अपने भंडार को समृद्ध करने का काम जारी रखा।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संदर्भ पुस्तकालय की एक अनुपम विशेषता है उसका माइक्रोफिल्म और माइक्रोफिश संग्रह। इस वर्ष भी नियमित कार्यक्रम के अन्तर्गत, संस्कृत, अरबी तथा फारसी की मूल पाण्डुलिपियों के बड़े संग्रहों से माइक्रोफिल्म और माइक्रोफिशें प्राप्त करने के लिए विशेष प्रयास किए गए।

पुस्तकालय देश के भीतर तथा बाहर से भी संदर्भ सुविधाएं प्रदान करता रहा। शोधकर्ताओं ने कम्प्यूटरीकृत तथा हस्तचालित कैटलॉगों के माध्यम से पुस्तकालय में उपलब्ध सामग्री तक पहुंचने की सुविधा का लाभ उठाया।

कार्यक्रम क : संदर्भ पुस्तकालय

नई प्राप्तियां

मुद्रित सामग्री

इस वर्ष संदर्भ पुस्तकालय में मुद्रित पुस्तकों के 5,719 नए खंड जोड़े गए। इनमें वे 2,612 पुस्तकें भी शामिल हैं जो विभिन्न विद्वानों तथा संस्थाओं द्वारा उपहारस्वरूप प्रदान की गई हैं और कुछ पुस्तकें आदान-प्रदान के आधार पर प्राप्त हुई हैं। महत्त्वपूर्ण पुस्तकदाताओं में से कुछ उल्लेखनीय हैं : जापान फाउंडेशन, टोकियो; राष्ट्रीय कला पुस्तकालय, विक्टोरिया एवं एलबर्ट संग्रहालय, लंदन; कांग्रेस कार्यालय पुस्तकालय, नई दिल्ली; चेस्टर बीटी लाइब्रेरी, डबलिन; वियतनाम सरकार, हनोई; लॉस ऐंजिलिस कंट्री कला संग्रहालय, संयुक्त राज्य अमरीका; पाकिस्तानी रिसर्च सोसाइटी, लाहौर; एशियाटिक सोसाइटी, मुबंई। इनके अलावा कुछ महानुभाव हैं जैसे डॉ. राम पी. कुमारस्वामी, ग्रीनविच, सयुक्त राज्य अमरीका; डॉ. कान्ता भाटिया, पेनसिलवेनिया, संयुक्त राज्य अमरीका; श्री आर. पी. लाम्बा, दार्जिलिंग; श्री अखिलेश मित्तल, नई दिल्ली; श्रीमती चन्द्र रंजन, नई दिल्ली; डॉ. ऐलमट हिंत्जे, बर्लिन; ले० जनरल ए. एम. सेठना, नई दिल्ली; डॉ. कपिला वात्स्यायन, नई दिल्ली; पं० सातकड़ि मुखोपाध्याय, नई दिल्ली; और डॉ. एल. एम. गुजराल, नई दिल्ली। 31 मार्च, 1996 को पुस्तकालय में पुस्तकों/खंडों की संख्या कुल मिलाकर 1,00,670 थी।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

वर्ष के दौरान, भारत सरकार के विभिन्न द्विपक्षीय आदान-प्रदान कार्यक्रमों में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के भाग लेने के माध्यम से पुस्तकालय को सामग्री प्राप्त होती रही। सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण

सामग्रियां प्राप्त हुई :

बंगलादेश की एशियाटिक सोसाइटी से पाण्डुलिपियों की एक सूची ;

ढाका स्थित भारतीय उच्चायोग से बंगलादेश के लोक साहित्य की ग्रंथसूची ;

म्यूजियो नेशनल सेंट्रो डि आर्ट रीना, स्पेन से प्रकाशनों की सूची ;

तुर्की के राष्ट्रीय पुस्तकालय से आदान-प्रदान के लिए अनुलिपियों की सूची।

पत्र-पत्रिकाएं

पुस्तकालय इस वर्ष भी उन अकादमिक तथा तकनीकी पत्र-पत्रिकाओं का ग्राहक बना रहा जिनका उल्लेख पिछले वर्ष की रिपोर्ट में किया गया था। ऐसी पत्र-पत्रिकाओं की संख्या अब 441 है। ये पत्र-पत्रिकाएं इन विषयों से संबंधित हैं : मानव विज्ञान, पुरातत्त्व, स्थापत्य, कलाएं, ग्रंथसूची, पुस्तक समीक्षा, कम्प्यूटर एवं सूचना विज्ञान, सांस्कृतिक संपत्ति का संरक्षण, नृत्य, लोक साहित्य, इतिहास, मानविकी विषय, पुस्कालय तथा सूचना विज्ञान, भाषा विज्ञान, साहित्य, संग्रहालय अध्ययन, संगीत, मुद्रा, टंकण शास्त्र, प्राच्य अध्ययन, मंचीय कलाएं, दर्शन, पुत्तलिका कला, धर्म, विज्ञान, समाज विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, रंगमंच और क्षेत्र अध्ययन।

माइक्रोफिशें

स्तास बिब्लियोथिक प्रॉशिशर (एस.बी.पी.के.), बर्लिन (जर्मनी); सामाजिक विज्ञान वैज्ञानिक सूचना संस्थान (इनियन), रूसी विज्ञान अकादमी, मास्को (रूस); इंटरनेशनल डॉक्यूमेंटेशन सेंटर, लीडन (नीदरलैंड) से कुल मिलाकर 8,776 माइक्रोफिशें प्राप्त हुईं।

माइक्रोफिल्में

क. आंतरिक उत्पादन

वर्ष के दौरान, पुस्तकालय में आंतरिक उत्पादन से माइक्रोफिल्मों की 884 कुंडलियां (रोल्स) प्राप्त हुईं जो रामपुर रजा लाइब्रेरी, रामपुर (27 कुंडलियां); चरारेशरीफ, जम्मू-कश्मीर (4 कुंडलियां); अद्वैत आश्रम, मायावती, पिथौरागढ़ (36 कुंडलियां); वैदिक संशोधन मण्डल, पुणे (222 कुंडलियां); और श्री रणवीर संस्कृत शोध संस्थान, जम्मू (625 कुंडलियां); और राष्ट्रीय संग्रहालय (2 कुंडलियां) से संबंधित थीं।

अनुलिपि एकक (रिप्रोग्राफी यूनिट) ने भी रामपुर रजा लाइब्रेरी रामपुर; अद्वैत आश्रम, मायावती, पिथौरागढ़; और पं० चन्द्र सिंह स्मारक पुस्तकालय, पं० खेलचन्द संग्रह तथा इतिज्मा रोमई सिंह संग्रह, इम्फाल और वृन्दावन शोध संस्थाएं, वृन्दावन में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के माइक्रोफिल्म एकक के माध्यम से माइक्रोफिल्म निर्माण का काम हाथ में लिया।

माइक्रोफिल्म कुंडलियों की दूसरी प्रतियां बनाने का कार्यक्रम चलता रहा और करार की शर्तों के अनुसार हर पांडुलिपि की तैयार की गई माइक्रोफिल्म की एक प्रति उसके मालिक को दी गई तथा दूसरी प्रति शोध छात्रों के अवलोकनार्थ संदर्भ पुस्तकालय में रखी गई। इसके अतिरिक्त, आई.डी.सी. लीडन (नीदरलैंड) से प्राप्त माइक्रोफिशों की भी दूसरी प्रतियां तैयार की गईं।

नीचे दी गई सारणी में आंतरिक उत्पादन का वार्षिक ब्यौरा दिया गया है जिसमें वर्ष 1995-96 के दौरान की गई प्रतिलिपियों के आकड़े भी शामिल हैं :

	परियोजना	कुंडलियों की संख्या	पांडुलिपियों की संख्या	पन्नो की संख्या
1.	रामपुर रजा लाइब्रेरी, रामपुर	51	129 + 18 एलबम	34750
2.	अद्वैत आश्रम, मायावती, जिला पिथौरागढ़	36	91	21820
3.	(I) पं० चन्द्र सिंह स्मारक पुस्तकालय, इम्फाल	-	204	7293
	(II) पं० खेल चन्द्र संग्रह, इम्फाल	16	16	1977
	(III) हिज्मा रोमई सिंह संग्रह, इम्फाल	-	2	1740
4.	वृंदावन शोध संस्थान, वृंदावन	10	142	4773

माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश की प्रतियां बनाना

1.	वैदिक संशोधन मंडल, पुणे; रघुनाथ मंदिर, जम्मू; रजा लाइब्रेरी, रामपुर; और अद्वैत आश्रम, मायावती पिथौरागढ़ (उ० प्र०) की माइक्रोफिल्म कुंडलियां	980 मूल कुंडलियों की 1980 कुंडलियां
2.	आई.डी.सी. लीडन, नीदरलैंड से माइक्रोफिश	28698

ख. माइक्रोफिल्म निर्माण की परियोजनाएं

वर्ष के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का माइक्रोफिल्म बनाने का काम भिन्न-भिन्न केन्द्रों पर अबाध गति से चलता रहा और प्रगति लगभग लक्ष्यों के अनुसार ही होती रही। पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्में बनाने की कुछ नई परियोजनाएं जो साहित्य संस्था, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर; राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, उदयपुर में प्रारंभ की गई थी, वर्ष के दौरान सम्पन्न की गई।

वर्ष 1995-96 के लिए माइक्रोफिल्म उत्पादन की प्रगति का ब्यौरा इस प्रकार है :

क्रम सं०	परियोजनाएं	कुल पांडुलिपियां उपलब्ध	प्रारंभ करने की तारीख	तैयार की गई कुंडलियां	कुल पन्ने
1.	सरस्वती भवन लाइब्रेरी, वाराणसी	1,20,000	7.9.89	1043	58,696
2.	वैदिक संशोधन मंडल, पुणे	14,099	22.6.90	16	8,029
3.	भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे	18,000	19.9.89	505	2,41,844

4.	ऑरियण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट एंड मैन्युस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, तिरुवनन्तपुरम्	54,000	21.3.90	134	62,030
5.	गवर्नमेंट ऑरिएंटल मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, चेन्नई	45,000	10.9.89	193	1,05,999
6.	महाराजा सरफोजी की सरस्वती महल लाइब्रेरी, तंजवुर	54,000	16.8.90	151	84,985
7.	श्रीशंकर मठ, कांचीपुरम्	4,070	14.11.94	151	14,187
8.	मौलाना आजाद अरबी तथा फारसी शोध संस्थान, टोंक, राजस्थान	988	13.7.94	190	1,42,453
9.	रामपुर रजा लाइब्रेरी, रामपुर, उ.प्र.	129	12.3.95	51	34,750
10.	राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर	93	17.6.95	7	4,112
11.	राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, उदयपुर शाखा	633	30.6.95	44	25,467
12.	अद्वैत आश्रम, मायावती, पिथौरागढ़, उ.प्र.	91	20.9.95	36	21,820
13.	पं० चन्द्र सिंह स्मारक पुस्तकालय, इम्फाल	204	21.11.95		7,293
	पं० खेल चन्द्र सिंह संग्रह	16	तदैव		1,977
	हिज्मा रोमई सिंह संग्रह, इम्फाल	2	तदैव	16	1,740
14.	वृंदावन शोध संस्थान, वृन्दावन	142	28.11.95	10	4,773

पूरी की गई परियोजनाएं

वैदिक संशोधन मंडल, पुणे; मौलाना आजाद अरबी तथा फारसी शोध संस्थान, टोंक; राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर; तथा राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान उदयपुर की परियोजनाएं सम्पन्न हो चुकी हैं। इन सभी केन्द्रों के उत्पादन का ब्यौरा नीचे दिया गया है :

केन्द्र	कुंडलियों की संख्या	पांडुलिपियों व कुंडलियो की संख्या	
वैदिक संशोधन मंडल, पुणे	991	पांडुलिपियां	14,393
		पन्ने	6,33,039
मौलाना आजाद अरबी तथा फारसी शोध संस्थान, टोंक	225	पांडुलिपियां	988
		पन्ने	1,69,282

राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर	7	पांडुलिपियां	93
		पन्ने	21,820
राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, उदयपुर	44	पांडुलिपियां	633
		पन्ने	25,467

नई परियोजनाएँ

निम्नलिखित नई परियोजनाओं को वर्ष के दौरान प्रारंभ करने के लिए उनके संबंध में प्रारंभिक कार्रवाई शुरू की गई :

1. सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान, उज्जैन;
2. भारत विद्या का एल.डी. संस्थान, अहमदाबाद;
3. आनन्दाश्रम, पुणे;
4. जुमा मस्जिद ट्रस्ट लाइब्रेरी, मुंबई;
5. राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर (सामग्री का पता लगाया गया);
6. राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर;
7. राज्य संग्रहालय, उदयपुर;
8. महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय संग्रहालय, जयपुर;
9. एशियाटिक सोसाइटी, मुंबई।

स्लाइडों तथा फोटोग्राफों का संग्रह

आलोच्य वर्ष में, स्लाइडों के संग्रह में 5,179 रंगीन स्लाइडें जोड़ी गई। इनमें से 1103 स्लाइडें रामपुर रजा लाइब्रेरी के संग्रहों की थी। इनके अलावा, 3662 स्लाइडें दक्षिण एशियाई कला संबंधी अमरीकी समिति (ए.सी.एस.ए.ए.) से, 363 स्लाइडें यूनेस्को के एशियाई सांस्कृतिक केन्द्र, टोकियो से और 51 स्लाइडें एस.बी.पी.के., बर्लिन से प्राप्त हुई।

ब्रिटिश लाइब्रेरी, लंदन, चेस्टर बी.टी. डबलिन तथा रामपुर रजा लाइब्रेरी से प्राप्त कुल मिलाकर 12,087 अभिलेखागारीय स्लाइडों की प्रतिलिपियां शोध अध्येताओं तथा अनुसंधानकर्ताओं के उपयोग के लिए तैयार की गई।

भिन्न-भिन्न स्रोतों से प्राप्त स्लाइड संग्रहों तक पहुंचने की सुविधा प्रदान करने के लिए 5,483 स्लाइडों के हस्तचालित कैटलॉग कार्ड तथा इंडेक्स (सूचक) बनाए गए। इनके अलावा, वर्ष के दौरान 4800 स्लाइडों को रजिस्टर में चढ़ाया गया।

रामपुर रजा लाइब्रेरी की पांडुलिपियों तथा एलबमों में उपलब्ध लघुचित्रों के बहुमूल्य संग्रह के फोटो प्रलेखन का कार्य पूरा किया गया ओर 2480 रंगीन स्लाइडों के संपूर्ण संग्रह के लिए डेटा इनपुट शीटें भरी गईं।

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण तथा क्लीवलैंड कला संग्रहालय से प्राप्त कुल 42 फोटोग्राफ संदर्भ पुस्तकालय के संग्रह में जोड़े गए।

श्रव्य-दृश्य सामग्री का संग्रह

आलोच्य वर्ष में, कुल मिलाकर 31 वीडियो कैसेट और 2 ऑडियो कैसेट संग्रह में जोड़े गए। इनमें से 28 वीडियो कैसेट रामकृष्ण विवेकानन्द सर्विस फाउंडेशन, हैदराबाद के थे, एक वीडियो कैसेट जो एशिया तथा प्रशांत क्षेत्र के संगीत वाद्ययंत्रों के विषय में था, यूनेस्को के एशियाई सांस्कृतिक केन्द्र, टोकियो का था और शेष दो नई दिल्ली स्थित कम्बोडियाई राजदूतावास के थे जिनमें से एक कम्बोडिया के लोक साहित्य तथा शास्त्रीय नृत्यों पर था और दूसरा आंगकोरवाट (मंदिर) पर। दो ऑडियो कैसेट वियतनाम की सरकार से प्राप्त हुए।

कैटलॉग कार्य

इस वर्ष, पुस्तकों के 15,468 खंडों का वर्गीकरण तथा कैटलॉग कार्य किया गया। इन खंडों में पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी और चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा संग्रह के 11,598 खंड भी शामिल हैं। इनके अलावा, भिन्न-भिन्न स्रोतों से प्राप्त पुस्तकों तथा माइक्रोफिल्मों से संबंधित 9000 अभिलेखों को कम्प्यूटरबद्ध कैटलॉग में दर्ज किया गया।

माइक्रो-फिल्मों का कैटलॉग कार्य

वर्ष 1995-96 में, माइक्रो-फिल्मांकित सामग्री से संबंधित सोलह हजार (16,000) डेटा शीटें "लिबसिस" सॉफ्टवेयर का उपयोग करने वाले कम्प्यूटर में भरी गई। सभी 16,000 प्रविष्टियों को संदर्भ प्रयोजन के लिए कैटलॉग कार्डों पर मुद्रित किया गया।

जिल्दबंदी

वर्ष के दौरान पुस्तकों के 3,809 खंडों की जिल्दबंदी करवाई गई। अब जिल्दबंद खंडों की संख्या कुल मिलाकर 34,880 हो गई है।

संरक्षण एकक

एक साधारण संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित की गई जिसमें आवश्यक रसायन तथा उपस्कर रखे गए। पुस्तकालय, सांस्कृतिक अभिलेखागार और अन्य संग्रहों में उपलब्ध ऐसी सामग्री का समय-समय पर सर्वेक्षण किया जाता है जिसका संरक्षणात्मक उपचार करना अपेक्षित हो। बहुमूल्य सामग्रियों जैसे कलाकृतियाँ, दुर्लभ ग्रंथ, माइक्रोफिल्म, माइक्रोफिश, स्लाइड, टेप आदि को संरक्षण के लिए दीमक-रोधी उपचार सहित अन्य उपयुक्त उपाय किए गए। एक धात्विक धूमन कक्ष भी बनाया गया।

ग्रंथसूची

1.	छाया पुत्तलिका विषयक ग्रंथसूची	:	संकलन का कार्य प्रगति पर है।
2.	जरतुश्ती अध्ययन विषयक सटिप्पणीक ग्रंथसूची	:	कम्प्यूटर कार्य चल रहा है।
3.	बृहदीश्वर मंदिर विषयक ग्रंथसूची	:	आगे चलने वाली परियोजना के रूप में कम्प्यूटर कार्य चल रहा है।

अनुदान

संदर्भ पुस्तकालय को जापान फाउंडेशन (टोकियो) के पुस्तकालय सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत 2,71,408 येन मूल्य की पुस्तकें अनुदान के रूप में प्राप्त हुई।

कार्यक्रम ख : राष्ट्रीय सूचना प्रणाली तथा डेटा बैंक

कलानिधि (ख) प्रभाग की जिम्मेदारी है : अन्य सभी प्रभागों की कम्प्यूटरीकरण संबंधी आवश्यकताओं का पता लगाना, डेटा का विश्लेषण करना, सूचना प्रणालियों का डिजाइन व विकास करना, उनका अनुरक्षण तथा संचालन करना और सभी उपयोगकर्ताओं को प्रशिक्षित करना। इस एकक द्वारा हाथ में लिए गए कार्यकलाप का ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है :

साफ्टवेयर

निम्नलिखित अनुप्रयोग पैकेज विकसित किए गए :

1. पुस्तक प्रस्तुतिकरण कार्यक्रम की संवीक्षा;
2. विहंगम (न्यूजलेटर) के लिए डाक प्रणाली;
3. कलादर्शन प्रभाग द्वारा आयोजित संगोष्ठियों/कार्यशालाओं की तालिका/रोस्टर;
4. सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के संबंध में सूचना का भंडारण तथा पुनरुद्धार;
5. प्रदर्शनी सूचना प्रणाली।

हार्डवेयर

1. लेजर प्रिंटर सहित एक नई पी.सी.-ए.टी./486 कम्प्यूटर प्रणाली कलाकोश प्रभाग में "विदुर" साफ्टवेयर के अनन्य उपयोग के लिए लगाई गई है।
2. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के वाराणसी शाखा कार्यालय में एक नई पी.सी.-ए.टी./486 कम्प्यूटर प्रणाली लगाई गई है।
3. सभी कम्प्यूटर प्रणालियों की ए.एम.सी. को सुचारु रूप प्रदान किया गया है।
4. एच.पी. - 3000 प्रणाली : एच.पी. 3000 प्रणाली के कार्य न करने के कारण, इस प्रणाली पर कोई खास रचनात्मक कार्य नहीं किया गया है।
5. प्रलेख छवि अंकन प्रणाली :- समझौता ज्ञापन सहित महत्त्वपूर्ण प्रलेखों और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विभिन्न प्रभागों के अन्य संगत अभिलेखों की बारीकी से जांच (स्कैनिंग) की गई।

विविध

1. 16,000 माइक्रोफिल्म डेटा शीटों की डेटा प्रविष्टि का कार्य किया गया और उनके कार्ड तैयार किए गए।

2. वासुदेव शरण अग्रवाल तथा व्रजनाथ द्वारा की ग्रंथसूचियों से संबंधित प्रिंट-आउट छापे गए। इसके अलावा, रामपुर रजा लाइब्रेरी की मुगल चित्रकारियों का प्रलेखन कार्य किया गया और अध्येताओं के लिए उपलब्ध कराया गया।

3. कैटकैट की ए.एस.सी.आई.आई.टेक्स फाइल और मैनुस के डेटाबेसों को डी.ओ.एम. प्लैटफार्म पर अन्तरित किया गया और आगे जांच व कार्यान्वयन के लिए यू.एन.डी.पी. को दिया गया।

4. अन्य सभी डेटाबेस नियमित रूप से अघतन बनाकर रखे गए।

कार्यक्रम ग : सांस्कृतिक अभिलेखागार

भारत की सांस्कृतिक धरोहर के कुछ पक्ष ऐसे भी हैं जिन्हें अब तक अन्य राष्ट्रीय संगठनों द्वारा कोई महत्त्व नहीं दिया गया है और न ही जिन पर ध्यान दिया गया है। ऐसे पक्षों का संग्रह तथा प्रलेखन करना कलानिधि प्रभाग के अन्तर्गत सांस्कृतिक अभिलेखागार का काम है।

वर्ष 1995-96 के दौरान, सांस्कृतिक अभिलेखागार ने अनुसंधान तथा प्रलेखन परियोजनाओं पर विशेष बल दिया, जिनके अन्तर्गत कुछ व्यक्तिगत संग्रहों की प्राप्ति तथा लुप्त हो रहे कला रूपों आदि पर फिल्मों के प्रलेखन का कार्य हाथ में लिया गया।

समीक्षाधीन वर्ष में इस अनुभाग द्वारा हाथ में लिए गए कुछ प्रमुख कार्यकलापों का ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है :

1. पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर जिले के मृण्मूर्ति वाले मंदिरों का श्री शम्भूनाथ मित्र द्वारा व्यापक रूप से किया गया फोटो-प्रलेखन प्राप्त किया गया। श्री मित्र लगभग 15 सालों से पश्चिम बंगाल में इन प्राचीन स्मारकों का छायांकन करते रहे हैं। इस संग्रह में 4024 मोनोक्रोम निगेटिव, नक्शे, गजेटियर और फोटो-इंडेक्स कार्ड शामिल हैं।

2. मुंबई के एक मशहूर उस्ताद कारीगर श्री अब्दुल मजीद अंसारी से "फ्लैगशिप" नामक एक सुराही उपहार स्वरूप प्राप्त हुई ; यह सुराही एक अत्यन्त उत्कृष्ट कलाकृति है जिसे इस कुशल शिल्पी ने बहुत ही बारीकी से गढ़ा है। श्री अंसारी ने पहले भी अपनी पांच सुराहियों का एक सेट इ.गा.रा.क.के. के अभिलेखागार को भेंट किया था।

अवाप्ति एवं कैटलॉग कार्य

कलानिधि (ग) के अभिलेखागार में इस समय उपलब्ध कुछ संग्रहों को अवाप्ति रजिस्टर में चढ़ाने का कार्य हाथ में लिया गया :

1. लांस डेन संग्रह की 15,735 रंगीन स्लाइडों में से, 9,650 को अवाप्ति रजिस्टर में दर्ज किया गया। इस कार्य को वर्ष 1996-97 की दूसरी तिमाही में पूरा करने का प्रस्ताव है।

2. डी.आर.डी. वाडिया संग्रह के कुल 880 फोटो तथा 4,141 निगेटिवों में से 730 चित्रों तथा 1,160 निगेटिवों को अवाप्ति रजिस्टर में चढ़ाया जा चुका है। इस कार्य को वर्ष 1996-97 में पूरा करने का विचार है।

3. सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक जीवन विषयक सुनील जनाह संग्रह के सभी 51 फोटोग्राफों को दर्ज करने का कार्य पूरा हो चुका है।

4. "टैगोर की आवाज" के आडियो रेकार्डों को दर्ज करने का काम पूरा हो चुका था। अब इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के स्टूडियो में इन्हें आंशिक रूप से परिमार्जित किया गया है।

5. बांकुड़ा, बर्दवान, बीरभूम, हुगली तथा हावड़ा जिलों में मृण्मूर्ति वाले मंदिरो के आलंकारिक पक्षों के शंभुनाथ मित्र द्वारा लिए गए श्याम-श्वेत फोटोग्राफों के 8130 निगेटिव अवाप्ति रजिस्टर में चढ़ाए जा चुके हैं।

6. केरल के कर्मकाण्डीय नृत्य रूप "तेय्यम" की शेष 200 स्लाइडें, जो श्री बालन नम्बियार द्वारा तैयार की गई थीं, दर्ज की गई। कुल 1800 रंगीन स्लाइडों को रजिस्टर में चढ़ाने का काम पूरा किया गया।

7. 133 ऑडियो कैसेट और 66 ऑडियो स्पूल जो आंतरिक प्रलेखन सामग्री के रूप में तैयार किए गए थे, वे भी रजिस्टर में चढ़ाए गए। 722 ऑडियो और 953 वीडियो कैसेटों की एक अतिरिक्त वर्धानुक्रमिक सूची बनाई गई।

फोटो प्रलेखन

लान्सडेन संग्रह की 432 कला वस्तुओं की फोटोग्राफी की गई। मुद्रण तथा कैटलॉग कार्य पूरा हो चुका है। वस्तुओं की वर्धानुक्रमिक सूचियां भी बनाई जा चुकी हैं।

परियोजना अनुसंधान एवं क्षेत्र अध्ययन भारत के कुछ दुर्लभ तथा मृतप्राय कला रूपों तथा अन्य अनेक सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का प्रलेखन करने के अपने प्रयासों की शृंखला में कलानिधि प्रभाग ने "परियोजना अनुसंधान एवं क्षेत्र अध्ययन" शीर्षक के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्यक्रम सम्पन्न किए :-

1. बिदेसिया (2 घण्टे – यू-मैटिक हाई-बैंड)

बिहार का जनप्रिय लोक नाट्य रूप "बिदेसिया" शनैः-शनैः लुप्त होता जा रहा है, मुख्यतः इसके सृजक भिकारी ठाकुर के निधन के कारण लोक नाट्य के रूप में इसके परम्परागत रूप को प्रस्तुत करने वाले इस प्रलेखन के दो भाग हैं :

(I) श्री ठाकुर का जीवन वृत्त (30 मिनट); और

(II) उनके तीन लोक नाट्य, जो बिहार में स्थानीय कलाकारों के साथ स्थानीय वातावरण में पूर्णतः मंचित और फिल्मांकित किए गए हैं। इसमें मौलिक विशिष्टता को सफलतापूर्वक अंकित किया गया है (90 मिनट)।

2. एलिजाबेथ ब्रूनर

हंगरी की प्रसिद्ध चित्रकार एलिजाबेथ ब्रूनर ने भारत को अपने दूसरे घर के रूप में स्वीकार किया है। 80 वर्ष से भी काफी अधिक आयु वाली एलिजाबेथ ब्रूनर बहु-पक्षीय व्यक्तित्त्व की धनी हैं। उनके व्यापक भ्रमण तथा भारत के संतों, दार्शनिकों, राजनीतिक नेताओं, विद्वानों तथा कलाकारों के साथ उनके घनिष्ठ संपर्क की बदौलत उनके जीवन तथा सृजनशीलता में एक नया आयाम जुड़ गया है। उनकी चित्रकारियों में एक अनुपम संवेदनशीलता तथा आध्यात्मिकता की झलक मिलती हैं। इस प्रलेखन में एलिजाबेथ ब्रूनर अपने समकालीन महानुभावों जैसे बी.सी. सन्याल, लोकेश चन्द्र, कपिला वात्स्यायन तथा गेज़ा बेथलन फाल्वी के साथ वार्त्तालाप में अपने जीवन तथा कला के विषय में अपने रोचक संस्मरण प्रस्तुत करती हैं। इस फिल्म में उनकी कुछ चुनी हुई चित्रकारियों को भी विस्तारपूर्वक दिखाया गया है।

3. रहमत खान लंगा (श्रव्य प्रलेखन)

रहमत खान लंगा राजस्थान के एक जाने-माने लोक कलाकार हैं। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय कंठ संगीत को राजस्थान की लोकगीत शैली के साथ मिलाकर उन्होंने उसे एक विशिष्टरूप प्रदान किया है। भारत तथा विदेशों में अपने व्यापक भ्रमण के माध्यम से उन्होंने अपने श्रोताओं में बहुत लोकप्रियता प्राप्त की है। इस रेकार्डिंग में उनकी भेंट वार्ता तथा कुछ चुनी हुई बंदिशो की सुन्दर प्रस्तुति है।

4. असगरी बाई (अवधि : 1 घण्टा 10 मिनट; यू-मैटिक हाई-बैंड)

ओड़छा (मध्य प्रदेश) की रहने वाली 85 वर्षीया हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की गायिका असगरी बाई ने अपनी एक खास शैली ईजाद की है। उनकी प्रतिभा तथा योगदान को मान्यता प्रदान करने के लिए उन्हें अनेक पुरस्कारों के अलावा "पद्मश्री" की उपाधि से सम्मानित किया जा चुका है। इस प्रलेखन में इस महान कलाकार से गंभीर भेंटवार्ता के साथ-साथ उनके जीवन तथा कला पर विभिन्न संगीत विशेषज्ञों के विचार रेकार्ड किए गए हैं।

5. महारास

रासलीला मणिपुर की भव्य एवं गौरवपूर्ण संस्कृति का एक प्रमुख अंग है। वैष्णव परम्परा की देन इस रासलीला में कुशल कलाकारों के माध्यम से भगवान कृष्ण और राधा तथा गोपियों के चरित्र को भिन्न-भिन्न भाव-भंगिमाओं के साथ परम्परागत रीति से प्रस्तुत किया जाता है। मणिपुर के जाने-माने फिल्म निर्माता अरिबाम श्याम शर्मा ने मणिपुर की रासलीला परम्परा के एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रूप "महारास" की वास्तविक प्रस्तुति को, जैसी कि वह इम्फाल के श्रीगोविन्दजी मंदिर में की गई थी, फिल्मांकित किया है।

गम्भीर भेंटवार्ता/साक्षात्कार (अवधि : 60 - 90 मिनट प्रत्येक, यू-मैटिक हाई-बैंड)

गम्भीर साक्षात्कारों की एक शृंखला में कुछ सुप्रसिद्ध महानुभावों एवं विद्वानों को विभिन्न विषयों पर उनके अनुभव तथा विचार जानने के लिए केन्द्र के स्टूडियो में आमंत्रित किया गया । इनमें से कुछ थे :- डॉ. राजाराव (लेखक), प्रो० ऐन्नमैरी शिमल (सूफीवाद की विदुषी एवं अध्यापिका), डॉ. प्रेमलता शर्मा (संगीत विज्ञानी तथा संस्कृत विद्वान) और फ्रित्स स्टाल (वैदिक विद्वान तथा दार्शनिक)।

ये कार्यक्रम डॉ. कपिला वात्स्यायन के साथ वार्तालाप के रूप में रिकार्ड किए गए हैं। इसी तरह के एक कार्यक्रम में, देश के विख्यात पुरातत्त्वविद् तथा कला इतिहासकार डॉ. कृष्णदेव के साथ श्री एम.सी. जोशी की भेंटवार्ता रेकार्ड की गई।

गीतगोविन्द के पाठ पर आधारित नृत्य प्रस्तुतियां
(अवधि : 30- 45 मिनट प्रत्येक, यू-मैटिक हाई-बैंड)

दूरदर्शन के केन्द्रीय निर्माण केन्द्र के सहयोग से, मालविका सरुक्कै (भरतनाट्यम), भारतीय शिवाजी (मोहिनीअट्टम) तथा माधवी मुद्गल (ओडिसी)जैसी कुछ जानी-मानी शास्त्रीय नृत्यांगनाओं की नृत्य प्रस्तुतियों को रेकार्ड किया गया है। इनके कुछ संगत अंशों का उपयोग इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की "गीतगोविन्द" विषयक बहु-माध्यमिक परियोजना में किया जाएगा। इन कार्यक्रमों की गुणवत्ता में वृद्धि करने के उद्देश्य से, डॉ. कपिला वात्स्यायन ने इनमें से कुछ कलाकारों के साथ स्टूडियो में नृत्य की कुछ बारीकियों, तकनीकी बातों तथा सूक्ष्म भेदों के विषय में चर्चा की और विषय को स्पष्ट करने के लिए नृत्यांगनाओं द्वारा नृत्य प्रदर्शन भी किया गया।

प्राप्ति/अर्जन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्रोतों की अनेक मशहूर फिल्में तथा वीडियो कार्यक्रम प्राप्त किए; जैसे :

	फिल्म का नाम		निर्देशक/निर्माता
1.	आर्टिस्टिक हाइट्स	:	कु० चन्द्रमणि
2.	रामप्पा टेम्पल	:	श्री कृष्णराव केशव
3.	तेरुकूथु (तमिलों का परम्परागत रंगमंच)	:	श्री डॉ. रामनारायण
4.	स्टोरी ऑफ इन्टीगेशन	:	श्री गौतम हलदर
5.	कृष्ण इन स्प्रिंग	:	श्री देबेन भट्टाचार्य
6.	राग	:	श्री देबेन भट्टाचार्य
7.	जीसस एण्ड दि फिशरमैन	:	श्री देबेन भट्टाचार्य

दूरदर्शन द्वारा "महान गुरुजन शृंखला" (ग्रेट मास्टर्स सिरीज) के अन्तर्गत प्रस्तुत किए गए, विख्यात महानुभावों के विषय में निम्नलिखित विशिष्ट कार्यक्रम भी आलोच्य वर्ष मे सांस्कृतिक अभिलेखागार में जोड़े गए :-

1. सत्यजित राय
2. जतिन दास
3. वृंदावन लाल वर्मा
4. सी.आर. आचारुलु
5. निखिल घोष

6. पं. राम नारायण

7. डॉ. शिवराम कारन्त

8. भूपेन हजारिका

9. किशन महाराज एवं उमायलपुरम के. शिवरामन

कार्यक्रमों का प्रचार-प्रसार

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की फिल्म "वांगला : ए गारो फेस्टिबल" को लगभग 150 भारतीय दूतावासों/मिशनों के माध्यम से विदेशों में प्रचार-प्रसार करने के लिए विदेश मंत्रालय द्वारा खरीदा गया। एक अन्य फिल्म "येलहोउ जगोई" को भारत के पिछले अंतर्राष्ट्रीय फिल्मोत्सव के इंडियन पैनोरमा खंड में शामिल किया गया। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा आंतरिक रूप से निर्मित एक नृत्यनाटिका "भ्रमरगीत" को कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर दूरदर्शन द्वारा अपने राष्ट्रीय नेटवर्क पर दो भागों में प्रसारित किया गया। सैटालाइट चैनल "एशिया नेट" ने भी कल्याणिकुट्टी अम्मा पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा तैयार किए गए प्रलेखन को प्रसारित किया।

आंतरिक प्रलेखन कार्य

वर्ष के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा आयोजित विभिन्न संगोष्ठियों/कार्यशालाओं/समारोहों का दृश्य-श्रव्य प्रलेखन आंतरिक रूप से किया गया। इनमें सब से महत्त्वपूर्ण थे जनवरी, 1996 में आयोजित "ऋत-ऋतु" प्रदर्शनी के वीडियो तथा निश्चल प्रलेखन।

फिल्म शो

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सांस्कृतिक अभिलेखागार में उपलब्ध फिल्मों तथा वीडियो कार्यक्रमों के समृद्ध संग्रह में से, निम्नलिखित फिल्मों का सार्वजनिक प्रदर्शन जुलाई, 1995 में इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में किया गया :

	फिल्म	निर्देशक/निर्माता
1.	अभिनय दर्पण	पार्वती कुमार
2.	मोहिनी अट्टम्	कल्याणि कुट्टीअम्मा
3.	उदयशंकर	देबेन भट्टाचार्य
4.	कलर्स आफ एब्सेंस	अरुण खोपकर
5.	गगनेन्द्र नाथ टैगोर	आलोक बनर्जी

कार्यक्रम घ : क्षेत्र अध्ययन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के क्षेत्र अध्ययन कार्यक्रम के अन्तर्गत, कलानिधि प्रभाग कुछ ऐसे विशिष्ट क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करता है जिनके साथ भारत के घनिष्ठ संबंध रहे हैं।

क. दक्षिण-पूर्व एशियाई अध्ययन

दक्षिण-पूर्व एशियाई अध्ययन को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से, आई.डी.सी.. लीडन के माइक्रोफिश संग्रह की विस्तृत सूची की बारीकी से जांच की गई और अंग्रेजी तथा इंडोनेशियाई भाषा की 19 रिपोर्टें और धारावाहिक चुने गए और भिन्न-भिन्न स्रोतों से प्राप्त करने के लिए 94 पुस्तकें भी चुनी गई। पेरिस की कुछ संस्थाओं से शोध सामग्री प्राप्त करने के लिए सम्पर्क स्थापित किए गए। पेरिस, चम्पा (वियतनाम) विषयक अपेक्षित फोटोग्राफ तथा प्लैंशेट इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संदर्भ पुस्तकालय के लिए भेजने को सहमत हुआ है। बालि की संस्कृति पर एक विस्तृत ग्रंथसूची तैयार करने के लिए 25 शीर्षकों के सूचक (इंडेक्स) बनाए गए। वर्ष के दौरान, कलानिधि प्रभाग ने (I) "वियतनाम की बौद्ध कला", तथा (II) "डिंगडुओंग कला शैली" विषयों पर शोधपत्र तैयार किए। प्रभाग ने "माइक्रोग्राफिक तकनीक विषयक कार्यशाला" पर हुई संगोष्ठी की अंतिम रिपोर्ट भी प्रकाशनार्थ तैयार की।

वर्ष 1995-96 में, "वियतनाम तथा कम्बोडिया की कला" विषय पर एक संगोष्ठी 8 नवम्बर, 1995 को आयोजित की गई। इनमें सुप्रसिद्ध पुरातत्त्वविदों, इतिहासकारों तथा राजनयिकों ने भाग लिया। कम्बोडिया के राजदूत महामहिम श्री बोअक फेंग तथा वियतनाम के राजदूतावास के मिनिस्टर काउंसेलर भी उपस्थित थे। संगोष्ठी का मुख्य भाषण विख्यात भारतीय विद्याविद् प्रो. लोकेश चन्द्र ने दिया।

ख. पूर्व-एशियाई अध्ययन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का पूर्व-एशियाई अध्ययन कार्यक्रम दो स्तरों पर चलाया जा रहा है–भारत-चीन सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम का कार्यान्वयन करने के लिए चीनी संस्थाओं के साथ सहयोग स्थापना द्वारा और (2) संयुक्त अनुसंधान कार्यक्रमों तथा संगोष्ठियों के आयोजन और पुस्तकों के प्रकाशन द्वारा।

(1) चीनी संस्थाओं के साथ सहयोग

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र चीन की दुनहुआंग अकादमी के साथ संबंध-सम्पर्क बनाए रखता है। अकादमिक निदेशक डॉ. कपिला वात्स्यायन तथा प्रोफेसर डॉ. तानचुंग, दुनहुआंग कला की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में और दुनहुआंग अकादमी के निदेशक प्रो० दुआन वेनजी के सम्मान में लेख लिखने में व्यस्त हैं।

अध्ययन सम्पन्न करने के उद्देश्य से सहयोग स्थापित करने के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा चीन के लॉगमैन गुफा संस्थान के बीच बातचीत चलती रही। ऐसी परिकल्पना की जा रही है कि वर्ष 1996-97 के दौरान, दोनों संस्थानों के बीच आदान-प्रदान यात्राएँ होंगी, और 1997-98 में कला प्रस्तुतियाँ तथा संयुक्त संगोष्ठियां आयोजित की जाएंगी। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा लॉगमैन संस्थान सांस्कृतिक सामग्रियों तथा प्रकाशनों का आदान-प्रदान करने और संयुक्त अनुसंधान परियोजनायें हाथ में लेने के लिए भी सहमत हुए हैं।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने झिनजिआंग सामाजिक विज्ञान अकादमी के पुरातत्त्व संस्थान से संपर्क स्थापित किए हैं और झिनजिआंग संस्थान के निदेशक प्रो० बांग बिंगहुआ ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा विदेश मंत्रालय के प्रायोजकत्व में 26 मार्च से 11 अप्रैल, 1996 तक भारत की यात्रा की। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र "निया" स्थल पर की गई पुरातात्त्विक खोजों पर सामग्री और प्रो० वांग बिंगहुआ द्वारा काशगर से खोजे गए एक प्राचीन संस्कृत ग्रंथ आदि के प्रकाशन में झिनजिआंग संस्थान के साथ सहयोग करने का प्रस्ताव करता है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की यह भी योजना है कि पेइचिंग के राष्ट्रीयता संबंधी मामलों के राज्य आयोग (मंत्रालय) के अन्तर्गत संचालित एक शोध संगठन तिब्बतशास्त्र संस्थान के साथ सहयोग स्थापित किया जाए। इस तिब्बत संस्थान के पास संस्कृत की ऐसी बहुमूल्य प्राचीन पांडुलिपियों के फोटोग्राफ हैं, जो कभी भारत से तिब्बत के इन बौद्ध मठों में ले जाई गई थीं।

(2) संगोष्ठी तथा परिचर्चा का आयोजन

नवम्बर, 1995 में, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने चीनी अध्ययन संस्थान के साथ मिलकर "भारत और चीन परस्पर दृष्टि" विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की थी। संगोष्ठी का उद्घाटन डॉ. कर्णसिंह द्वारा किया गया था और उसमें शताधिक विद्वानों, चीन विशेषज्ञों, सेवारत तथा सेवानिवृत्त राजनयिकों, रणनीति कुशलों, इतिहासविदों आदि ने भाग लिया था। इतिहास, रणनीति, व्यक्तित्त्व, आर्थिक विकास, भावी संभावनाएँ और लोकतंत्रीकरण विषयों पर छः शोधपत्र प्रस्तुत किए गए; इसके अलावा, 'दर्शन' तथा 'मध्य एशिया' विषयों पर विद्वानों के बीच चर्चायें हुईं।

मार्च, 1995 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने "भारत और चीन : परस्पर दृष्टि-एशिया प्रशांत परिप्रेक्ष्य" विषय पर एक परिचर्चा आयोजित की। इसका प्रवर्तन हांङकांङ बैप्टिस्ट विश्वविद्यालय के प्रो० हुशांङ चिह-लिन द्वारा किया गया।

प्रकाशन योजना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने "भारत-चीन ग्रंथमाला" के प्रकाशन की एक महत्त्वाकांक्षी योजना बनाई है। इस का उद्देश्य ऐसे विद्वानों/अध्येताओं तथा विशेषज्ञों को स्रोत सामग्री उपलब्ध कराना है जो चीन-भारत अध्ययन में रुचि रखते हों। इस शृंखला में कुल मिलाकर 25 पुस्तकें होंगी और प्रत्येक पुस्तक संयुक्त रूप से भारतीय तथा चीनी विद्वानों द्वारा लिखी जाएगी।

इस विशाल प्रकाशन कार्यक्रम के साथ-साथ, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने एक परियोजना भी प्रारंभ की है, जिसका नाम है - "भारत और चीन : परस्पर दृष्टि"। यह एक आगे चलने वाली परियोजना है जिसका उद्देश्य भारत तथा चीन के विद्वानों तथा विशेषज्ञों को भारत तथा चीन के बीच समय-समय पर रहे पारस्परिक संबंधों पर विचार-विमर्श करने के लिए एक साथ एकत्रित करना है। यह परियोजना "भारत-चीन ग्रंथमाला" के बृहत्तर कार्यक्रम को संबल प्रदान करेगी।

प्रो० तान चुंङ और बिजिंङ विश्वविद्यालय के प्रो० गेंग यिनजेंङ् ने संयुक्त रूप से "इंडिया-चाइना इंटरफेस" नामक प्रबन्ध ग्रंथ लिखने की तैयारियां प्रारंभ कर दी हैं।

ग. स्लाविक तथा मध्य-एशियाई अध्ययन

स्लाविक तथा मध्य-एशियाई अध्ययन एकक का उद्देश्य उन ऐतिहासिक परस्पर क्रियाओं का अध्ययन करना है जो अनेक सदियों से मध्य-एशिया, रूस और भारत के पारस्परिक संबंधों की विशेषता रही हैं। इन अध्ययनों की आधारभूत धारणा यह है कि कला तथा संस्कृति से बाहर की और विकीर्ण होने वाली सभी विधायें परस्पर एक दूसरे पर आश्रित हैं। वर्ष 1991 से ही यह निश्चय किया गया था कि यह प्रभाग इस क्षेत्र से संबंधित ऐसा सम्पूर्ण साहित्य प्राप्त करेगा जो गत दो शताब्दियों में प्रकाशित किया गया हैं।

इसका श्रीगणेश इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के पुस्तकालय में अप्रकाशित प्राथमिक स्रोत ग्रंथों तथा प्रकाशित पुस्तकों के एक सुव्यवस्थित संग्रह में किया गया। रूसी भाषा की शोध सामग्री दो संस्थाओं अर्थात् मास्को की इनियन तथा लीडन की आई.डी.सी. को आर्डर देकर माइक्रोफिशें पर बराबर मंगाई जाती हैं।

रूसी तथा जर्मन भाषा के लगभग 30 धारावाहिक जो आई.डी.सी से माइक्रोफिश पर खरीदे गए थे, अब केन्द्र पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। इतिहास, भूगोल, तथा अर्थशास्त्र की महत्त्वपूर्ण पत्रिकाओं के अतिरिक्त, न्यायशास्त्र, जीवनचरित्र, सांख्यिकी, शिक्षा तथा क्षेत्रीय अध्ययन आदि विषयों पर भी सामग्री प्राप्त होती है। इनके उपयोग को और सरल बनाने के लिए पृष्ठों को "यूरेशिया इंडेक्स" शीर्षक के अन्तर्गत अलग खण्डों में जिल्दबंद कराया जा रहा है। चूंकि इन धारावाहिक पत्रिकाओं के लिए इस समय कोई सूचक बनाने की व्यवस्था नहीं है, इसलिए ऐसा पहली बार किया जा रहा हैं।

प्राथमिक शोध सामग्री के संग्रह कार्य को पूरा करने के लिए, नए प्रकाशनों और पुराने प्रकाशनों के पुनर्मुद्रणों की सूचियां भी पत्रिकाओं तथा कैटलॉगों की सहायता से तैयार की जाती हैं और फिर उनके लिए आर्डर भेजे जाते हैं।

इन विषयों में रुचि रखने वाले शोध अध्येता इन सब सुविधाओं के बल पर भारत में प्रारंभिक शोध कार्य कर सकेंगे और उसके बाद अपने शोध निष्कर्षों को भूतपूर्व समस्त सोवियत संघ के पुस्तकालयों में प्रामाणिक सिद्ध कर सकेंगे। पिछले कुछ वर्षों में, इस प्रक्रिया के द्वारा पुस्तकालय अनेक मानविकी विषयों तथा सामाजिक विज्ञानों से संबंधित वाङ्मय का संकलन करने के विषय में काफी समृद्ध हुआ। शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत विचार/सिद्धान्त तभी परिपक्व होते हैं जब उन पर व्याख्यानों तथा संगोष्ठियों में विचार-विनिमय होता है इसी दृष्टि से इस प्रभाग ने ऐसे आयोजन किए हैं जिनमें भारतीय अध्येताओं को अपने विदेशी साथियों के साथ संपर्क में आने का अवसर मिला है।

रूसी संस्थाओं के साथ कार्यक्रम

(I) इनियन

माइक्रोफिश पर 8,000 से अधिक शीर्षक "इनियन" से प्राप्त हो चुके हैं। इस वर्ष 2,289 माइक्रोफिशें, प्रतिमास 191 के औसत से प्राप्त हुई हैं। यह कुल संख्या वर्ष 1994-95 की संख्या से 591 अधिक है। प्रोफेसर माधवन के पालत ने जुलाई, 1995 में अपनी रूस यात्रा के दौरान इनियन संस्था का दौरा किया और वहां माइक्रोफिश उत्पादन कार्यक्रम की प्रगति को देखा।

इस कार्यक्रम में शामिल किए गए विषय हैं : क्रांति-पूर्व का मध्य एशिया, ग्रंथसूचियां, अर्थव्यवस्था विषयक आधारभूत संदर्भ जैसे गजेटियर तथा वाणिज्यिक सर्वेक्षण, न्यायशास्त्र के विभिन्न संस्करण, सामाजिक संरचनाओं तथा आन्दोलनों पर सामग्री, और रूस के 19वीं शताब्दी के बौद्धिक इतिहास पर पुस्तकें। इसके अतिरिक्त, माइक्रोफिश पर की गई खरीदारियों में शामिल हैं इतिहास, दर्शन, भाषा तथा साहित्य और समाजविज्ञान विषयक चालू अवधि (1992-94) के प्रकाशन।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पुस्तकालय की कम्प्यूटर हार्ड डिस्क के लिए इन शीर्षकों से संबंधित कैटलॉग कार्य वर्ष के दौरान पूरा किया गया।

प्राच्य अध्ययन संस्थान, सेंट पीटर्सबर्ग

संस्कृत तथा पालि पाण्डुलिपियों के 20,000 से भी अधिक माइक्रोफिल्म फ्रेम वर्ष के अंत तक इकट्ठे हो चुके थे और श्रेण्येतर भारतीय भाषाओं की पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्में बनाने के बारे में वर्ष के दौरान पत्र-व्यवहार चलता रहा।

प्रोफेसर माधवन के पालत वहां के प्रधान प्रोफेसर यूरी ए. पेट्रोसियन और उनके सहयोगियों से मिले और उन्होंने जुलाई में अपनी अगली यात्रा में श्रेण्येतर भारतीय भाषाओं की प्रतिलिपियां इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पुस्तकालय के लिए तैयार करने की संभावनाओं के विषय में आगे चर्चा की।

मध्य-एशियाई पुरातत्त्वों का प्रलेखन कार्य

मध्य-एशियाई सांस्कृतिक धरोहर एक अत्यन्त समृद्ध धरोहर है, किन्तु अब भी यह स्वयं मध्य-एशियाई तथा रूस, पश्चिमी यूरोप, चीन, जापान तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के संग्रहालयों तथा अन्य संस्थाओं में बिखरी पड़ी है। इन पुरातात्त्विक वस्तुओं को विद्वानों तथा जन-साधारण के लिए समान रूप से अधिकाधिक उपलब्ध कराने की आवश्यकता से प्रेरित होकर चार उद्देश्यों वाली एक परियोजना यूनेस्को के पास उनसे सहायतार्थ भेजी गई थी। ये उद्देश्य थे : उनके स्थान का प्रलेखन करना ; कला-तथ्यों को कैटलॉग में दर्ज करना ; इन वस्तुओं के मूल रूप को मुद्रित या इलेक्ट्रॉनिक रूप में पुनर्गठित करना; और उनके मूल स्थलों का पता लगाना और उनका नक्शा तैयार करना। यूनेस्को के सामान्य सम्मेलन ने एक संकल्प द्वारा नवम्बर, 1996 में इस परियोजना को स्वीकार कर लिया। यूनेस्को द्वारा समरकन्द में स्थापित मध्य-एशियाई अध्ययन के अंतर्राष्ट्रीय संस्थान को कहा गया कि वह अपने वैज्ञानिक कार्यक्रम के प्रारूप के अन्तर्गत इस परियोजना को एक अंतर्क्षेत्रीय परियोजना के रूप में समन्वित करे। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के डॉ. अरूप बनर्जी को यूनेस्को द्वारा हिरयामा सिल्क रोड्स फेलोशिप देकर अप्रैल, 1996 में व्यवहार्यता अध्ययन चालू करने के लिए कहा गया और परियोजना की कार्यविधि तय करने के लिए नई दिल्ली में 1997 में एक विशेषज्ञ सम्मेलन बुलाने के लिए यूनेस्को के सहभागिता कार्यक्रम से धनराशि मांगी गई।

वर्ष के दौरान, मध्य-एशियाई कला वस्तुओं/तथ्यों के मुख्य-मुख्य भंडारों के बारे में जानकारी प्राप्त की गई और इन संग्रहालयों तथा संस्थाओं से सम्पर्क स्थापित किया गया। उनसे डॉ. अरूप बनर्जी को निमंत्रण पत्र भेजने का निवेदन किया गया ताकि डॉ. अरूप बनर्जी इन संग्रहालयों का दौरा कर सकें और उनके अध्यक्षों तथा अन्य विशेषज्ञों से व्यवहार्यत अध्ययन के विषय में चर्चा कर सकें। अक्तूबर में जब डॉ. अरूप बनर्जी सेंट पीटर्सबर्ग में थे, उन्होंने हरमिटेज में स्थापित मध्य-एशियाई संग्रह के क्यूरेटरों से परियोजना के बारे में चर्चा की।

प्रो० एस. एफ. ओल्डनबर्ग की कृतियों का प्रकाशन

प्रोफेसर एस.एफ. ओल्डनबर्ग मध्य-एशिया में शाही रूस के, खोजकर्ताओं में अग्रणी थे। उन्हें भारतीय धर्म, दर्शन तथा कला के अध्ययन में भी रुचि थी। उनका कार्य प्राच्यवाद के उस रूप का द्योतक है जो रूस में क्रांति से पहले के युग में रूस, भारत तथा मध्य-एशिया की संस्कृतियों में हुई खोजों के आधार पर फल-फूल रहा था। चूंकि उनकी कृति का अनुवाद नहीं हुआ था इसलिए पहले तो यह निश्चय किया गया कि उनकी चुनी हुई रचनाओं का अनुवाद करके प्रकाशित किया जाए ताकि उससे उनकी दिलचस्पी का भली-भांति पता लग सके। शिक्षाविद् जी.एम. बोनगार्ड लेविन की सहायता से चुनी गई रचनाएं डॉ. ए.ए. विगैसिन द्वारा यहां लाई गई जब नवम्बर, 1995 में विगैसिन दो सप्ताह के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में अपनी आदान-प्रदान यात्रा पर आए। ये रचनायें वर्ष 1996-97 में अनुवाद और प्रकाशन के लिए तैयार की जायेंगी।

व्याख्यान तथा सम्मेलन

प्रभाग के सभी तीनों सदस्यों ने प्रभाग की "शाही रूस में जातीयता एवं समुदाय" शीर्षक शोध परियोजना के अन्तर्गत किए गए अपने शोध कार्य के निष्कर्षों को 6 अप्रैल, 1995 को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आयोजित एक परिचर्चा कार्यक्रम

में प्रस्तुत किया। प्रोफेसर माधवन के पालत ने "तातार राष्ट्रीयता" विषय पर, डॉ. अरूप बनर्जी ने "कला संरक्षकों के रूप में सौदागर" विषय पर और श्री थॉमस मैथ्यू ने "रूस में राष्ट्रीयता के सिद्धान्त" विषय पर अपने-अपने व्याख्यान दिए। "19वीं तथा 20वीं शताब्दी के रूस में कायापलट और सामाजिक पहचानों को मान्यता" विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन नई दिल्ली में 20-22 फरवरी, 1996 को हुआ। उसमें प्रस्तुत किए गए ग्यारह शोधपत्रों में से दो शोधपत्र प्रो० माध्वन के. पालत तथा डॉ. अरूप बनर्जी के थे। सम्मेलन का कार्यविवरण वर्ष 1996-97 में प्रकाशित किया जाएगा।

इस्लामिक तथा जरतुश्ती सांस्कृतिक धरोहर का प्रलेखन कार्य

इस्लामिक सांस्कृतिक धरोहर

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने इस्लामिक शिक्षा पर प्राथमिक स्रोत सामग्री तथा सुसंगत सूचना प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत तथा भारत से बाहर स्थित इस्लामिक शिक्षा केन्द्रों से संपर्क स्थापित किए हैं।

रामपुर रजा लाइब्रेरी, रामपुर, मौलाना अबुल कलाम आजाद अरबी तथा फ़ारसी शोध संस्थान, टोंक, चरारेशरीफ़, कश्मीर, हजरत पीर मुहम्मदशाह दरगाह शरीफ़ ट्रस्ट लाइब्रेरी, अहमदाबाद, और जुमा मस्जिद, मुंबई में उपलब्ध पाण्डुलिपियों के शीर्षकों का अवलोकन किया गया और मुसलिमों की सांस्कृतिक धरोहर से संबद्ध पाण्डुलिपियों का पता लगाया गया। तत्पश्चात्, रामपुर रजा लाइब्रेरी, रामपुर तथा मौलाना अबुल कलाम आजाद अरबी तथा फ़ारसी शोध संस्थान, टोंक में उपलब्ध कुछ सामग्री तथा चरारेशरीफ़ से प्राप्त छः इस्लामिक पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्में बनाई गई। हजरत पीर मुहम्मद शाह दरगाह शरीफ़ ट्रस्ट लाइब्रेरी, अहमदाबाद तथा जुमा मस्जिद, मुंबई में उपलब्ध चयन की गई पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्में बनाने का काम शीघ्र ही हाथ में लिया जाएगा।

ज़रतुश्ती सांस्कृतिक धरोहर

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ज़रतुश्ती अध्ययन संबंधी अपने संग्रहों के विकास के लिए प्रयासरत रहा है। उसने कु० पीलू एन. जंगलवाला, कु० शेरनाज कामा तथा कु० हिमायूँ मोदी जैसी विदुषियों के साथ बराबर संपर्क बनाए रखा है।

कलाकोश

अनुसंधान एवं प्रकाशन प्रभाग

कलाकोश प्रभाग कलाओं से जुड़ी बौद्धिक परम्पराओं का उनके बहुस्तरीय एवं विविधविद्यापरक संदर्भों में अनुसंधान करते हुए केन्द्र के मुख्य अनुसंधान तथा प्रकाशन प्रभाग के रूप में कार्य करता है। यह शास्त्र को मौखिक के साथ, दृश्य को श्रव्य के साथ और सिद्धान्त पक्ष को व्यवहार पक्ष के साथ जोड़ते हुए, कलाओं को एक सांस्कृतिक प्रणाली के समग्र ढांचे के भीतर स्थापित करने का प्रयास करता है।

अपने सुपरिभाषित उद्देश्यों की परिधि में रहते हुए इस प्रभाग ने (क) उन मूल अवधारणाओं का पता लगाया है जो समग्र भारतीय चिन्तन की मूलाधार हैं और जो सभी विषयों/शास्त्रों तथा जीवन के आयामों में व्याप्त हैं; (ख) मूल ग्रंथों की स्रोत सामग्री को जो अब तक अज्ञात, अप्रकाशित और अप्राप्य थी, अनुवाद के साथ मूल भाषा में प्रकाशित करने के लिए निर्धारित किया है ; (ग) उन विद्वानों तथा विशेषज्ञों की कृतियों के प्रकाशन की योजना बनाई है जो अपने ही समग्रवादी दृष्टिकोण के माध्यम से अन्तर-सांस्कृतिक पद्धति तथा विविधविद्यापरक रीति से कलात्मक परम्पराओं को समझने में अग्रणी

रहे हैं ; और (घ) एक 21-खंडीय विश्वकोश के निर्माण का कार्यक्रम प्रारंभ करने के लिए योजना का प्रारूप तैयार किया है, जिसे अब "भारतीय कला के रूपक" (मेटाफर्स ऑफ इंडियन आर्ट) नामक परियोजना के रूप में संशोधित किया गया है।

प्रभाग का कार्य मुख्य रूप से चार बड़ी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :-

क.	कलातत्त्वकोश	:	आधारभूत अवधारणाओं का कोश और पारिभाषिक शब्दावलियां।
ख.	कलामूलशास्त्र	:	उन आधारभूत ग्रंथों की शृंखला जो भारतीय कलात्मक परम्पराओं की बुनियाद है और मूल ग्रंथ जो किसी कला-विशेष से संबंधित हैं।
ग.	कलासमालोचन	:	समीक्षात्मक पाण्डित्य तथा अनुसंधान की ग्रंथमाला, और
घ.	कला विश्वकोश एवं कलाओं का इतिहास	:	(I) कलाओं का एक बहुखण्डीय विश्वकोश ; (II) भारत की मुद्राशास्त्रीय कलाओं पर एक खण्ड

कार्यक्रम क : कलातत्त्वकोश

(भारतीय कलाओं की आधारभूत अवधारणाओं का कोश)

कलाकोश प्रभाग का पहला कार्यक्रम है भारतीय कलाओं की आधारभूत अवधारणाओं का कोश। ऐसे लगभग 250 पारिभाषिक शब्दों की सूची तैयार की गई है जो अनेक शास्त्रों के मूल ग्रंथों में व्यवहृत हुए हैं और जिनका बीज कलाओं में दृष्टिगोचर होता है। प्रत्येक अवधारणा का अनुसंधान अनेक शास्त्रों के मूल ग्रंथों के माध्यम से किया जाता है जिससे एक परिभाषिक शब्द को चुना जा सके जिसका एक मुख्य अर्थ और व्यापक स्वरूप हो, लेकिन कालान्तर में उसी शब्द के अनेक अर्थ विकसित हो गए हों। ऐसे संकलन, विश्लेषण तथा पुन: एकत्रीकरण के द्वारा भारतीय परम्परा की मूलभूत एकता और उसके अनिवार्य अन्योन्याश्रयशास्त्रपरक स्वरूप का पुर्ननिर्माण किया जा सकेगा। जैसा कि इससे पूर्व के प्रतिवेदन में बताया गया है, कलातत्त्वकोश का प्रथम खंड 1988 में प्रकाशित किया गया है। इसमें आठ पारिभाषिक शब्दों का विवेचन किया गया है। इसका द्वितीय खंड जो दिक् तथा काल से संबंधित 16 पारिभाषिक शब्दों के बारे में है, मार्च, 1992 में विमोचित किया गया।

इस कोश का तीसरा खंड जिसमें भारतीय परम्परा के अनुसार मूल तत्त्वों अर्थात् महाभूतों के विषय में आठ लेख हैं, निर्माणाधीन है और 1995 में प्रकाशित कर दिया जाएगा। 480 से अधिक पृष्ठों के इस खंड में निम्नलिखित शब्दों पर चर्चा की गई हैं :-

1. प्रकृति
2. भूत/महाभूत
3. आकाश
4. वायु
5. अग्नि

6. ज्योतिस्/तेजस्/प्रकाश

7. अप्

8. पृथिवी/भू/भूमि/भूमिका

यह खंड समीक्षाधीन वर्ष में, डॉ. श्रीमती कपिला वात्स्यायन के प्रधान सम्पादकत्व में बेट्टिना बॉमर द्वारा संकलित, सम्पादित एवं ग्रंथरूपित किया गया है। इसकी कैमरा-निर्मित प्रति तैयार की जा चुकी है और अंतिम रूप से मुद्रण के लिए भेज दी गई है। आशा है, इस खंड का विमोचन अगले वर्ष प्रारंभिक दौर में ही कर दिया जाएगा।

कलातत्त्वकोश के चतुर्थ खंड का कार्य भी 1995-96 में प्रारंभ कर दिया गया है। इसमें निम्नलिखित सात शब्दों का विवेचन किया जा रहा है :

1. इन्द्रिय

2. द्रव्य

3. धातु

4. गुण-दोष

5. अधिभूत-अधिदैव-अध्यात्म

6. स्थूल-सूक्ष्म-पर

7. सृष्टि-स्थिति-प्रलय

इन पारिभाषिक शब्दों पर शोध लेख लिखने का काम सुयोग्य विद्वानों को सौंपा गया है। अब तक *इन्द्रिय, द्रव्य, धातु, गुण-दोष, अधिभूत,-अधिदैव-अध्यात्म, स्थूल-सूक्ष्म, सृष्टि-स्थिति-प्रलय,* पर शोध-पत्र प्राप्त हो चुके हैं और अद्वैतवादिनी कौल के सहयोग से, कपिला वात्स्यायन द्वारा सम्पादित किए जा रहे हैं।

आकार अथवा रूप विषयक पञ्चम खंड में सम्मिलित किए जाने वाले शब्दों का निर्धारण, विख्यात विशेषज्ञों के परामर्श से किया जा चुका है। ये निम्नलिखित हैं :–

1. आभास

2. छाया

3. अव्यक्त-व्यक्त

4. सकल/निष्कल

5. आकार/आकृति

6. रूप/प्रतिरूप/(सारूप्य)

7. बिम्ब-प्रतिबिम्ब
8. सादृश्य/सारूप्य
9. अनुकीर्तन/अनुकृति/अनुकरण
10. प्रतिमा/प्रतिकृति
11. मूर्ति
12. विग्रह
13. प्रतीक
14. लिंग/चिह्न/लाञ्छन
15. रखा (ऋजु-वक्र-तिर्यक्)
16. चिति/चैत्य/स्तूप
17. प्रासाद
18. अलंकार
19. अभिनय
20. वृत्ति/रीति
21. बन्ध/प्रतिबंध

वर्ष 1995-96 के दौरान, *"आकार"* शब्द पर 956 डेटा कार्ड और अन्य शब्दों पर 735 कार्ड तैयार किए गए। भिन्न-भिन्न शब्दों पर शोध-लेख लिखने का कार्य भी विभिन्न विद्वानों को सौंप दिया गया है। डॉ. आर०सी० शर्मा जो इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के वाराणसी कार्यालय के अवैतनिक समन्वायक और भारत कला भवन के निदेशक हैं, इस पञ्चम खंड का सम्पादन करेंगे।

कार्यक्रम ख: कलामूलशास्त्र

(कलाओं से संबंधित आधारभूत ग्रंथों की शृंखला)

कलाकोश प्रभाग का दूसरा दीर्घकालिक कार्यक्रम है–वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला से लेकर संगीत, नृत्य, नाट्य आदि तक की भारतीय कलाओं से संबंधित आधारभूत ग्रंथों का पता लगाना और उनका समालोचनात्मक सम्पादन करके टीका-टिप्पणियों तथा अनुवाद के साथ उन्हें कलामूलशास्त्र ग्रंथमाला के रूप में प्रकाशित करना।

वर्ष 1988-89 में कुछ प्रकाशनों के विमोचन के साथ इस कार्यक्रम का प्रारंभ करते हुए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने कलामूलशास्त्र की ग्रंथमाला के अन्तर्गत मार्च, 1994 तक वैदिक तथा शास्त्रीय संगीत, सिद्धान्त तथा विवरण, प्रतिमा

विज्ञान, शैवागम, कर्मकाण्ड तथा वास्तुशिल्पीय परम्पराओं सहित कला के विभिन्न पक्षों पर कुल मिलाकर 11 आधारभूत ग्रंथ सानुवाद एवं समालोचनात्मक संपादित रूप में प्रकाशित किए थे।

वर्ष 1995-96 के दौरान फ़कीरुल्लाह (नवाब सैफ़ खां) का रिसाल-ए राग दर्पण (2.क.II.6) (हिन्दुस्तानी संगीत पर एक मध्ययुगीन फारसी ग्रंथ; सम्पादक तथा अनुवादक प्रो० शहाब सरमदी) का विमोचन किया गया। इसी वर्ष काण्व-शतपथ-ब्राह्मण, खंड 2 (1. ख. 4) और कृष्णगीति (8.1), केरल की "कृष्णट्टम" नामक नृत्य नाटिका शैली पर 17 वीं शताब्दी की एक गीति-नाट्य स्रोत कृति; सम्पादक तथा अनुवादक; डॉ. सी.आर. स्वामिनाथन तथा डॉ. सुधा गोपालकृष्णन) को मुद्रण की प्रगति भी अंतिम चरणों तक पहुँच सकी।

निम्नलिखित आठ कृतियों के प्रतिलिपि-सम्पादन का कार्य प्रगति पर है :

1. **लाट्यायन-श्रौत-सूत्र (1. ग. 7)**
   कर्मकाण्ड विषयक एक सामवैदिक सूत्र ग्रंथ,
   सम्पादक तथा अनुवादक : एच.जी. रानाडे

2. **पुष्पसूत्र (1. घ . 5)**
   सामगायन से संबंधित एक ग्रंथ,
   सम्पादक तथा अनुवादक : जी. एच. तारलेकर

3. **कलाधार (1. ङ 1.)**
   कला संबंधी प्राचीन मूल सन्दर्भों का संकलन;
   सम्पादक तथा अनुवादक : वी.एन. मिश्र

4. **चतुर्दण्डी-प्रकाशिका (2. क. 11.2)**
   मुख्यत: कर्नाटक शैली के संगीत के विषय में एक 17वीं शताब्दी का निबन्ध ग्रंथ, जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ 72 मेलों की विकसित योजना पर विचार किया गया है;
   सम्पादक तथा अनुवादक : आर. सत्यनारायण

5. **संगीत-मकरन्द (2. क. IV 4)**
   भारतीय शास्त्रीय संगीत पर एक प्राचीन निबंध ग्रंथ,
   सम्पादक तथा अनुवादक : एम. विजयलक्ष्मी

6. **चित्रसूत्र : (2. ङ 2)**
   विष्णुधर्मोत्तर पुराण का एक भाग जिसमें चित्रकला की तकनीक का ब्यौरा दिया गया है;
   सम्पादक तथा अनुवादक : पारुल दवे मुखर्जी

7. **ईश्वरसंहिता (3.8)**
   एक पाञ्चरात्र आगम का ग्रंथ;
   सम्पादक तथा अनुवादक : लक्ष्मी ताताचार

8. **संगीतोपनिषत् सारोद्धार (2. क. 11.7)**
   मध्ययुगीय भारतीय विशेषत: गुजरात और राजस्थान के संगीत और नृत्य पर एक जैन मुनि द्वारा रचित ग्रंथ;
   सम्पादक तथा अनुवादक : एलिन माइनर

निम्नलिखित ग्रंथों के सानुवाद समालोचनात्मक संस्करण तैयार करने का कार्य प्रगति की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में है :

1. **आपस्तम्ब-श्रौत-सूत्र (1. ग. 1)**
   कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा के अनुसार वैदिक (श्रौत कर्मकाण्ड) यज्ञ पद्धति की दीपिका :
   सम्पादन एवं अनुवाद का कार्य ए. सम्पत नारायण को सौंपा गया।

2. **जैमिनीय-गृह्य-सूत्र (1. ग. 4)**
   सामवेद की जैमिनीय शाखा के अनुसार वैदिक गृह्य कर्मकाण्ड की दीपिका,
   सम्पादन एवं अनुवाद का कार्य आसको पारपोला को सौंपा गया।

3. **रागविबोध (2. क. 11.5)**
   भारतीय शास्त्रीय संगीत के रागों पर 17वीं शताब्दी का ग्रंथ ;
   सम्पादन एवं अनुवाद का कार्य रंगनायकी अय्यंगर को सौंपा गया।

4. **संगीत-समयसार (2. क. IV-8)**
   भारतीय शास्त्रीय संगीत पर 12वीं शताब्दी का ग्रंथ;
   सम्पादन एवं अनुवाद का कार्य आर. सत्यनारायण को सौंपा गया।

5. **संगीत-सुधाकर (सिंह भूपाल रचित) (2. क. IV-8)**
   भारतीय शास्त्रीय संगीत पर 12वीं शताब्दी का ग्रंथ, काम आर. सत्यनारायण को सौंपा गया।

6. **भाव-प्रकाशन (शारदातनय रचित) (2. ख. 4)**
   भारतीय नाट्य शास्त्र एवं अभिनय कला पर एक शास्त्रीय ग्रंथ; काम जे.पी. सिंहा को सौंपा गया।

7. **मानसोल्लास (II. ग. 1)**
   भारतीय कला तथा स्थापत्य विषयक ग्रंथ;
   काम एम.ए. लक्ष्मी ताताचार को सौंपा गया।

8. **प्रतिष्ठालक्षण सार-समुच्चय (II. ग. 8.)**
   नेपाल का देवस्थान स्थापत्य तथा कर्मकाण्ड विषयक मध्ययुगीन ग्रंथ;
   काम बेट्टिना बॉमर को सौंपा गया।

9. **सौधिकागम (II. ग. 14)**
   धर्म-निरपेक्ष स्थापत्य विषयक ग्रंथ;
   काम बेट्टिना बॉमर को सौंपा गया।

10. **तंत्र-समुच्चय (II. ग. 14)**
    केरल परम्परा के अनुसार देवस्थान स्थापत्य तथा कर्मकाण्ड विषयक ग्रंथ;
    काम के.के. राजा को सौंपा गया।

11. **साधनमाला (II. घ. 3)**
    वज्रयानी बौद्ध कर्मकाण्ड तथा प्रतिमा विज्ञान विवरणों का ग्रंथ;
    काम सातकड़ि मुखोपाध्याय को सौंपा गया।

12. **रसगंगाधर (II. च. 1)**
संस्कृत काव्यशास्त्र तथा सौन्दर्यशास्त्र विषय पर उत्तर मध्ययुगीन कृति;
काम आर.आर. मुखर्जी को सौंपा गया।

13. **सरस्वती-कण्ठाभरण (II. च. 2)**
संस्कृत अलंकार शास्त्र, काव्यशास्त्र तथा सौन्दर्यशास्त्र पर 11 वीं शताब्दी की रचना;
काम सुन्दरी सिद्धार्थ को सौपा गया

14. **अघोरशिवाचार्य पद्धति अथवा क्रियाक्रमद्योतिका (III-2)**
शैव सिद्धान्त के अनुसार, देवालय क्रियाकर्म दीपिका (सटीक),
काम एस.एस. जानकी तथा रिचर्ड डेविस को सौंपा गया।

15. **हयशीर्ष-पाञ्चरात्र (III-6)**
वैष्णव धर्म के पाञ्चरात्र सम्प्रदाय के देवालय स्थापत्य, मूर्तिकला तथा कर्मकाण्ड पर शास्त्रीय ग्रंथ;
काम जी.सी. त्रिपाठी को सौंपा गया।

16. **मारीचि-संहिता (III-17)**
वैष्णव धर्म के पाञ्चरात्र सम्प्रदाय के देवालय स्थापत्य, मूर्तिकला तथा कर्मकाण्ड पर शास्त्रीय ग्रंथ;
काम एस.एन. मूर्ति को सौंपा गया।

17. **मंथान-भैरव तंत्र (III-19)**
नेपाल परम्परा का एक शाक्त-तांत्रिक ग्रंथ;
काम मार्क डिक्जकोवस्की को सौंपा गया।

18. **निःश्वासतत्त्व-संहिता (III-20)**
नेपाल परम्परा का एक तांत्रिक ग्रंथ;
काम एन.आर. भट्ट को सौंपा गया।

19. **शारदातिलक (III-25)**
कश्मीर परम्परा का एक शाक्त-तांत्रिक ग्रंथ (सटीक);
काम ए.बी. खन्ना को सौंपा गया।

20. **तंत्रसार-संग्रह (III-27)**
माध्वमत के कर्मकाण्ड पर मध्ययुगीन ग्रंथ;
काम के.टी. पाण्डुरंगी को सौंपा गया।

21. **शतसाहस्रिका-प्रज्ञा-पारमिता (VI-3)**
महायान बौद्ध-धर्म तथा दर्शन पर एक प्राचीन शास्त्रीय ग्रंथ;
काम रत्ना बसु को सौंपा गया

22. **जैमिनीय-ब्राह्मण (I. ख. 3)**
सामवेद की जैमिनीय शाखा के अनुसार एक प्राचीन कर्मकाण्ड ग्रंथ;
काम एच.डी. रानाडे को सौंपा गया।

23. **समरांगण-सूत्रधार (II. ग. 11)**
स्थापत्य तथा नगर नियोजन विषय एक शास्त्रीय ग्रंथ;
काम पी.पी. आपटे तथा सी.वी. काँड को सौंपा गया।

24. **अजितागम (III-30)**
शैव सिद्धान्त सम्प्रदाय का प्रामाणिक ग्रंथ;
काम एन.आर. भट्ट तथा पी.एस. फिलियोजा को सौंपा गया।

25. **बलरामभारतम् (II. ख. 3)**
केरल से नाट्य प्रस्तुति विषयक एक उत्तर मध्ययुगीन ग्रंथ;
काम सुधा गोपालकृष्ण को सौंपा गया।

कार्यक्रम ग: कला समालोचन

(कलाओं के समालोचनात्मक मूल्यांकन पर आधुनिक आलेख/रचनायें)

कलाकोश प्रभाग के तीसरे कार्यक्रम के अन्तर्गत द्वितीय श्रेणी की सामग्री तथा समालोचनात्मक पाण्डित्य के विश्लेषण पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। कलासमालोचन ग्रंथमाला के अन्तर्गत, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, कला, संस्कृति तथा ऐसे संबंद्ध विषयों पर आधुनिक कृतियां प्रकाशित करता है जिनमें मौलिक अनुसंधान, नए निर्वचन, समालोचनात्मक मूल्यांकन पर नए कार्य किए गए हों। इस ग्रंथमाला में उन प्रख्यात लेखकों के पुराने आलेखों को यथासंभव संशोधनों के साथ प्रकाशित किया जाता है जिनकी पथप्रदर्शक कृतियां आज भी प्रासंगिक एवं उपादेय हों। इस उद्देश्य से कलासमालोचन शृंखला के अन्तर्गत ए.के. कुमारस्वामी, पॉल मूस, ओल्डनबर्ग तथा कुछ अन्य विद्वानों की समालोचनात्मक रचनाओं तथा कृतियों के पुन:प्रकाशन का कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है। कृतियों के चयन का आधार उनका अन्तर-सांस्कृतिक बोध तथा विविधविद्यापरक दृष्टिकोण है।

इस योजना के अन्तर्गत कार्य 1988 में दो एक पुस्तकों के प्रकाशन के साथ प्रारंभ हुआ और मार्च, 1995 तक तेरह (13) पुस्तकें प्रकाशित की गई जिनमें कुछ आधारभूत ग्रंथों का पुनर्मुद्रण शामिल था।

वर्ष 1995-96 के दौरान निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित की गईं;

1. **इंडियन टेम्पल आर्किटेक्चर : फार्म एण्ड ट्रांसफॉमेशन,** : लेखक : आदम हार्डी
इस ग्रंथ में भारत में देवालय निर्माण की समृद्धतम परम्पराओं में से एक परम्परा का विस्तार से विवेचन किया गया है जो सातवीं शताब्दी में उस क्षेत्र में अस्तित्त्व में आई जहां अब कर्नाटक राज्य स्थित है और तेरहवीं शताब्दी तक अक्षुण्ण रही।

2. **स्तूप एण्ड इट्स टेक्नोलॉजी : ए. तिबेटोबुद्धिस्ट पर्सपेक्टिव,** : लेखक : पेमा दोरजी
यह प्रबंध ग्रंथ यह दर्शाता है कि तिब्बत, बौद्ध संस्कृति तथा साहित्य का खजाना कैसे बना। साथ ही इसमें स्तूप स्थापत्य विषयक महत्त्वपूर्ण ग्रंथों पर प्रकाश डाला गया है। ऊपरी सिंधु घाटी में लद्दाख के लेह क्षेत्र में मिले स्तूपों के सर्वेक्षण से पता चलता है कि उनमें तथा तिब्बती-बौद्ध परम्परा में समानता दिखाई देती है।

3. **इंडियन आर्ट एण्ड कॉनिसरशिप,** : सम्पादक : जॉन गुई
इसमें उन 25 निबंधों का संग्रह है जो ब्रिटिश म्यूजियम में भारतीय कला के भूतपूर्व कीपर डूगलस बैरेट द्वारा भारतीय कला के अध्ययन में किए गए योगदान को उजागर करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों द्वारा लिखे गए थे। ये लेख पांच भागों में विभाजित किए गए हैं :–प्रारंभिक भारत; उत्तर भारतीय मूर्तिकला, दक्षिण भारतीय मूर्तिकला, भारतीय चित्रकला और इस्लामिक कला।

4. **ऐस्थेटिक्स एण्ड मोटिवेशन्स इन आर्ट्स एण्ड साइन्स** : सम्पादक : के.सी. गुप्त
यह पुस्तक उन १२ शोधपत्रों का संग्रह है जो नोबेल पुरस्कार विजेता एस. चन्द्रशेखर की कृति "ट्रूथ एण्ड ब्यूटी : ऐस्थेटिक्स एण्ड मोटिवेशन्स इन साइन्स" पर आधारित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए थे। ये शोधपत्र कलाओं, ललित कलाओं और विज्ञानों के विशेषज्ञों द्वारा अपने-अपने विशेषज्ञता के क्षेत्र में सृजनात्मकता, सौन्दर्य एवं सत्य विषयों पर विवेचन करते हुए लिखे गए हैं।

इसके अतिरिक्त, निम्नलिखित चार अन्य ग्रंथ प्रकाशन की अंतिम अवस्थाओं में हैं :

1. **कॉन्सेप्ट्स ऑफ टाइम : एन्शंट एण्ड मॉडर्न,**
सम्पादक : कपिला वात्स्यायन

2. **बाराबुदुर**
लेखक : पॉल मूस,
अनुवादक : ए. डब्ल्यू. मैकडोनाल्ड

3. **आर्ट एक्सपीरिएंस**
लेखक : एम. हिरियन्ना,

4. **सिलेक्टेड, राइटिंग्स ऑफ प्रो० जी.डी. सॉन्थीमर,** खण्ड 1;
सम्पादक : ऐन. फेल्डहौस, एच. ब्रूकनर और आदित्य मलिक

बहुत से अन्य खंड जिनकी सूची नीचे दी गई है, तैयारी की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में हैं :

1. **दि सिटी एण्ड दि स्टार्स : कॉस्मिक अर्बन ज्योमेट्रीज,**
सम्पादक : जो.एम. मेलविले तथा ललित एम. गुजराल,

2. **सिलेक्टेड राइटिंग्स ऑफ प्रो० जी.डी. सॉन्थीमर,** खंड 2,
सम्पादक : ऐन., फेल्डहौस, एच. ब्रूकनर, और आदित्य मलिक,

3. **यक्षगान ;**
लेखक : के.एस. कारन्त,

4. **आइकॉनॉर्गाफी ऑफ दि बुद्धिस्त स्कल्पचर ऑफ ऑरीसा,**
लेखक : थॉमस डॉनाल्डसन,

5. **आई.जी.एन.सी.ए. : कॉन्सेप्ट्स एण्ड दि पब्लिकेशन्स**

आनन्द के. कुमारस्वामी की कृत्तियों का संग्रह

इस लम्बे चलने वाले कार्यक्रम के अन्तर्गत आनन्द केंटिश कुमारस्वामी की सभी कृतियों को विषयानुसार सुव्यवस्थित रूप में लेखक के प्रामाणिक संशोधनों के साथ लगभग 30 खंडों में प्रकाशित किया जाना है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत मार्च, 1995 तक आठ पुस्तकें प्रकाशित कर दी गई थीं।

वर्ष 1995-96 के दौरान निम्नलिखित दो खंड प्रकाशित किए गए हैं :

1. **दि ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ नेचर इन आर्ट** : सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
इस खंड में, कुमारस्वामी ने मध्ययुगीन यूरोप तथा एशिया विशेषत: भारत की कला के पीछे जो सिद्धान्त है उसकी व्याख्या करने का प्रयास किया है। उन्होंने भारतीय सिद्धान्त के साथ-साथ चीन के सिद्धान्त का भी विवेचन किया है।

2. **एसेज इन आर्किटेक्चरल थ्यौरी** : सम्पादक : मिकाइल डब्ल्यू. माइस्तर
इस खंड के छह निबन्ध विशुद्ध रूप से कार्य तथा रूप के स्तर पर आगे चलते हैं और उनका महत्त्व यह है कि उनमें कुमारस्वामी ने संकल्पनाओं के स्तर या परम्परा में उनके पूर्वरूप का न केवल निर्मित पत्थर में अपितु वैदिक कर्मकाण्ड तथा प्रारंभिक संस्कृत एवं पालि साहित्य में उपलब्ध पूर्ववृत्तों में भी पता लगाया है।

कुछ अन्य खंड जो मुद्रण के लिए शीघ्र ही भेज दिए जायेंगे, उनमें शामिल हैं :

1. **वाट इज स्वदेशी,**
सम्पादक : कपिला वात्स्यायन तथा ललित एम. गुजराल,

2. **एसेज ऑन ज्योलॉजी,**
सम्पादक : ए. रंगनाथन;

3. **ए.के. सीज़ बिब्लियोग्राफी,**
संकलनकर्ता एवं सम्पादक : जेम्स क्राउच;

4. **हिन्दूइज्म एण्ड बुद्धिज्म,**
सम्पादक : के.एन. अय्यंगर;

5. **एसेज ऑन जैन पेंटिंग्स;**
सम्पादक : रिचर्ड जे. कोहेन,

6. **एसेज ऑन वेदान्त,**
सम्पादक : वी. एन. मिश्र।

निम्नलिखित सूची में दिए गए अन्य कई खंडों से संबंधित कार्य तैयारी की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में चल रहा है :

1. **दि आर्ट्स एण्ड क्राफ्टस ऑफ इंडिया एण्ड सीलोन,**
2. **एसेज ऑन एजुकेशन,**
3. **बुद्धिस्त एसेज,**
4. **मिरर ऑफ जेसचर।**

भावी कार्यक्रम

कलासमालोचन प्रकाशन की ग्रंथमाला के दूसरे चरण में आधुनिक भारतीय भाषाओं के भारतीय साहित्यकारों जैसे डॉ. वासुदेवश शरण अग्रवाल तथा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की कृतियों को शामिल करने का प्रस्ताव है।

कार्यक्रम घ : कला विश्वकोश

(अब नया शीर्षक भारतीय कलाओं के रूपक)

(1) कला विश्वकोश

कलाओं के विश्वकोश की परियोजना, जिसे अब उसके परिवर्तित रूप में "भारतीय कलाओं के रूपक'' कहा जाता है, पर काफी समय से विचार-विमर्श होता रहा है। इस विश्वकोश की रूपरेखा तैयार करने के लिए पिछले तीन वर्षों में कई कार्यशालायें, विशेषज्ञ बैठकें तथा संगोष्ठियां आयोजित की गईं।

इस विचार-विमर्श के फलस्वरूप इस बात पर सभी सहमत थे कि परम्परागत शैली का विश्वकोश तैयार करने की बजाय, भारतीय कलाओं के रूपकों तथा मूलभावों पर एक सात-खंडीय स्रोत ग्रंथ तैयार करना अधिक उपयोगी होगा। इनमें बीजात्म रूपक तथा मूलभाव शामिल किए जाएंगे, जैसे–*बीज, वृक्ष, स्तम्भ, पुरुष, बिन्दु, शून्य, सूर्य,* आदि। इस विषय पर पहले से लिखे गए लेखों का पता लगाने, उन्हें चुनने और उनकी सूची बनाने के लिए एक शोध अध्येता नियुक्त किया गया था। इस अध्येता ने पहली सूची बना ली है और उसकी जांच की जा रही है।

इस कार्य का श्रीगणेश करने के लिए एक सक्षम विद्वान/अध्येता का चुनाव कर लिया गया है और परियोजना सम्पन्न करने के लिए अपनाई जाने वाली कार्यविधियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

भारतीय देवालय स्थापत्य विश्वकोश

दक्षिण भारत-ऊपरी द्रविड देश से संबंधित ग्रंथ "एनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन टेम्पल आर्किटेक्चर'' प्रकाशित किया जा चुका है। इसमें ईस्वी सन् 973 से 1326 तक की स्थापत्य कला का विवेचन है। इसे अमेरिकन इंस्टिट्यूट ऑफ इण्डियन स्टडीज़ के सहयोग से एम.ए. ढाकी ने सम्पादित किया है।

(ii) भारत की मुद्रा टंकण कलाएं

भारत की मुद्रा टंकण कलाओं की परियोजना कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रो० बी.एन. मुखर्जी को सौंपी गई है। उन्होंने लगभग 90,000 सिक्कों का अध्ययन तथा प्रलेखन किया है और अन्ततः उनमें से 1800 सिक्कों को कला नमूनों के रूप में चुना है। आलोच्य अवधि में, यह परियोजना समाप्त हो चुकी है और उसकी उपलब्धि के रूप में एक विस्तृत रिपोर्ट तथा प्रकाशनीय प्रबन्ध कृति तैयार की जा चुकी है।

नेपाली देवालय नृत्य तथा रंगमंचीय रूपों का अध्ययन

प्रलेखन की यह परियोजना बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रो० के.डी. त्रिपाठी को सौंपी गई है और उन्हें इस परियोजना के लिए अवैतनिक निदेशक नियुक्त किया गया है। वर्ष 1995-96 में, काठमांडू के प्रसिद्ध इन्द्रयात्रा महोत्सव का प्रलेखन कार्य सम्पन्न किया गया है। अवैतनिक निदेशक द्वारा इस संबंध में एक ब्यौरेवार अकादमिक रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

कार्यशालायें

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने पाण्डुलिपि और लिपि-विज्ञान पर पुणे विद्यापीठ के संस्कृत तथा प्राकृत-विज्ञान विभाग के सहयोग से 5 से 24 जून, 1995 तक एक कार्यशाला का आयोजन किया।

इस कार्यशाला का उद्देश्य युवा संस्कृत अध्येताओं को पाण्डुलिपि सामग्री से समालोचनात्मक संस्करण तैयार करने के लिए उपयोग करने की विधि सिखाना था। देश के भिन्न-भिन्न भागों से आए तेईस (23) युवा संस्कृत अध्येताओं/विद्वानों ने कार्यशाला में भाग लिया। पांच विशेषज्ञों ने अपने भाषण में विषय के विभिन्न पक्षों पर चर्चा करते हुए, नन्दि नागरी, गौडी, ग्रंथ तथा शारदा लिपियों का ज्ञान कराया।

व्याख्यान एवं चर्चाएं

अर्थविज्ञान तथा भाषा दर्शन विषयक शास्त्रीय ग्रंथ "वाक्यपदीय" पर व्याख्यान एवं चर्चाओं की शृंखला आयोजित करने के लिए वाराणसी कार्यालय में एक कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है। इस शृंखला के अन्तर्गत वित्तीय वर्ष के अंत तक कुल तीन चर्चा बैठकें आयोजित की जा चुकी हैं। इन चर्चाओं में स्थानीय परम्परागत लब्धप्रतिष्ठ पण्डितों एवं नई पीढ़ी के शोधकर्ताओं ने भाग लिया।

जनपद-सम्पदा

क्षेत्रीय संस्कृतियों के संबंध में जीवन शैली अध्ययन तथा अनुसधान करने वाला प्रभाग

जनपद सम्पदा प्रभाग कलाकोश प्रभाग के कार्यक्रमों के पूरक के रूप में कार्य करता है। इसका ध्यान शास्त्र के बजाय लघुस्तरीय समाजों की समृद्ध और विविध रूप-रंगों में उपलब्ध धरोहर की कलात्मक अभिव्यक्तियों पर केन्द्रित रहता है। विकीर्ण एवं मुख्य सांस्कृतिक आन्दोलनों में प्रत्यक्ष एवं गौणरूप से परिवर्तित होते हुए, निरन्तरता और परिवर्तनशीलता की गत्यात्मकता ने जड़ीभूत एवं सापेक्षिक रूप से अधिक कठोरता से संहिताबद्ध परम्पराओं को जिन्हें शास्त्रीय कहा जाता है, पुनर्नवीकरण के लिए प्रोत्साहन दिया है। जनपद सम्पदा प्रभाग के अनुसंधान कार्यकलापों का उद्देश्य इन कलाओं को उनके अधिक सांस्कृतिक, सामाजिक-आर्थिक संदर्भों में पुनः स्थापित करना है। दैनन्दिन जीवन से जुड़े लोकप्रिय भारतीय शब्द, जैसे "जन," "लोक", "देश", "लौकिक", "मौखिक" कार्यक्रम तैयार करने के मामले में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं।

इस प्रभाग के कार्यक्रमों का विभाजन इस प्रकार है:-

(क) **मानव जाति वर्णनात्मक संग्रह** : इन संग्रहों में मूल, अनुकृतियां तथा रिप्रोग्राफिक प्रतिलिपियां बुनियादी स्रोत सामग्री के रूप में एकत्र की जाती हैं।

(ख) **बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां तथा गतिविधियां** : इन कार्यक्रमों के अन्तर्गत दो दीर्घाओं की स्थापना की जा रही है : (1) आदि दृश्य, जिसमें भारत तथा संगीतेतर ध्वनि की अभिव्यक्ति होगी। दूसरे शब्दों में, दृष्टि तथा ध्वनि की ज्ञानेन्द्रियों आंख एवं कान से संबंधित आधारभूत संकल्पनायें प्रस्तुत की जायेंगी।

(ग) **जीवन शैली अध्ययन** : ये कार्यक्रम आगे लोक परम्परा और (2) क्षेत्र सम्पदा नामक दो भागों में बंटे हैं। लोक परम्परा के अन्तर्गत, भारत के भिन्न-भिन्न आर्थिक क्षेत्रों में मनुष्य की जीवन शैलियों का अध्ययन किया जाता है। क्षेत्र सम्पदा के अन्तर्गत विशेष स्थानों पर मंदिर परिसरों के ऐसे अध्ययन की कल्पना की गई है जिसमें उनके भक्ति विषयक, कलात्मक, भौगोलिक और समाजिक पक्षों को परस्पर जोड़ने वाली प्रक्रिया को भी ध्यान में रखा जाता है।

(घ) **बाल जगत** : इस अनुभाग के कार्यक्रमों का उद्देश्य बच्चों को जनजातीय तथा लोक संस्कृतियों की समृद्ध परम्परा तथा तत्संबंधी वास्तविकताओं से उनके घरेलू तथा स्कूली वातावरण के माध्यम से परिचित कराना है, जिनसे वे अब तक अछूते रहे हैं।

वर्ष 1995 - 96 में जनपद सम्पदा विभाग के द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों में की गई प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया गया है :

कार्यक्रम क : मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह

इस कार्यक्रम की स्थूल रूपरेखा को ध्यान में रखते हुए, वर्ष 1995 - 96 के दौरान निम्नलिखित सामग्रियां प्राप्त की गई:

(i) महाराष्ट्र की कोकना जनजाति के सत्रह मुखौटे;

(ii) अरुणाचल प्रदेश से चालीस मानव जाति वर्णनात्मक वस्तुयें जिनमें जनजातीय वस्त्र मुखौटे और दुर्लभ जनजातीय परिधान शामिल हैं;

(iii) मेक्सिको से चौबीस मुखौटे;

(iv) रास नृत्य के लिए मणिपुरी औपचारिक लोक परिधान;

(v) श्री नीलुत्पल मजूमदार द्वारा निर्मित वीडियो फिल्म, "एकताल ऑफ मेटल एण्ड क्ले" धातु तथा मिट्टी का एकताल;

(vi) फिल्में: आर. शरत द्वारा निर्देशित वीडियो फिल्म "टेम्पल म्यूजिकल इन्स्ट्रुमेंट्स ऑफ केरल" केरल के देवस्थानीय संगीत वाद्य।

"मणिपुर एप्लीक वर्क'' गोटा-पट्ठा काम विषय पर एक कार्यशाला इम्फाल में मणिपुर राज्य संग्रहालय के सहयोग से आयोजित की गई।

कार्यक्रम ख : बहु-माध्यमिक प्रस्तुतियां

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित प्रस्तुतियों तथा गतिविधियों का उद्देश्य हजारों वर्षों के दौरान भारतीय समाज द्वारा प्रस्तुत की गई कला सामग्री से जनता को अवगत कराना है। इस योजना का मुख्य कार्यक्रम (1) आदि दृश्य तथा (2) आदि श्रव्य नाम की दो दीर्घाओं का निर्माण करना है। शैलकला संबंधी अनुसंधान आदि दृश्य दीर्घा का महत्त्वपूर्ण अंग है। नाद की आद्य अनुभूति, संगीत वाद्यों का विवेचन आदि श्रव्य का प्रमुख कार्य है। वर्ष 1995-96 के दौरान निम्नलिखित गतिविधियाँ सम्पन्न की गईं।

आदि दृश्य

झीरी (भोपाल) में भारत-फ्रांस शैलकला परियोजना के दूसरे चरण का कार्य प्रारंभ किया गया। इसका क्षेत्रगत कार्य प्रो० माइकेल लौरब्लांश के नेतृत्व में फ्रांसीसी दल की सहायता से 30 जनवरी 1996 को पूरा किया गया। परियोजना के पहले चरण का कार्य 8 दिसम्बर, 1993 को प्रारंभ किया गया और वर्ष 1993 - 94 में झीरी खुदाई स्थल से प्राप्त सभी वस्तुओं को प्राप्ति रजिस्टर में दर्ज करने, चिह्नित करने तथा उनके सूचक कार्ड बनाने का कार्य पूरा किया गया। खुदाई में प्राप्त वस्तुओं कें मूल्यांकन ने झीरी को भारत के सबसे महत्त्वपूर्ण शैल स्थलों की कोटि में ला दिया।

यूनेस्को के सहभागिता कार्यक्रम के अन्तर्गत शैल-कला संरक्षण, परीक्षण तथा अनुरक्षण के विषय पर विशेषज्ञों की एक बैठक 1 से 3 फरवरी, 1996 तक हुई। इस बैठक में भारतीय विशेषज्ञों के अलावा प्रो० माइकेल लौरब्लांश तथा उनके फ्रांसीसी दल और इंडोनेशिया के डॉ. नोएरहार्डी मंगेतसारी ने भाग लिया।

प्रकाशन

"राक आर्ट ऑफ कुमाऊं हिमालय" कुमाऊं हिमालय की शैल-कला नामक प्रबन्ध ग्रंथ प्रकाशित किया गया।

आदि श्रव्य

वर्ष के दौरान, तमिलनाडु, कर्नाटक तथा मध्य प्रदेश के जनजातीय गीतों के साठ ऑडियो-टेप स्विट्जरलैंड के एक वरिष्ठ संजातीय संगीतशास्त्री प्रो० वुल्फगैंग लाड से प्राप्त किए गए।

संथाल ग्राम के ध्वनिदृश्य तथा जनजातीय संगीत की सीडी बनाने के कार्य की समीक्षा करने के लिए डॉ. पीटर पैनके तथा डॉ. आन्द्रे बोसार्ड के साथ एक बैठक हुई।

कार्यक्रम ग : जीवन शैली अध्ययन

(लोक परम्परा)

अब तक लोक परम्पराओं और उनसे संबंधित संस्कृतियों पर जो भी अनुसंधान/अध्ययन हुआ है वह सब अधिकतर एक ही दिशा में और एकांगी ही हुआ है, चाहे वह मानवशास्त्रीय दृष्टि से किया गया हो अथवा समाज विज्ञान, अर्थशास्त्र, सामाजिक, राजनीतिक-इतिहास या कला इतिहास की दृष्टि से। इन विषयों ने जीवन अनुभव के कुछ अंगों या कुछ आयामों का ही ध्यान रखा है, जीवन अनुभव की सम्पूर्णता का नहीं। जनपद सम्पदा प्रभाग एक नया दृष्टिकोण, एक नई पद्धति अपनाना चाहता है, और वर्तमान पद्धतियों की जाँच करके जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक मॉडल तैयार करने का प्रयास कर रहा

है। यह दृष्टिकोण इस धारणा पर आधारित है कि जीवन अलग-अलग आयामों या इकाइयों में बंटा हुआ नहीं है और न ही कोई एक मॉडल किसी समुदाय के सांस्कृतिक जीवन की संपूर्ण झांकी प्रस्तुत कर सकता है। यह दृष्टिकोण संस्कृति को एक सीमांकित स्थान से बहु-आयामी प्रणाली मानता है।

इन अध्ययनों का उद्देश्य प्राकृतिक परिवेश, दैनिक जनजीवन, वार्षिक पंचांग तथा जीवन चक्र, विश्व दृष्टिकोण, ब्रह्मांड विज्ञान, खेती तथा अन्य आर्थिक कार्य, सामाजिक संरचना, ज्ञान व कौशल, पारंपरिक प्रौद्योगिकी और कला अभिव्यक्तियों के बीच कई प्रकार के संबंध जोड़ना है। ये अध्ययन स्वरूप में बहुविषयक हैं और कलाओं के क्षेत्र में कौशलों और तकनीकों के अन्योन्याश्रय, भिन्न-भिन्न क्षेत्रें पर एक दूसरे के असर और जनजातीय, ग्रामीण तथा शहरी परम्पराओं, मौखिक या लिखित के पारस्परिक प्रभाव को प्रकट करते हैं।

उपर्युक्त लक्ष्यों को सामने रखकर और बहुविषयक रीति अपनाते हुए कई प्रायोजित परियोजनायें प्रारंभ की गई हैं। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विद्वान देश की विभिन्न संस्थाओं से लिए गए बहुविषयक अध्ययन दलों के साथ सहयोग एवं समन्वय स्थापित कर रहे हैं। उन लोगों के साथ एक सार्थक संवाद स्थापित किया गया है जो जातीय वनस्पति विज्ञान, जातीय इतिहास, हिमालय परिशीलन, मौखिक परम्पराओं के क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं।

उपर्युक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, लोक परम्पराओं की प्रायोगिक परियोजनाओं के कार्यक्रम ने वर्ष के दौरान प्रगति की है, जिसका ब्यौरा नीचे दिया गया है:-

बाह्य परियोजनाएं

निम्नलिखित बाह्य परियोजनायें, जो वर्ष 1994 - 95 में प्रारंभ की गई थीं, इस वर्ष पूरी की गई :

(i) "संथालों द्वारा बांस उत्पादन: संथाल परगना जिले के जातीय वनस्पति विज्ञान का वस्तुस्थिति अध्ययन" अरुण कुमार द्वारा;

(ii) "ब्रज के लोक कथा साहित्य में बीज और धरती" डॉ. राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी द्वारा:

(iii) "पाफन" : श्री निगोमबाम मणिजाओ द्वारा।

वर्ष 1995 - 96 में छह नई बाह्य परियोजनाएं हाथ में ली गईं :

(i) "मानव ध्वनियों का तुलनात्मक अध्ययन एवं प्रलेखन" डॉ. ओंकार प्रसाद द्वारा;

(ii) "शरीर तथा बीज, ठाणे जिले के वोरलियो के विशिष्ट संदर्भ में" डॉ. अजय दाण्डेकर द्वारा;

(iii) "मूलभूत ध्वनियाँ : संथालों के ध्वनि प्रतीकवाद का अध्ययन," डॉ. खगेश्वर महापात्र द्वारा;

(iv) "जादुपाटा और उसके गीतों के बीच परस्पर क्रिया" कु० नीलांजना दास साहा द्वारा;

(v) "मयूरभंज जिले में संथाल लिपि तथा साहित्य" डॉ. श्याम सुन्दर महापात्र द्वारा;

(vi) "चावल और केला : जनजातीय कर्मकाण्ड के संदर्भ में एक अध्ययन" डॉ. एस. के. चक्रवर्ती द्वारा आन्तरिक परियोजनायें

निम्नलिखित आंतरिक परियोजनाओं के विषय में, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अनुसंधान अध्येताओं द्वारा क्षेत्रगत रिपोर्टें प्रस्तुत की गईं:-

(i) "राजस्थान में बाजरा उगाने वाले एक गांव की लोक परम्परा", डॉ. रामाकर पंत द्वारा;

(ii) "गद्दी लोगों की संस्कृति में दिक् और काल", डॉ. मौलि कौशल द्वारा।

संगोष्ठी

दिवंगत श्रीमती इन्दिरा गांधी के बलिदान दिवस की 10वीं वर्षगांठ पर, अरुणाचल विश्वविद्यालय के सहयोग से, अरुणाचल प्रदेश के इटानगर में 19 से 21 नवम्बर, 1995 तक "अनादि" नाम से पूर्वोत्तर भारत की कालातीत जनजातीय कला विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। मणिपुर, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश तथा असम के जनजातीय विद्वानों तथा कलाकारों ने इस आयोजन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। वरिष्ठ मानव वैज्ञानिकों तथा लोक साहित्यविदों सहित गैर-जनजातीय विद्वान अधिकांशत: लाभान्वित होने वालों में थे।

सर्वप्रथम उस पवित्र स्थल पर पुष्पांजलियाँ अर्पित की गई जहां 1984 में अरुणाचल विश्वविद्यालय के उद्घाटन के अवसर पर पधारीं श्रीमती गांधी ने "रुद्राक्ष" का पौधा लगाया था।

इस अवसर पर अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल मुख्य अतिथि थे। अरुणाचल प्रदेश के मुख्य मंत्री भी उपस्थित थे। डॉ. कपिला वात्स्यायन ने अध्यक्षीय भाषण दिया। डॉ. वात्स्यायन ने कहा कि जनजातीय लोगों के मुख से उनकी अपनी संस्कृति तथा परम्परा के विषय में उनके विचार जानना ही हमारा उद्देश्य होना चाहिए। जनजातीय कला तथा संस्कृति के परिरक्षण को प्रोत्साहन मिलता है और अनुसंधान के स्वदेशी स्वरूप विकसित करने में सहायता मिलती है। दक्षिण पूर्व एशियाई कला का एक केन्द्र खोलने के लिए भी सुझाव प्राप्त हुआ। इसी अवसर पर इटानगर स्थित जवाहरलाल नेहरू संग्रहालय में एक जनजातीय कला प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया गया।

प्रकाशन

लोक परम्परा परियोजना के अन्तर्गत, जनपद सम्पदा प्रभाग ने वर्ष 1995 - 96 में निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित कीं :-

(i) *कॉम्प्यूटराइजिंग कल्चर्स, सम्पादक :* वैद्यनाथ सरस्वती, प्राक्कथन: कपिला वात्स्यायन;

(ii) *कॉसकल्चरल लाइफस्टाइल स्टडीज़, सम्पादक :* वैद्यनाथ सरस्वती, प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन;

(iii) *दि रिच्युअल आर्ट ऑफ तैय्यम एण्ड भूताराधना :* लेखक : सीता के. नम्बियार, प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन;

(iv) *गिफ्ट्स ऑफ अर्थ* : लेखक : स्टीफन पी. हुयलर, प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन;

(v) *बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति का इतिहास (हिन्दी में) :* लेखक नर्मदा प्रसाद गुप्त, प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन;

(vi) *"विहङ्गम,* इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का न्यूजलेटर खण्ड - 2 सं० 3, खण्ड-2, सं० 4

क्षेत्र सम्पदा प्रादेशिक धरोहर

कतिपय प्रदेश/क्षेत्र समय के साथ-साथ सांस्कृतिक केन्द्रों के रूप में विकसित होते गए हैं और उनके आकर्षित होकर संसार के सभी भागों से लोग वहां आते रहे हैं। वे आवागमन के मुख्य केन्द्र रहे हैं। वहां लाने और ले जाने वाली दोनों तरह

की शक्तियां काम करती रही हैं और उन्होंने केन्द्र स्थान का काम किया है, स्थान की व्यवस्था करने के साथ-साथ उन्होंने गतिशीलता और पारस्परिक क्रिया व प्रभाग को प्रेरित किया है। अक्सर कोई मंदिर या मस्जिद यहां का भौतिक या भावात्मक आकर्षण रहा है। अब तक ऐसे केन्द्रों का अध्ययन, काल निर्णय, इतिहास, धर्म या अर्थशास्त्र जैसे किसी एक विषय तक ही सीमित या एकांगी रहा है, सर्वसम्पूर्ण नहीं, जिससे सृजनात्मक कलाओं के क्षेत्र में बहुविध कार्यकलाप संचालित होते हैं। इसलिए क्षेत्र सम्पदा प्रभाग के अन्तर्गत किसी स्थान विशेष या मंदिर और उसकी "इकाइयों" के अध्ययन की ही कल्पना नहीं की गई बल्कि एक केन्द्र विशेष के भक्ति विषयक, कलात्मक, भौगोलिक या सामाजिक पक्षों को परस्पर जोड़ने की प्रक्रिया को भी कार्यक्रम में शामिल किया गया है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने दो ऐसे केन्द्रों को अध्ययन के लिए चुना है जिसके नाम हैं: व्रज और बृहदीश्वर।

1. व्रज

यह परियोजना वृंदावन के श्री चैतन्य प्रेम संस्थान के श्री श्रीवत्स गोस्वामी के सहयोग से कार्यान्वित की जा रही है। इसमें सात मॉड्यूल हैं : (1) बहुभाषी ग्रंथसूची (2) भौगोलिक प्राचल पैरामीटर तथा अर्थ, (3) स्थापत्य तथा पुरातत्त्वीय पक्ष ऐतिहासिक विश्लेषण सहित, (4) मंदिर एक जीवन्त अस्तित्व के रूप में, (5) मौखिक परम्पराओं का प्रलेखन, (6) व्रज में मंदिर संरचना का आर्थिक सामाजिक स्वरूप, और (7) कला, संगीत, नृत्य, तथा पाक प्रणाली।

इन योजनाओं में से निम्नलिखित में हुई प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है:

बहुभाषी ग्रंथ-सूची

एक कैटलॉग बनाने के लिए ग्रंथसूची की तीन हजार (3000) प्रविष्टियां एक डिस्केट में दर्ज की गई हैं।

स्थापत्य-कलात्मक नक्शे

गोविन्द देव, हरिदेव, जगतशिरोमणि और जुगलकिशोर मंदिरों के सभी स्थापत्य कलात्मक नक्शे श्री चैतन्य प्रेस संस्थान के सहयोग से तैयार किए जा चुके हैं।

मौखिक परम्परा

मनमोहन और राधारमण मंदिरों का विवरण लिखने का काम पूरा किया जा चुका है।

बृहदीश्वर

तंजवुर में स्थित ग्यारहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध चोल मंदिर बृहदीश्वर का अध्ययन कार्य समन्वयकर्ता डॉ. आर. नागस्वामी के पर्यवेक्षण में 1989 में प्रारंभ किया गया था। इस कार्य में अच्छी प्रगति हो रही है और विभिन्न मॉड्यूल सम्पूर्णता की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में हैं।

बृहदीश्वर परियोजना के अन्तर्गत पिएर पिचार्ड लिखित "तंजवुर-बृहदीश्वर : एन आर्कटेक्चरल स्टडी" नामक एक सचित्र खण्ड प्रकाशित किया गया है।

वर्ष 1995 - 96 के दौरान परियोजना की प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है :

बहुभाषी ग्रंथसूची

बृहदीश्वर ग्रंथसूची के एक हजार (1000) पन्नों का सम्पादन किया गया।

प्रतिभा विज्ञान

प्रबन्ध ग्रंथ के लिए प्रारंभिक कार्य पूरा हो चुका है और अब उसका प्रारूप तैयार किया जा रहा है।

पुरालेख विद्या

प्रकाशित उत्कीर्ण लेखों का सूचक बनाने के कार्य के साथ मॉड्यूल प्रारंभ किया जा चुका है।

जीवन्त परम्परा

दैनन्दिन कर्मकाण्ड तथा महोत्सवों में "नादस्वरम" यानी कण्ठ्य तथा वाद्य दोनों प्रकार के संगीत का प्रलेखन का कार्य प्रारंभ किया जा चुका है।

बृहदीश्वर संगोष्ठी पत्र

संगोष्ठी संबंधी शोधपत्रों का सम्पादन पूरा हो चुका है। तमिल पारिभाषिक शब्दों तथा वाद-टिप्पणियों की जांच-पड़ताल का काम चल रहा है।

क्षेत्र सम्पदा की व्रज परियोजना के अन्तर्गत, निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं :

(i) गोविन्ददेव टेम्पल : ए, डायलॉग इन स्टोन : (गोविन्द देव मंदिर पर आयोजित संगोष्ठी के शोधपत्र) सम्पादक : मार्गरिट केस:

(ii) ईवनिंग ब्लॉम्स - टेम्पल ट्रेडिशन ऑफ सॉझी इन वृन्दावन: सम्पादक : असीम कृष्ण दास। प्रेमलता शर्मा द्वारा सम्पादित भक्तिरसामृत-सिन्धु का प्रकाशन।

ईसाई सांस्कृतिक धरोहर का प्रलेखन

केन्द्र ने केरल के ईसाइयों, विशेषत: सीरीयाई ईसाइयों की सांस्कृतिक धरोहर यानी उनके महत्त्वपूर्ण अभिलेखों, कला वस्तुओं पाण्डुलिपियों, उत्कीर्ण लेखों, भजनों, परम्पराओं आदि के प्रलेखन की एक योजना हाथ में ली है। प्रथम चरण के रूप में, सेंट अलबर्ट कॉलेज, एरणाकुलम (केरल) के अंग्रेजी विभाग के डॉ. जोस जॉर्ज ने सीरियाई प्राच्य चर्च सीरीयन ऑर्थोडॉक्स चर्च नामक एक प्रायोगिक परियोजना हाथ में ली है। उन्हें संदर्भीय प्रयोजनों के लिए केरल में भिन्न-भिन्न नामों वाले परम्परागत ईसाई सम्प्रदायों/पंथों से संबंधित पुरातत्त्वीय तथा मानव शास्त्रीय ब्यौरों के प्रलेखन और जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों यानी पेंशों में ईसाई धर्म पर स्वदेशी संस्कृति के प्रभाव के अध्ययन का काम सौंपा गया है।

कार्यक्रम घ : बाल जगत और गतिविधियाँ

इस कार्यक्रम का उद्देश्य पुतलियों, पहेलियों तथा खेलों जैसे विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से बच्चों को परम्परागत कलाओं की समृद्ध धरोहर से परिचित कराना है जो आमतौर पर स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल नहीं है।

पुत्तलिका कला

साहित्य की खोज एवं ग्रन्थसूची

विभिन्न स्रोतों से संकलित बहुभाषी प्रविष्टियों की जांच तथा उसे अद्यतन बनाने का काम जारी रहा।

पुत्तलिका थिएटर के प्रदर्शन तथा कार्यशालाएँ

पुत्तलिका पर एक 15 दिवसीय कार्यशाला सामान्य आश्रम, बिहार के सहयोग से गांधी स्मृति संस्था के भवन में लगाई गई। तदुपरान्त उसी मंडली ने बोधगया जिले में कई पुत्तलिका प्रदर्शन किए।

इसके बाद रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली के स्लम निवासी बालकों ने एक गैर-सरकारी संगठन "दिशा" के साथ मिलकर एक अन्य पुत्तलिका प्रदर्शन किया। गांधीजी के जीवन पर एक छाया पुत्तलिका प्रदर्शन धारवाड़ (कर्नाटक) में 18 अगस्त, 1995 को किया गया। इसमें कर्नाटक सरकार के कन्नड तथा संस्कृति विभाग ने सहयोग दिया। बाल नाटकों के माध्यम से गांधीजी के विचारों तथा जीवन मूल्यों के प्रति जागरुकता उत्पन्न करने के लिए केरल में रंगप्रभात बाल थिएटेर के सहयोग से 20 स्थानों पर कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने महात्मा गांधी के जीवन पर एक छाया पुत्तलिका प्रदर्शन, रावणछाया, आयोजित किया। यह कार्यक्रम गांधी संग्रहालय, नई दिल्ली में 2 अक्तूबर, 1995 को उड़ीसा के छाया पुत्तलिका कलाकारों की एक मंडली द्वारा प्रस्तुत किया गया। इसके बाद निम्नलिखित स्थानों पर तीन और प्रदर्शन किए गए :-

(1) जगन्नाथ मंदिर, हौजखास, नई दिल्ली में 3 अक्तूबर, 1995 को;

(2) दिल्ली हाट, आई. एन. ए. मार्केट के सामने, नई दिल्ली में 4 अक्तूबर, 1995 को; और

(3) जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में 5 अक्तूबर, 1995 को।

इनके अतिरिक्त, गांधी जी के ही जीवन पर आधारित "सत्य की प्रतिमायें" (इमेजज ऑफ ट्रूथ) नामक पुत्तलिका कार्यक्रम अक्तूबर, 1995 में इशारा पपेट ट्रूप के सहयोग से चंडीगढ़ में तथा बाल भवन, नई दिल्ली में प्रस्तुत किया गया।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा अपने बाल कार्यक्रमों के अन्तर्गत, गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति और केरल के रंगप्रभात बाल थिएटर के साथ मिलकर नई दिल्ली में 26 दिसम्बर, 1995 से 8 जनवरी, 1996 तक एक रचनात्मक नाट्यकला कार्यशाला तथा बाल नाट्य महोत्सव का आयोजन किया गया। रंगप्रभात थिएटर के बच्चों द्वारा प्रो० जी. शंकर पिल्लै, "लिखित नाटक "उम्मकी" इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परिसर में किया गया।

जापानी दल द्वारा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा दिल्ली की गैर सरकारी संस्था "दिशा" के सहयोग से 30 व 31 दिसम्बर, 1995 को पुत्तलिका पैनल थिएटर पर एक कार्यशाला चलाई गई। इसमें दिल्ली की झुग्गी झोंपड़ी स्लम बस्तियों के सामुदायिक कार्यकर्ताओं, युवकों तथा बच्चों ने भाग लिया।

कलादर्शन
प्रचार-प्रसार एवं प्रस्तुतिकरण प्रभाग

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संकल्पनात्मक योजना में, कलादर्शन की एक ऐसे प्रभाग के रूप में परिकल्पना की गई है जो जनपद सम्पदा प्रभाग का अनुपूरक हो और जो नानाविध कलाओं, संस्कृतियों, क्षेत्रों, समाज के स्तरों, देशों तथा महाद्वीपों के बीच जीवन्त संवाद के रूप में उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति तथा प्रस्तुतिकरण के लिए स्थान एवं मंच की सुविधायें उपलब्ध कराए। कलादर्शन प्रभाग के कार्यकलापों में शामिल हैं: (क) सामग्रियों का संग्रह: (ख) अन्तर विषयक कार्यक्रम: और (ग) विषय विशेष संबंधी कार्यक्रम।

अन्तर-विषयक कार्यक्रमों के अन्तर्गत, संगोष्ठियों, प्रदर्शनियों, प्रकाशन, प्रलेखन संबंधी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। अब तक पांच बड़े अन्तर-विषयक कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं, "खम्" 1986 में, "आकार" 1988 में, "काल" 1990 में, "प्रकृति" 1992 में और "ऋत: ऋतु" (ब्रह्मांड व्यवस्था तथा ऋतु चक्र) 1996 में।

कार्यक्रम क : संग्रह

विषय-विशेष से संबंधित जो अन्तर-विषयक कार्यक्रम आयोजित किए गए उनके फलस्वरूप अत्यन्त बहुमूल्य सामग्रियां इकट्ठी हुई। एक कालावधि में, पच्चीस (25) प्रदर्शनियां, आठ (8) संगोष्ठियां और दो सौ पैंसठ (265) भाषण विचार-विमर्श के कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन प्रदर्शनियों तथा कार्यक्रमों से संबंधित शोधकार्य के लिए काफी विस्तार से अकादमिक कार्य किया गया, जिसके फलस्वरूप काफी बड़ी मात्रा में संसाधन सामग्री तैयार हुई और विभिन्न प्रदर्शनियों में प्रदर्शित वस्तुओं के संग्रह से कलादर्शन संग्रहालय की श्रीवृद्धि हुई। यह समृद्ध संग्रह कलादर्शन प्रभाग का प्रमुख अवयव है। यह संग्रह आगे भी बढ़ता जाएगा और भावी कार्यक्रमों के लिए स्रोत सामग्री उपलब्ध कराएगा। बहुत सी संस्थाएं इस संग्रह में से अपेक्षित सामग्री कुछ समय के लिए उधार लेती रही हैं।

कार्यक्रम ख : संगोष्ठियां और प्रदर्शनियां

1. संगोष्ठियां

(I) ऋत: ब्रह्मांड व्यवस्था तथा अव्यवस्था विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

"ऋत" (ब्रह्मांड व्यवस्था तथा अव्यवस्था) विषय पर 18 से 22 दिसम्बर, 1995 तक एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी में बहु-विषयक दृष्टिकोण से भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में *ब्रह्मांड व्यवस्था तथा* अव्यवस्था के विषय को खोजने का प्रयास किया गया। शोधपत्र तथा विचार-विमर्श निम्नलिखित विषयों पर केन्द्रित रहे :

(i) विज्ञान तथा प्राचीन मीमांसात्मक चिन्तन;

(ii) सामाजिक तथा सांस्कृतिक आयाम; और

(iii) कला तथा सौन्दर्यशास्त्र

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति-प्राप्त इकत्तीस (31) विद्वानों ने, जिनमें चार (4) विदेशी वैज्ञानिक भी शामिल थे, इस संगोष्ठी में भाग लिया इनके अलावा, सोलह (16) प्रेक्षक भी उपस्थित हुए।

(II) "वाक्" विषय पर व्याख्यान-एवं संगोष्ठी

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने वाक् विषय पर 10 जनवरी से 12 जनवरी, 1996 तक अपने परिसर में एक संगोष्ठी आयोजित की। बार्सिलोना (स्पेन) के प्रो० रेमण्ड्स पणिक्कर इसमें मुख्य वक्ता थे। डॉ. कपिला वात्स्यायन ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा अन्य संस्थाओं के अनेक विद्वानों ने इसमें भाग लिया।

डॉ. पणिक्कर ने वाक् की संकल्पना तथा स्वरूप का विवेचन किया और अपने उन नौ सूत्रों की व्याख्या की जो वाक् अर्थात उच्चरित शब्द के स्वरूप को स्पष्ट करते हैं। उन्होंने बताया कि शब्द वक्ता, वाणी, श्रोता के कार्य-व्यापार को पूर्णता प्रदान करने वाला चतुर्थ पक्ष है और यह यूनानी भाषा के "लोगोस" शब्द का पर्याय है तथा भर्तृहरि की *वाक्यपदीय* के अनुसार "ब्रह्मन्" के समकक्ष है। उन्होंने कहा कि शब्द तथा पद (पारिभाषिक शब्द) अर्थ के भिन्न-भिन्न स्तरों/भावों को स्पष्ट करते हैं।

तीन दिन चली इस गोष्ठी में, समय, स्थान तथा इतिहास के संदर्भ में शब्द की प्रधानता का सूक्ष्म विश्लेषण किया गया। यह संगोष्ठी सचमुच मनुष्य की वाक्पटुता की प्रशस्ति सिद्ध हुई। इस जीवंत विषय पर भिन्न-भिन्न विषयों के विद्वानों ने विस्तारपूर्वक चर्चा की।

2. प्रदर्शनियां

(I) तीसरी आंख : प्रकृति अमूर्तत्त्व तथा उद्देश्य व्यवस्था :

1. श्री आश्विन मेहता द्वारा छायाचित्रों की प्रदर्शनी

गुजरात के विख्यात फोटोग्राफर श्री आश्विन मेहता द्वारा खींचे गए फोटोग्राफों की प्रदर्शनी "तीसरी आंख" इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के माटी-घर में सितम्बर-अक्टूबर, 1995 में लगाई गई। प्रकृति में अमूर्ततत्त्व तथा उद्देश्य का चित्रांकन करने वाले ये फोटोग्राफ कलाकार की उत्कृष्ट संवेदनशीलता तथा कल्पनाशीलता को अभिव्यक्त करते हैं। यह प्रदर्शनी 10 अक्तूबर, 1995 तक जनता के लिए खुली रही।

2. प्रतीक तथा आख्यान : समकालीन आस्ट्रेलियाई वस्त्र

कु० मार्गरिट ऐन्सकाउ द्वारा निर्मित समकालीन आस्ट्रेलियाई वस्त्रों की एक प्रदर्शनी "प्रतीक तथा आख्यान" नाम से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा आस्ट्रेलियाई उच्चायोग के सहयोग से केन्द्र के माटी-घर में 31 अक्तूबर, 1995 से 5 नवम्बर, 1995 तक लगाई गई। इसमें प्रस्तुत 42 वस्तुयें चार आस्ट्रेलियाई कलाकारों अर्थात कु० पमेला गॉन्ट, कु० मोइरा डॉरोपौलॉस, कु० होली स्टोरी तथा कु० रोजमैरी रूजुल्क की कृतियां थीं।

प्रदर्शनी का उद्घाटन दिनांक 30 अक्तूबर, 1995 को आस्ट्रेलियाई उच्चायोग के उप-उच्चायुक्त श्री राकेश आहूजा द्वारा किया गया। विद्वानों, कला-समालोचकों, पत्रकारों तथा आम जनता में इस प्रदर्शनी का अच्छा स्वागत हुआ।

3. फेमिनिन ऑफ गॉड

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने इतालवी दूतावास के सांस्कृतिक केन्द्र, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् तथा राष्ट्रीय नव-कला वीथि के सहयोग से, इटली की एक विख्यात फोटोग्राफर डॉ. सिबैस्टिना पापा द्वारा खीचें गए फोटोग्राफों की एक प्रदर्शनी "फेमिनिन ऑफ गॉड : एक चित्रकार का नारी विषयक चिंतन" नवम्बर, 1995 में लगाई। इस प्रदर्शनी में कुल मिलाकर छिहत्तर (76) श्वेत-श्याम छायाचित्र प्रस्तुत किए गए।

इस प्रदर्शनी का उद्घाटन इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी द्वारा 1 नवम्बर, 1995 को 5 बजे राष्ट्रीय नवकला वीथि के परिसर में किया गया। प्रदर्शनी 21 नवम्बर, 1995 तक जनता के लिए खुली रही।

काफी बड़ी संख्या में फोटोग्राफर, चित्रकार, पत्रकार तथा अन्य दर्शक इस प्रदर्शनी को देखने आए और उन्होंने फोटोग्राफर के कार्य की प्रशंसा की।

4. ऋत : ब्रह्मांड व्यवस्था तथा ऋतु-चक्र

"ऋत-ऋतु" नाम से आयोजित इस प्रदर्शनी का उद्घाटन 3 जनवरी, 1996 को डॉ. कर्ण सिंह ने किया, जो इस आयोजन के मुख्य अतिथि भी थे। उद्घाटन समारोह में डॉ. कर्णसिंह के उद्घाटन भाषण से पूर्व केन्द्र की अकादमिक निदेशक डॉ. कपिला वात्स्यायन ने इससे पहले आयोजित चार प्रदर्शनियों का विस्तृत सिंहावलोकन प्रस्तुत किया। इन चारों प्रदर्शनियों के डिजाइनरों को भी इस रचनात्मक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया जो उनकी अपनी-अपनी प्रदर्शनियों से संबंधित था। तदुपरान्त श्री बिरजू महाराज तथा उनकी मंडली द्वारा तालवाद्य संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

इसी दिन उद्घाटन से पहले अपराह्न में पत्रकारों के लिए प्रदर्शनी का पूर्वावलोकन प्रस्तुत किया गया। हिन्दुस्तान टाइम्स, नेशनल हिरल्ड और अन्य जाने-माने दैनिक समाचारपत्रें में प्रेस की ओर से इस प्रदर्शनी की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई और उसे अति-उत्तम प्रदर्शनी घोषित किया गया। दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों पर भी इस प्रदर्शनी की चर्चा की गई।

अनेक महानुभावों, विदेशी दर्शकों, विद्वानों, वास्तुविदों, कलाकारों तथा आम लोगों ने इस प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

प्रदर्शनी की अवधि को जनसाधारण के अवलोकनार्थ 30 मार्च, 1996 तक बढ़ाया गया। कुछ दर्शकों की विचार-टिप्पणियां नीचे दी गई हैं :-

अति उत्तम रीति से संकल्पित तथा निष्पादित — आर. सी. त्रिपाठी

एक और नया लयबद्ध अनुभव — लीला सेठ

दिक्कालमय सृष्टि में उस परम व्यवस्था के लम्बे मानवीय अनुभव तथा बोध की अति सशक्त अभिव्यक्ति: अति उत्तम प्रयास के लिए बधाइयां। — जे.ऐ. कल्याणकृष्णन

ब्रह्मांडीय नवीकरण तथा सामंजस्य के सातत्य का अति उत्तम चित्रण सभी धर्मों, क्षेत्रों एवं संस्कृतियों में चिन्तन की एकात्मकता को विशद रूप से स्पष्ट किया गया है। एक विलक्षण आनंदप्रद प्रदर्शनी, जिसने गागर में शाश्वतत्त्व का सागर भर दिया है। — एम. गोपालकृष्ण

शब्दों, चित्रकारियों तथा छायाचित्रों की सहायता से इस प्रदर्शनी ने जो ब्रह्मांड की सैर कराई वह वस्तुत: अनुपम एवं आनंददायक थी.... क्या हम अपने पूर्वजों के शाश्वतत्त्व को एक थोड़ी सी जगह में प्रस्तुत करने में सक्षम हैं ! — बी. पी. सिंह

अति उत्तम रीति से सुविचारित इस प्रदर्शनी की संकल्पना, विन्यास तथा अनुक्रम के लिए बधाइयां, इस प्रदर्शनी का अवलोकन सचमुच एक आनन्द एवं सुख की अनुभूति है। — शाहिद अली खान

एक पांचवी भव्य प्रदर्शनी। — कर्ण सिंह

एक गंभीर अनुभूति। एक ऐसी प्रदर्शनी जिसे बार-बार देखने और उसमें रमने को जी चाहे। जिन्होंने इसकी रूपरेखा बनाई और जिन्होंने इसे प्रस्तुत किया, सभी हमारे साभार धन्यवाद के पात्र हैं। — गोपी अरोड़ा

मुझे अपनी सांस थामनी पड़ी–मैं आश्चर्य चकित हो गया जब मुझे इस विराट, अजेय एवं पराभूत करने वाली व्यवस्था में अपनी असीम नगण्यता का आभास हुआ। — अमर नाथ सहगल

एक अत्यन्त रोचक प्रस्तुति। ऐसे पक्षों को उजागर करती है जहां तक मानव मन भी नहीं पहुंच सकता। एक अति उत्तम प्रयास। — पी. के. कौल

यह एक हृदयस्पर्शी अनुभव था-इतना मनमोहक कि जिसने आदमी की बुनियादी जड़ों को उसके उद्भव, विकास तथा जीवन चक्र और उसकी पुन: सृष्टि तक को छू दिया। यह सचमुच एक विलक्षण प्रयास था। — एन. के. सिंह

एक अद्भुत प्रदर्शनी जिसने हमें सोचने विचारने को प्रेरित किया, सुन्दर ढंग से लगाई गई। — मोंटेक सिंह अहलुवालिया

कार्यक्रम ग : स्मारकीय व्याख्यान

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मृति न्यास के सहयोग से, 19 अगस्त, 1995 को बारहवें आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारकीय व्याख्यान का आयोजन किया।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी एक बहु-पठित विद्वान और ज्ञान की दृष्टि से मानों एक चलते-फिरते विश्वकोश ही थे। संस्कृत, पालि, प्राकृत तथा हिन्दी जैसी अनेक भाषाओं पर उनका पूर्ण अधिकार था और उन्होंने उनके साहित्य का गहराई तक अवगाहन किया था। डॉ. द्विवेदी को ज्योतिष शास्त्र का शौक, प्राचीन भाषा संस्कृत के प्रति प्रेम और भारतीय धर्म तथा सांस्कृतिक परम्परा के रहस्यों के प्रति जिज्ञासु मस्तिष्क विरासत में मिला था।

इस वर्ष का व्याख्यान विख्यात उपन्यासकार श्री अमृतराय द्वारा हिन्दी में दिया गया और विषय था, "लेखक की प्रतिबद्धता एवं उसका संकट"। राज्य सभा के सदस्य डॉ. बिशंभरनाथ पाण्डे ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री अमृतराय तथा डॉ. बी. एन. पाण्डे दोनों ने दिवंगत आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को समुचित श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस स्मारक व्याख्यान समारोह में बड़ी संख्या में विद्वान, प्राध्यापक, राजनयिक, प्रेस प्रतिनिधि, पत्रकार तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र आदि उपस्थित थे।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने 22 तथा 23 जनवरी 1996 को नई दिल्ली में प्रो० निर्मल कुमार बोस स्मारक व्याख्यान का भी आयोजन किया।

डॉ. बोस एक स्वतंत्रता सेनानी, गांधी की विचारधारा के विचारक, कला इतिहासकार और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सुविख्यात मानव विज्ञानी थे, जिनका योगदान मानव विज्ञान के अलावा अन्य अनेक विषयों में भी उल्लेखनीय रहा है।

यह व्याख्यान डॉ. वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य द्वारा दो भागों में दिया गया। व्याख्यान के पहले भाग का विषय था - "बोस के पाण्डित्य पर गांधी जी के विद्रोह का प्रभाव" और दूसरे भाग का विषय था-रवीन्द्रनाथ तथा गांधी जी : भारतीय वस्तुस्थिति पर उनकी प्रतिक्रिया ?

कार्यक्रम घ : अन्य कार्यक्रम,

वार्त्तायें एवं व्याख्यान

1 फिल्म प्रदर्शन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने अपने सांस्कृतिक अभिलेखागार में अन्य सामग्री के साथ-साथ, सांस्कृतिक विभूतियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति, उनकी कलात्मक प्रस्तुतियों तथा उपदेशों पर तैयार की गई फिल्में संगृहीत की हैं। इन संग्रहों में से केन्द्र ने इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में 19 से 21 जुलाई, 1995 तक एक त्रिदिवसीय फिल्म प्रदर्शन समारोह का आयोजन किया। प्रदर्शित फिल्में थीं : आचार्य पार्वती कुमार का "अभिनय दर्पण", कल्याणकुट्टीअम्मा का "मोहिनीअट्टम" देबव्रत राय निर्देशित "उदय शंकर", अरुण खोपकर निर्देशित "कलर्स ऑफ एब्सेन्स", आलोक बनर्जी निर्देशित "गगनेन्द्रनाथ टैगोर"।

व्याख्यान

सोद्देश्य तथा बौद्धिक आदान-प्रदान के लिए मंच उपलब्ध कराने की दृष्टि से, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र लक्ष्यगत दर्शकों के समक्ष भिन्न-भिन्न विषयों पर वार्तायें, पुत्तलिका प्रदर्शन, वीडियो फिल्में आदि प्रस्तुत करता है।

अप्रैल, 1995 से मार्च, 1996 तक के वर्ष में, कलादर्शन प्रभाग द्वारा ऐसे छियासठ (66) कार्यक्रम समन्वित तथा आयोजित किए गए। इनमें से 30 सार्वजनिक व्याख्यान थे जिनमें से छह (6) व्याख्यान निदर्शनात्मक थे।

इस संदर्भ में इन तीन निदर्शनात्मक व्याख्यानों का विशेषोल्लेख किया जा सकता है–श्री विलियम विनान द्वारा "कुमाऊं की पहाड़ियां" विषय पर डॉ. एबरहर्ड फिशर द्वारा "चम्बा हिमाचल प्रदेश के उस्ताद चित्रकार" और श्री शेखर पाठक द्वारा "पश्चिमी तिब्बत में कैलास मानवरोवर की यात्रा" विषय पर व्याख्यान थे।

वर्ष 1995-96 के दौरान आयोजित किए गए व्याख्यानों/भाषाओं की अनुसूची अनुबंध-10 पर दी गई हैं।

सूत्रधार

(प्रशासन एवं वित्त प्रभाग)

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का सूत्रधार प्रभाग अपने स्थापना, लेखा, वित्त, आंतरिक लेखा-परीक्षा और सेवा तथा आपूर्ति अनुभागों के माध्यम से केन्द्र के अन्य सभी प्रभागों तथा एककों को न केवल प्रशासनिक, प्रबन्धकीय तथा संगठनात्मक सहायता एवं सेवाएं प्रदान करता रहा अपितु संस्था के लेखों के अनुरक्षण तथा प्रबन्ध के साथ-साथ केन्द्र की समस्त गतिविधियों के समन्वय, प्रशासन तथा नीति-निर्धारण के लिए भी एक प्रमुख एजेंसी में कार्य करता रहा।

क. कार्मिक

वर्ष 1995 - 96 के दौरान, केन्द्र में विभिन्न महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य करने के लिए कुछ नए अधिकारी नियुक्त किए गए। 31 मार्च, 1996 की स्थिति के अनुसार केन्द्र के महत्त्वपूर्ण अधिकारियों, परामर्शदाताओं, शोध अध्येताओं आदि की सूची अनुबन्ध 3, 4, और 5 पर दी गई है।

ख. आपूर्ति एवं सेवाएं

आपूर्ति एवं सेवाएं एकक जिसमें आतिथ्य सत्कार अनुभाग शामिल है, केन्द्र के सभी अकादमिक प्रभागों को सम्भारतंत्रीय तथा संबंधित सहायता प्रदान करता रहा। इस एकक ने वर्ष के दौरान अनेक राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं और प्रदर्शनियों की व्यवस्था में भी सहायता दी। इसने सभी सम्बद्ध मंत्रालयों/विभागों और अन्य संगठनों के साथ समन्वय बनाए रखा ताकि केन्द्र का कार्य सुचारु रूप से सकुशलतापूर्वक चलता रहे।

ग. शाखा कार्यालय

वाराणसी

वाराणसी का शाखा कार्यालय, जो 1988 में स्थापित किया गया था, एक अवैतनिक समन्वायक की देखरेख में काम करता रहा। यह कार्यालय इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कलाकोश प्रभाग के अन्तर्गत कार्य करता है और इस कार्यालय के अधिकांश अधिकारियों की सेवाएं अब नियमित कर दी गई हैं।

इम्फाल

इम्फाल कार्यालय 1991 में स्थापित किया गया था और यह भी एक अवैतनिक समन्वायक के अधीन कार्य कर रहा है। इस कार्यालय के सभी कर्मचारी तदर्थ आधार पर कार्यरत हैं।

घ. वित्त एवं लेख

31 मार्च, 1995 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष के लेखों को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के न्यास द्वारा अपने घोषणा विलेख के अनुच्छेद 19.1 के अनुसार अनुमोदित और स्वीकृत किया जा चुका है।

भारत सरकार ने केन्द्र को निम्नलिखित लाभ/रियायतें प्रदान करते हुए अधिसूचनाएं जारी की हैं :-

(1) न्यास की आय को कर निर्धारण वर्ष 1997 - 98 तक आयकर से मुक्त कर दिया गया है। आयकर अधिनियम की धारा 10 (23-ग) (IV) के अन्तर्गत आवश्यक कर मुक्ति दे दी गई है। देखिए : 10 मई, 1994 की अधिसूचना संख्या 9541 (एफ. सं० 197/183/93 आई. टी. ए.-1)

(2) न्यास को धारा-35 (I) (III) के अन्तर्गत, अधिसूचना संख्या 1075 एफ.सं.डी.जी.आई.टी.(ई) एन. डी. -22/35 (I) (III) 89 आई.टी.(ई.) दिनांक 14 मार्च, 1996 के द्वारा 1.4.96 से 31.3.1998 तक कर अवधि के लिए एक संस्था घोषित कर दिया गया है, जिससे सामाजिक विज्ञान आदि में अनुसंधान के लिए केन्द्र को दी गई कोई भी राशि आयकर अधिनियम की धारा 35 (I) (III) के अन्तर्गत दाता की आय में से कटौती की पात्र होगी। आयकर अधिनियम के अन्तर्गत इस छूट की पूर्वपीठिका के रूप में, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने इस संगठन केन्द्र को आयकर नियम, 1962 के नियम 6 के अन्तर्गत एक वैज्ञानिक तथा अनुसंधान संस्थान के रूप में अपनी मान्यता प्रदान कर दी है। इस मान्यता के आधार पर केन्द्र को आयात पर सीमा शुल्क से भी छूट मिल सकती है और आयात प्रक्रिया में भी सुविधा प्राप्त हो सकती है।

(3) केन्द्र को किसी कलाकृति, पाण्डुलिपि, रेखाचित्र, चित्रकारी, छायाचित्र, मुद्रण आदि की बिक्री से किसी व्यक्ति को होने वाले पूंजीगत लाभ आयकर अधिनियम की धारा 47 IX के अन्तर्गत निर्धारण वर्ष 1998 - 99 तक के लिए आयकर से मुक्त कर दिए गए हैं: देखिए भारत सरकार, वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) की दिनांक 24-11-1993 की अधिसूचना संख्या 207/5/93 आई.टी.ए.-II.

(4) व्यक्तियों द्वारा केन्द्र को किया गया कोई भी दान आयकर अधिनियम की धारा 80 (छ) के अन्तर्गत 50 प्रतिशत तक छूट का पात्र होगा। केन्द्र को यह छूट 31-3-1999 तक दी गई है : देखिए : आयकर निदेशक छूट का दिनांक 18 नवम्बर, 1993 का पत्र संख्या डी.आई.टी. (छूट) /93-94/379/87/531.

ङ आवास

केन्द्र का प्रधान कार्यालय जनपद स्थित सैंट्रल विस्टा मेस के भवनों और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मार्ग स्थित बंगलो संख्या 3 में स्थापित रहा। सैंट्रल विस्टा मेस भवनों को चारों दिशाओं में बढ़ाया गया है जिससे केन्द्र के विभिन्न प्रभागों तथा एककों को उस बढ़े हुए हिस्से में ही स्थान दे दिया गया है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मार्ग के बंगलों संख्या 5 की पुरानी इमारत अब तोड़ दी गई है और उस स्थल पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के नए भवन का निर्माण कार्य चालू है। निर्माण कार्य जून, 1993 में शुरू हुआ था और वह अब भी चल रहा है।

च. अध्येतावृत्ति योजनाएं

1 शोध अध्येतावृत्तियां

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की शोधवृत्ति योजना इस वर्ष भी चलती रही और वर्ष 1995 - 96 के दौरान शोध अध्येताओं की संख्या इस प्रकार रही:-

मुख्यालय कार्यालय	:	7
वाराणसी कार्यालय	:	3
चेन्नई माइक्रोफिल्म एकक	:	3

(II) इन्दिरा गांधी स्मारक अध्येतावृत्तियां

कलाओं, मानविकी विषयों तथा संस्कृति के क्षेत्र में सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक कार्य में अपने आप को स्वतंत्रतापूर्वक संलग्न रखने के लिए विख्यात एवं अत्यन्त प्रतिभाशाली व्यक्तियों को उपयुक्त अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने श्रीमती इन्दिरा गांधी के नाम से स्मारक अध्येतावृत्तियों की एक योजना प्रारंभ की है। ये अध्येतावृत्तियां ऐसे विद्वानों/शोधछात्रें के लिए उपलब्ध हैं जिनके पास सृजनात्मक परियोजनाएं हैं और जो बहु-विषयक, अंतर्विषयक अथवा संकुल सांस्कृतिक स्वरूप का शोध कार्य करने को तत्पर हैं। आवेदकों को ऐसे सर्जनात्मक या समालोचनात्मक कार्य का प्रामाणिक अनुभव होना चाहिए जो विशुद्ध अकादमिक स्वरूप के संकीर्ण क्षेत्र तक ही सीमित न हो। अध्येताओं को भारत के भीतर अपनी पसंद के किसी भी स्थान में रह कर कार्य करने की पूर्ण स्वतंन्त्रता होगी। किसी भी समय दो से अधिक अध्येतावृत्तियां नहीं दी जाएंगी और किसी भी समय कुल मिलाकर छः से अधिक अध्येता (फैलो) शोधकार्यरत नहीं होंगे। प्रत्येक अध्येता की मासिक रूप से 12,000 रुपए वृत्तिका और 2500 रुपए सचिवालयिक सहायता के रूप में प्रतिमाह दिए जाएंगे। इसके अलावा उसे 25,000 रुपए प्रतिवर्ष के हिसाब से दो वर्ष की अवधि के लिए आकस्मिक तथा यात्रा व्यय दिया जाएगा। वृत्तिका की राशि पर आयकर से छूट देने के संबंध में भारत सरकार से निवेदन किया गया है।

इन अध्येतावृत्तियों के बारे में घोषणा दिवंगत श्रीमती इन्दिरा गांधी के जन्मदिन पर नवम्बर, 1995 में देश के सभी प्रमुख सामचार पत्रों तथा सुप्रसिद्ध विशेषज्ञ व्यक्तियों तथा विद्वद् निकायों के माध्यम से देश भर में की गई थी और अनेक विद्वानों/शोधछात्रों से एतदर्थ आवेदन पत्र प्राप्त हुए हैं।

छ. राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ संबंध स्थापन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने अपने विभिन्न प्रभागों के माध्यम से अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं जैसे विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संगठनों तथा सांस्कृतिक संस्थाओं के साथ काफी व्यापक रूप से संबंध स्थापित किए हैं।

कलानिधि

केन्द्र का कलानिधि पुस्तकालय भारतीय विशिष्ट पुस्तकालय संस्थान के सदस्य के रूप में अन्तर्पुस्तकालय ऋण और कम्पयूटरबद्ध आदान-प्रदान की अनेक प्रणालियों में भाग लेता रहा। कलानिधि पुस्तकालय को देश के अन्य पुस्तकालयों/संस्थाओं के साथ, नियमित रूप से आदान-प्रदान चलता रहता है। उनमें से कुछ हैं :- भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण पुस्तकालय, राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता; एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता; राजस्थान विश्वविद्यालय पुस्तकालय, जयपुर; मणिपुर विश्वविद्यालय पुस्तकालय-इत्यादि। केन्द्र ने अपनी माइक्रोफिल्म बनाने की योजना के कार्यान्वयन के लिए अनेक संस्थाओं के साथ सूचनाओं का आदान-प्रदान करने, अध्येताओं/ विद्वानों को सहायता देने और परस्पर शोध कार्य के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए सुव्यवस्थित एवं नियमित कार्यक्रम स्थापित किए हैं। इस संदर्भ में निम्नलिखित संस्थाएं उल्लेखनीय हैं:

भाण्डाकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे; महाराष्ट्र;

भारत कला भवन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी; उत्तर प्रदेश;

गवर्नमेंट ओरिंएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना; बिहार;

हजरत पीरमोहम्मदशाह दरगाह शरीफ़ लाइब्रेरी, अहमदाबाद, गुजरात;

खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना; बिहार;

मौलाना अबुल कलाम आजाद अरबी एवं फ़ारसी अनुसंधान संस्थान, टोंक, राजस्थान;

राष्ट्रीय अभिलेखागार, जनपथ, नई दिल्ली;

ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट एण्ड मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, तिरुवनन्तपुरम्; केरल;

रामपुर रजा लाइब्रेरी; रामपुर उत्तर प्रदेश;

रघुनाथ पुस्तकालय, जम्मू, जम्मू-कश्मीर;

सरस्वती भवन पुस्तकालय, सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश;

श्री रणवीर संस्कृत शोध संस्थान, जम्मू, जम्मू-कश्मीर।

कलाकोश

वर्ष 1995-96 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपने शोध कार्यक्रमों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं और विशेष रूप से कलातत्त्वकोश, कलामूलशास्त्र तथा कलासमालोचन ग्रंथमालाओं के प्रकाशन की योजनाओं के माध्यम से अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं से जुड़ा रहा और उसने देश के विभिन्न भागों तथा विदेशों में स्थित कई शोधकर्त्ताओं तथा विशेषज्ञों सहित अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं तथा विद्वन्निकायों के साथ बराबर संबंध एवं सम्पर्क बनाए रखा।

आलोच्य वर्ष के दौरान केन्द्र ने जिन सुप्रसिद्ध अकादमिक निकायों के साथ नियमित रूप से सम्पर्क बनाए रखा, उनमें से निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं:

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश;

अमेरिकन इंस्टिट्यूट ऑफ इण्डियन स्टडीज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश;

भारत का मानव वैज्ञानिक सर्वेक्षण, कलकत्ता;

एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता, पश्चिम बंगाल;

भाण्डाकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे, महाराष्ट्र;

भारत कला भवन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी उत्तर प्रदेश;

भोगीलाल लहरचंद प्राकृत अध्ययन संस्थान, नई दिल्ली;

केन्द्रीय अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा संस्थान, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश;

उच्चतर तिब्बती अध्यन का केन्द्रीय संस्थान, सारनाथ, वाराणसी, उत्तर प्रदेश;

दकन कॉलेज, पुणे, महाराष्ट्र;

तुलनात्मक साहित्य विभाग तथा लोक साहित्य विभाग; संगीत शास्त्र का सम्प्रदाय संस्थान (संम्प्रदाय इंस्टिट्यूट ऑफ म्यूजिकालॉजी मद्रास, तमिलनाडु;

गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ , इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश;

गवर्नमेंट ओरिएंटल मेनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, मद्रास, तमिलनाडु;

भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता, पश्चिम बंगाल;

जादवपुर विश्वविद्यालय, कलकत्ता, पश्चिम बंगाल;

काशी विद्यापीठ, वाराणसी, उत्तर प्रदेश;

खुदाबख्श लाइब्रेरी, पटना, बिहार;

एल.डी.भारत विद्या संस्थान, अहमदाबाद, गुजरात;

प्राच्य संस्थान, बडोदरा, गुंजरात;

प्राच्य शोध संस्थान, मैसूर, कर्नाटक;

रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कलकत्ता, पश्चिम बंगाल;

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश;

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली;

श्री राम वर्मा गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, तिरुपुनीतुरा, केरल;

कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता, पश्चिम बंगाल;

मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर, कर्नाटक;

पूना विश्वविद्यालय, पुणे, महाराष्ट्र।

जनपद-सम्पदा

जनपद-सम्पदा प्रभाग अपने अकादमिक कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत के भिन्न-भिन्न भागों में क्षेत्र अध्ययनों का संचालन करता है। ये अध्ययन उसके परियोजना निदेशकों के माध्यम से चलते हैं, जो विश्वविद्यालय तंत्र तथा उसके बाहर के विभिन्न अनुसंधान संगठनों से जुड़े हैं। ये परियोजना निदेशक अपने-अपने विश्वविद्यालय या संस्थान के अनुसंधान कर्त्ताओं की सेवाएं लेते हैं। जनपद-सम्पदा प्रभाग का कार्य बहु-विषयक स्वरूप का है। प्रभाग ने मूलभूत विज्ञानों तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्रें की अग्रणी संस्थाओं के साथ सम्पर्क एवं संवाद स्थापित किया है। इन संस्थाओं में शामिल है--खगोल-भौतिकी केन्द्र, पुणे; विज्ञान संस्थान, बंगलौर; राष्ट्रीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विकास संस्थान; और भारतीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली। केन्द्र के अनुसंधान कार्यक्रमों में अनेक विश्वविद्यालयों के मानव विज्ञान विभाग भाग ले रहे हैं। इनमें से कुछ जो इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं वे हैं मानव विज्ञान विभाग, एच. एन. बहुगुणा विश्वविद्यालय, श्रीनगर, उत्तर प्रदेश; मानव विज्ञान विभाग, नार्थ ईस्टर्न हिल विश्वविद्यालय, मेघालय, और मानव विज्ञान विभाग, मणिपुर। इनके अलावा, मानव संग्रहालय, भोपाल;

मानव जाति अध्ययन संस्थान, उड़ीसा; मानव विज्ञान विभाग, कलकत्ता के सहयोग से भी कई कार्यक्रम चल रहे हैं। जनजातीय अध्ययन संस्थानों जैसे, आदिम जाति सेवा संघ, अरुणाचल प्रदेश, बिहार, राजस्थान तथा मध्य प्रदेश के जनजातीय संस्थानों के साथ भी परस्पर आदान प्रदान तथा सम्पर्क संबंध चल रहे हैं।

अपने क्षेत्र सम्पदा कार्यक्रम में, जनपद सम्पदा प्रभाग ने केन्द्रीय तथा राज्यों के पुरातत्व विभागों के साथ, और श्री चैतन्य प्रेम संस्थान, वृंदावन, उत्तर प्रदेश: भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, और भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद जैसी राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ भी नियमित रूप से सम्पर्क संबंध बनाए रखा है। सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत, जनपद सम्पदा प्रभाग बृहदीश्वर परियोजना पर पांडिचेरी के फ्रेंच संस्थान से सहयोग ले रहा है। कलाओं के क्षेत्र में अपने बाल-जगत के कार्यक्रमों, विशेष रूप से पुत्तलिका कला तथा संगीत में जनपद सम्पदा प्रभाग राष्ट्रीय स्तर की अनेक संस्थाओं के साथ सम्पर्क एवं सहयोग बनाए रखता है-जैसे, संगीत नाटक अकादमी, क्षेत्रिय संसाधन केन्द्र और मंचनीय प्रदर्शनीय कला संस्थान, उडिपी (कर्नाटक) और गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति, नई दिल्ली गांधी जी पर पुत्तलि कार्यक्रमों के लिए।

कलादर्शन

इसी प्रकार कलादर्शन प्रभाग ने अपनी प्रदर्शनियां तथा अन्य कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए गवर्नमेंट म्यूजियम, मद्रास, तथा भारत भवन, भोपाल, मध्य प्रदेश, जैसी राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं के साथ परस्पर संबंध बना लिए हैं; विशेषकर अब तो राष्ट्रीय मंचनीय/प्रदर्शनीय कला केन्द्र, मुम्बई तथा राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान, अहमदाबाद, गुजरात के साथ एक नियमित आदान-प्रदान कार्यक्रम बनाया हुआ है।

ज. अन्तर्राष्ट्रीय संवाद

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र भिन्न-भिन्न राष्ट्रों तथा संस्कृतियों में उपलब्ध कलाओं के बीच सक्रिय संवाद के पोषण एवं प्रोत्साहन में संलग्न है। इसके लिए वह सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रमों सहित अनेक अंतर सांस्कृतिक कार्यकलाप एवं कार्यक्रम चलाता है जो भारत सरकार द्वारा अनुमोदित हैं। साथ ही, वह भारत आने वाले विशेषज्ञों के अतिरिक्त विदेशी सांस्कृतिक तथा अकादमिक/शैक्षिक निकायों के साथ सम्पर्क बनाए रखता है, और केन्द्र के अपने सदस्यों को अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, अधिवेशनों, संगोष्ठियों आदि में भाग लेने के लिए भेजता है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र माइक्रोफिल्म, माइक्रोफिश, प्रकाशन, ग्रंथसूचियां, फोटोग्राफ और स्लाइडें प्राप्त करने और विद्वानों के आदान-प्रदान जैसे समान हित के कार्यक्रम बनाने के उद्देश्यों को पूरा करने का प्रयास करता है।

आलोच्य वर्ष के दौरान, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम २० देशों के साथ चलता रहा। ये देश हैं : बंग्लादेश, बेल्जियम, मिस्र, फिनलैंड, जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य, फ्रांस, गुयाना, इटली, स्पेन, तुर्की, ईरान बेनेजुएला, वियतनाम, रूस, तुर्कमेनिस्तान, ग्रीस, ताजिकिस्तान, हंगरी, बुलगेरिया तथा किरगिजस्तान।

निम्नलिखित सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों में कुछ नई मदें शामिल करने का प्रस्ताव है :-

1 भारत-माल्टा सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम 1995-97

2 भारत-मिस्र सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम 1995-97

3 भारत-इराक सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम 1995-97

4 भारत-फ्रांस सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम 1996-98

5 भारत-दक्षिण कोरिया सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम 1996-98

6 भारत-स्पेन सांस्कृतिक आदानप्रदान कार्यक्रम 1996-98

7 भारत-बेल्जियम सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम 1996-98

8 भारत-रूस सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम 1996-98

9 भारत-बंग्लादेश सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम 1996-98

10 भारत-उत्तर कोरिया सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम 1993-97

आस्ट्रेलिया, संयुक्त राज्य अमरीका और जापान जो भारत के साथ सीधे कोई सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम नहीं रखते, अपने सांस्कृतिक आदान प्रदान का कार्य क्रमश: भारत-आस्ट्रेलिया परिषद, भारत - संयुक्त राज्य अमरीका उपआयोग और भारत-जापान मिश्रित आयोग जैसे अन्य स्थायी मंचों के माध्यम से चलाते हैं। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने भारत-जापान मिश्रित आयोग के माध्यम से कुछ अग्रणी जापानी संस्थाओं के साथ सहयोग करने का प्रस्ताव रखा है।

चार विद्वानों का भारतीय अध्ययन के अमरीकी संस्थान के माध्यम से और एक विद्वान का भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के माध्यम से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के साथ संबंधन (स्वीकार किया गया) वर्ष 1995-96 में भारत में शोध कार्य करने के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के साथ संबंधन आवेदनपत्र न्यूयार्क के राज्य विश्वविद्यालय के प्रो० साण्ड्र हर्टन फैले, टोरांटो की कु० सैली एल. जोन्स और हीडलबर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी के डॉ. आदित्य मलिक से प्राप्त हुए हैं।

बहु माध्यमिक प्रयोगशाला

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने संयुक्त राज्य अमरीका की कंपनी जीरोक्स कॉरपोरशन के सहयोग से एक बहु-माध्यमिक प्रयोगशाला स्थापित की है। जिसमें एक मुख्य "सर्वर स्टेशन" एक "कैप्चर स्टेशन" और चार "वर्क स्टेशन" हैं । इसके अन्तर्गत "गीत गोविन्द" पर एक परियोजना प्रारंभ की जाएगी। गीतगोविन्द 12वीं शताब्दी में जयदेव द्वारा संस्कृत में रचित एक संगीत कृति है। इस परियोजना का उद्देश्य कम्प्यूटर अनुकूल सी.डी. तैयार करना है जिसकी सहायता से श्रोताओं को भारतीय संगीत, नृत्य, कलाओं तथा भक्ति की आधारभूत संकल्पनाओं और उनके पारस्परिक संबंधों से परिचित कराया जाएगा।

वर्ष के दौरान, इस परियोजना के अन्तर्गत शिक्षा प्राप्ति के परस्पर सक्रिय प्रतिमानों, चित्रात्मक ब्राउजिंग/संकेत/सूचक/पुनरुद्धार और नृत्य, मुद्राओं तथा भंगिमाओं के डिजिटल प्रस्तुतीकरण एवं रिद्म ब्राउजिंग की संभावना की खोज की गई। इस प्रयोजन के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के कम्प्यूटर विभागाध्यक्ष प्रो० के० के० विश्वास की सेवाएं प्राप्त की गई। इसके अलावा, एक वितरित बहु-माध्यमिक प्रदर्शन के लिए द्वितीय संस्करण के प्रस्तुति उपकरण विकसित किए गए और अब वे प्रदर्शन के लिए तैयार हैं। गीतगोविन्द प्रयोगशाला ने विख्यात नृत्यांगना कुण्मालविका सारूकै की वीडियो रेकार्डिंग का काम भी हाथ में लिया । गुरुवायुर देवालय, केरल में गीतगोविन्द की अष्टपदियों के वीडियो प्रलेखन के लिए वीडियो निर्माता श्री आर. शरत की सेवाएं ली गई। गीत गोविन्द पर डॉ. कपिला वात्स्यायन और डॉ. सम्पत नारायण जैसे विख्यात विषय विशेषज्ञों की चर्चाओं की वीडियो रिकार्डिंग भी श्री शरत द्वारा दिल्ली में विभिन्न स्थलों पर की गई।

विदेशों से अनुदान

फोर्ड फाउंडेशन : फोर्ड फाउंडेशन से प्राप्त 250,000/- अमरीकी डालर के अनुदान में से, वीडियो प्रोग्रामों के लिए एक सम्पादन स्टूडियो स्थापित करने का कार्य सम्पन्न किया गया; स्टूडियो में सभी उपस्कर स्थापित कर दिए गए और उसे चालू कर दिया गया। इस वर्ष धनराशियों का उपयोग अनुलिपित स्रोत सामग्री की प्राप्ति, प्रशिक्षण और परामर्शदाताओं की सेवाओं के लिए किया गया है।

जापान फाउंडेशन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने वर्ष 1995-96 में 6,31,382 येन मूल्य की 63 पुस्तकों के लिए जापान फाउंडेशन को अपना आवेदन पत्र प्रस्तुत किया था। जापान फाउंडेशन ने 2,71,408 येन मूल्य की पुस्तकों के लिए अपनी स्वीकृति दे दी। कला, संस्कृति तथा बौद्ध धर्म विषयक 55 पुस्तकें प्राप्त हो चुकी हैं।

यू. एन. डी. पी. परियोजना

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम यू. एन. डी. पी. तथा भारत सरकार के बीच 22 फरवरी, 1994 को एक करार पर हस्ताक्षर किए गए थे, जिसके आधार पर यू.एन.डी.पी. सांस्कृतिक संसाधनों के परस्पर सक्रिय बहु-माध्यमिक प्रलेखन की राष्ट्रीय सुविधा को सुदृढ़ बनाने के लिए 1 अप्रैल, 1994 को प्रारंभ हुई 5 वर्ष की अवधि में कुल मिलाकर 27.23 लाख अमरीकी डालर लगभग 8 करोड़ रुपए की सहायता देने के लिए सहमत हुआ था। भारत सरकार की ओर से परियोजना की अवधि में 7.955 करोड़ रुपए तक की राशि की व्यवस्था की जानी है। यू.एन.डी.पी. द्वारा लिए गए निर्णय को दृष्टिगत रखते हुए, आर्थिक कार्य विभाग (वित्त मंत्रलय) की तत्संबंधी समीक्षा के अनुसरण में यू. एन. डी. पी. कर परियोजना में 20 प्रतिशत कटौती लागू कर दी गई है जिसके फलस्वरूप यू.एन.डी.पी. के अंशदान की राशि घटकर 21.78 लाख अमरीकी डालर हो गई है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की अकादमिक निदेशक डॉ. कपिला वात्स्यायन इस यू.एन.डी.पी. परियोजना को राष्ट्रीय परियोजना निदेशक के रूप में और केन्द्र की संयुक्त सचिव, श्रीमती नीना रंजन, आई. ए. एस. इस परियोजना को राष्ट्रीय परियोजना समन्वयकर्ता के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान करती रहीं। जैसी कि परियोजना पत्र में व्यवस्था की गई है, विद्वानों /उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं का निर्धारण करने के लिए उनके साथ बराबर सम्पर्क बनाए रखने के उद्देश्य से, दो समितियां बनाई गईं (1) उपयोगकर्ता समिति और (2) परियोजना सलाहकार समिति।

1 उपयोगकर्ता समिति

उपयोगकर्ता समिति की दूसरी बैठक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की अकादमिक निदेशक तथा यू.एन.डी.पी. परियोजना की राष्ट्रीय परियोजना निदेशक डॉ. कपिला वात्स्यायन के सभापत्तिव में 13 दिसम्बर, 1995 को हुई। इस बैठक में विचार विमर्श, विषय वस्तु तथा शोध अध्येताओं की सहायता से बहुमाध्यमिक कम्प्यूटर व्यवसायिकों द्वारा तैयार किए गए संकल्पना पत्रों पर केन्द्रित रहा। (क) परियोजना के कार्यक्षेत्र (ख) परियोजनाओं के लिए युक्तियुक्त उत्पादन आउडपुट तथा (ग) उपयोगकर्ताओं के भिन्न-भिन्न वर्गों को अधिक से अधिक लाभान्वित कैसे किया जाए, आदि विषयों पर मार्गदर्शन देने के लिए, समिति के सदस्यों की सहायता मांगी गई। बहु-मंचीय व सुविधा सम्पन्न बहु-माध्यमिक प्रयोगशाला की स्थापना, कार्मिकों की नियुक्ति तथा अंतर्राष्ट्रीय परामर्शदाताओं का पता लगाने के संदर्भ में परियोजना की प्रगति का मूल्यांकन भी किया गया।

2 परियोजना सलाहकार समिति

विभिन्न नीति संबंधी विषयों पर सरकार तथा अन्य संस्थाओं के साथ संपर्क बनाए रखने के लिए, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की अकादमिक निदेशक डॉ. कपिला वात्स्यायन की अध्यक्षता में एक परियोजना सलाहकार समिति बनाई गई, जिसमें संस्कृति विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास, मंत्रालय, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, योजना आयोग, राष्ट्रीय सूचना केन्द्र, पर्यावरण तथा वन मंत्रलय और वित्त मंत्रलय के प्रतिनिधि तथा अन्य विशेषज्ञ सदस्य थे। परियोजना सलाहकार समिति की दूसरी बैठक परियोजना की प्रगति पर विचार विमर्श करने के लिए 14 दिसम्बर, 1995 को हुई।

परियोजना कार्मिकों की भर्ती

वर्ष 1995-96 के दौरान दो परियोजना प्रबन्धक, एक सिस्टम विशेषज्ञ और बारह (12) कम्प्यूटर प्रोग्रामर परियोजना के लिए नियुक्त किए गए हैं। अन्य पद चरणबद्ध रीति से भरे जाएंगे।

उपस्कर (कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर तथा हार्डवेयर)

राष्ट्रीय परियोजना समन्वयकर्ता की अध्ययन यात्र रिपोर्ट के आधार पर बहु-माध्यमिक प्रयोगशाला स्थापित करने के लिए आवश्यक उपस्कर की विशिष्टियों को अंतिम रूप दिया गया और 1-5-1995 को एक अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगी बोली आमंत्रित की गई। इस प्रतियोगिता में, प्राप्त बोलियों की जांच-पड़ताल करने के बाद बहु-माध्यमिक प्रयोगशाला के लिए उपस्कर की आपूर्ति, स्थापना तथा समीकरण 20-9-1995 को मैसर्स टाटा एलसी इंडिया लिमिटेड़ के पास 382.95 लाख रुपए का आर्डर भेज दिया गया। अधिकांश उपस्कर प्राप्त हो चुके हैं और प्रयोगशाला आंशिक रूप से काम करने लगी है। आशा है, मई 1996 तक यह पूर्ण रूप से कार्य करने लगेगी।

अन्तर्राष्ट्रीय परामर्शदाता

परियोजना में 20 अंतर्राष्ट्रीय परामर्शदाताओं के लिए प्रावधान है जिनमें 8 बहुमाध्यमिक विशेषज्ञ तथा 12 विषय विशेषज्ञ होगें और इनमें से प्रत्येक विशेषज्ञ आठ सप्ताह कुल मिलाकर 4 महीने काम करेगा। 36 अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों की सूची तैयार की जा चुकी है और उनके जीवनवृत्त प्राप्त करके यूनेस्को को भेजे जा चुके हैं? इनमें से दो विशेषज्ञों श्री कृष्ण पेण्डियाला और प्रो० फ्रिट्ज़ स्टाल की सेवाओं का उपयोग केन्द्र द्वारा किया जा चुका है। कुछ अन्य परामर्शदाताओं का भी पता लगाया जा रहा है जो 1996-97 के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आएंगे।

राष्ट्रीय व्यावसायिक परियोजना कार्मिक

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त ऐसे राष्ट्रीय विशेषज्ञों का पता लगाया गया है जो संस्कृत तथा विकास कार्यों, बहु-माध्यमिक आद्यरूपों (प्रोटोटाइप) विद्यालय स्तरीय पाठ्यचर्चा के निर्माण, सांस्कृतिक आयामों के ज्ञान, पारस्परिक क्रियाओं तथा प्रशिक्षण विधियों के क्षेत्र में कार्यरत हैं। वर्ष 1996 में राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (एन.आई.आई.टी) दिल्ली के डॉ. सुगत मित्र, राष्ट्रीय सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी संस्थान (एन.सी.एस.टी.) के डॉ. एस. पी. मुदुर, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान प्रलेखन केन्द्र इन्सडॉक के श्री विश्वनाथन, हैदराबाद विश्वविद्यालय के प्रो० ए. के.पुजारी को राष्ट्रीय व्यावसायिक परियोजना कार्मिक के रूप में जाना माना गया है। कुछ ऐसे ही अन्य विख्यात विशेषज्ञों का पता लगाया जा रहा है।

प्रशिक्षण तथा कार्यशाला

(1) **बहु-माध्यमिक कार्यशाला** : विजुअल सिम्पनी इन्क. के संस्थापक तथा कार्नेजी मिलन विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर विज्ञान विद्यालय की इनफॉर्मेटिक डिजिटल वीडियो लाइब्रेरी सहायक निदेशक श्री कृष्ण पेण्डियाला ने यूनेस्को परामर्शदाता के रूप में तकनीकी परियोजना कार्मिक के लिए 14-8-1995 से 8-9-1995 तक एक बहु-माध्यमिक कार्यशाला चलाई।

(2) इन कार्मिकों को भारतीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक प्रलेखन केन्द्र (इन्सडॉक) में सूचना सेवा विषय पर एक सप्ताह का प्रशिक्षण दिया गया जिसमें पुस्तकालय तथा सूचना संबंधी कार्यकलापों में कम्प्यूटरों की भूमिका, सूचक बनाने की संकल्पनाएं तथा सूचना, समाज तथा महत्त्वपूर्ण सूचना प्रणालियों के विषय में जानकारी दी गई।

(3) जामिया मिलिया इस्लामिया के जनसंचार अनुसंधान केन्द्र द्वारा बहुमाध्यमिक प्रयोगशाला के कर्मचारियों के लाभ के लिए "नई प्रौद्योगिकियां तथा परिवर्तित परिदृश्य" विषय पर 18-22 सितम्बर, 1995 में एक सप्ताह की कार्यशाला का आयोजन किया गया।

(4) राष्ट्रीय सूचना केन्द्र (निक) में विंडोज प्रोग्रामिंग विषय के प्रशिक्षण के लिए 20-24 नवम्बर, 1995 में पांच कम्प्यूटर प्रोग्रामरों को भेजा गया।

(5) संयुक्त राज्य अमेरिका के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रो० फ्रिट्ज स्टाल को फरवरी - मार्च, 1996 में अंतर्राष्ट्रीय परामर्शदाता के रूप में रखा गया। उनकी पुस्तक "अग्निचयन" पर बहुमाध्यमिक डेटाबेस तैयार करने के उद्देश्य से विद्वानों/अध्येताओं तथा कम्प्यूटर व्यावसायिकों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

(6) कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के शिक्षा अनुसंधानकर्ता श्री माइक सिपुसिक ने "बहु-माध्यमिक परियोजना की संस्थागत इंटरफेस डिजाइन" विषय पर एक सप्ताह का कार्य-सत्र चलाया। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) के विशेषज्ञों ने आमंत्रण पर इस कार्यशाला में भाग लिया।

विशेष व्याख्यान/भाषण

1 एपल कम्प्यूटर इन्क. के डॉ. गुरुशरण सिद्धू 25 जनवरी, 1995 को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पधारे और उन्होंने "कम्प्यूटर तथा कलाएँ" विषय पर भाषण दिया।

2 कार्नेजी मिलन विश्वविद्यालय, पिट्सबर्ग, संयुक्त राज्य अमेरिका के कला विभाग के प्रो० लौरी बरगेस ने 4 से 8 जून, 1995 तक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का दौरा किया। उन्होंने 8 जून, 1995 को "मिस्र परियोजना" पर एक बहुमाध्यमिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। मिस्र परियोजना एक विद्वान तथा जनसाधारण के लिए समानरूप से प्राचीन तथा अर्वाचीन मिस्र का वास्तविक रूप प्रस्तुत करती है।

3 संयुक्त राज्य अमेरिका के मिशिगन राज्य विश्वविद्यालय के जाने-माने प्रोफेसर डॉ. ए.के.जैन 25 अगस्त, 1995 को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र आए और उन्होंने परियोजना कार्मिकों के लाभ के लिए "वीडियो तथा इमेज डेटाबेस: वर्गीकरण, पुनरुद्धार तथा संयुक्तार्थ" विषय पर भाषण दिया।

4 कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के मल्टीमीडिया सेंटर के निदेशक डॉ. वेंकटरंगन, जो वहां की कम्प्यूटर मशीनरी एसोसिएशन के अन्तर्गत बहु-माध्यमिक प्रणालियों में एक पत्रिका के प्रधान सम्पादक भी हैं, 15 सितम्बर, 1995 को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में पधारें और उन्होंने बहु-माध्यमिक "प्रौद्योगिकी की प्रवृत्तियां" विषय पर भाषण दिया।

यू.एन.डी.पी. के निवासी प्रतिनिधि का आगमन

यू.एन.डी.पी. के नई दिल्ली स्थित निवासी प्रतिनिधि श्री एच. सी. स्पोनेक 10 जून, 1995 को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में पधारें और उन्होंने अकादमिक निदेशक डॉ. कपिला वात्स्यायन से मुलाकात की। यहां केन्द्र के बहु-माध्यमिक दल द्वारा किए जा रहे कार्य से भी स्पोनेक बहुत प्रभावित हुए।

प्रथम त्रि-पक्षीय समीक्षा बैठक

परियोजना-पत्र में की गई व्यवस्था के अनुसार, यू.एन.डी.पी. परियोजना की प्रथम त्रि-पक्षीय समीक्षा बैठक 29 जून, 1995 को हुई। यू.एन.डी.पी., यूनेस्को, आर्थिक कार्य विभाग (वित्त मंत्रालय), संस्कृति विभाग (मानव संसाधन विकास मंत्रालय) और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रतिनिधियों ने इस बैठक में भाग लिया। समीक्षा के समय, राष्ट्रीय परियोजना समन्वयकर्ता ने परियोजना की संकल्पना, प्रयोजन तथा उद्देश्यों पर प्रकाश डाला और परियोजना के अन्तर्गत चल रही विभिन्न गतिविधियों की अद्यतन स्थिति से सदस्यों को अवगत कराया।

व्यावसायिक विशेषज्ञ दलों का आगमन

1 झीरी, (मध्यप्रदेश)

शैल कला परियोजना, झीरी (मध्यप्रदेश) पर कार्य करने वाले बहु-माध्यमिक तकनीकी विशेषज्ञों के एक दल ने इस विषय के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त विशेषज्ञ डॉ. माइकेल लौरब्लाशे से जनवरी, 1996 में परियोजना स्थल पर विस्तृत चर्चा की।

2 देहरादून (उत्तर प्रदेश)

"अग्निचयन'' परियोजना पर कार्य करने वाले दल ने मार्च, 1996 में जगतग्राम, देहरादून, उत्तर प्रदेश का दौरा किया; वहां उन्होंने अग्निचयन परियोजना से संबंधित प्राचीन अश्वमेध स्थल की खुदाई का अध्ययन तथा प्रलेखन किया।

3 बृहदीश्वर मंदिर, तंजवुर, तमिलनाडु की यात्रा

राष्ट्रीय परियोजना समन्वयकर्ता (एक परियोजना प्रबन्धक सहित) के नेतृत्व में एक दल ने देवालय स्थापत्य तथा तत्संबंधी कला और प्रतिमा विज्ञान का अध्ययन करने के लिए 24 से 31 मार्च, 1996 तक तंजवुर, श्रीरंगम तथा अन्य प्राचीन स्मारकों का दौरा किया। मद्रास के डॉ. आर. नागस्वामी, राष्ट्रीय सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी केन्द्र, मुंबई के सह-निदेशक डॉ. एस. पी. मुदुर; पांडिचेरी स्थित फ्रेंच संस्थान के डॉ. पिएर पिशर्ड और हैदराबाद विश्वविद्यालय के डॉ. ए. के. पुजारी ने इस दल को उनके कार्य में सहायता दी।

अन्तर्राष्ट्रीय दौरे

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संयुक्त सचिव श्रीमती नीना रंजन, जो इस परियोजना की राष्ट्रीय परियोजना समन्वयकर्ता भी हैं, के नेतृत्व में एक दल ने परियोजना प्रबन्धक श्री संजय गोयल तथा प्रणाली विशेषज्ञ श्री प्रतापानन्द झा के साथ, क्षेत्रीय सूचना प्रौद्योगिकी तथा सॉफ्टवेयर इंजीनियरी केन्द्र (रिटसेक), काहिरा का 23 से 28 सितम्बर, 1995 तक दौरा किया और "रिटसेक'' के कल्चरवेयर ग्रुप के अनुभवों को जाना-बूझा।

बहुमाध्यम विषयक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

इलैक्ट्रॉनिकी तथा दूरसंचार इंजीनियर संस्था द्वारा "बहु-माध्यम 1996" विषय पर नई दिल्ली के होटल ताज पैलेस में 27 से 29 फरवरी, 1996 तक एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के सह-प्रायोजक की भूमिका निभायी।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के तकनीकी परियोजना नेता श्री रंजीत मक्कुली, परियोजना प्रबन्धकों तथा अनेक कम्प्यूटर व्यावसायिकों ने इस सम्मेलन में भाग लिया और गीतगोविन्द, बृहदीश्वर मंदिर एवं शैल कला पर चल रही विभिन्न परियोजनाओं तथा अन्य महत्त्वपूर्ण विषयों जैसे सक्रिय शिक्षा-प्राप्ति प्रतिमान पैरडाइम, अनुदेशात्मक डिजाइन तथा वितरित बहु-माध्यमिक प्रदेशों पर शोधपत्र प्रस्तुत किए।

अन्य व्यक्तियों तथा संस्थाओं के साथ समझौता ज्ञापन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, उन्नत कम्प्यूटिंग विकास केन्द्र (सी-डैक), पुणे तथा प्रो० पी. एस. फिलियोजा के बीच कर्नाटक के कुछ महत्त्वपूर्ण मंदिरों पर बहु-माध्यमिक डेटाबेस के संबंध में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गंए हैं।

बहु-माध्यमिक प्रौद्योगिकी को अपनाने के उद्देश्य से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र कम्प्यूटरबद्ध डेटाबेसों और अभिलेखागारीय सामग्री के पुन: अभियंत्रण (री-इंजीनियरिंग) के लिए मौजूदा बहुमाध्यमिक डेटाबेसों के अध्ययन का कार्य इंटेलिजेंट ऑटोमेशन सिस्टम्स को सौपा गया था। इस अध्ययन को चार चरणों में सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया है।

यूनेस्को

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने सहभागिता कार्यक्रम 1996-97 के अन्तर्गत यूनेस्को से सहायता प्राप्त करने के लिए कुछ प्रस्ताव तैयार किए थे। इनमें से तीन प्रस्ताव यूनेस्को के साथ सहयोग के लिए बने भारतीय राष्ट्रीय आयोग द्वारा यूनेस्को के पास भेजे गए थे। यूनेस्को में इन प्रस्तावों पर विचार-विमर्श हुआ और उनमें से एक सांस्कृतिक एशियाई पुरावशेषों के प्रलेखन पर व्यवहार्यता अध्ययन, तथा दो मुखौटों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन विषयक दो प्रस्तावों को वित्तपोषण के लिए प्राथमिकता दी गई।

अध्येतावृत्ति

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के डॉ. अरूप बनर्जी को मध्य एशिया तथा यूरोप की विभिन्न संस्थाओं में सांस्कृतिक एशियाई पुरावशेष स्थलों के प्रारंभिक सर्वेक्षण से संबंधित उनके अनुसंधान कार्यक्रम के लिए हिरियामा सिल्क रोड्स फैलोशिप (अध्येतावृत्ति) प्रदान की गई है।

यूनेस्को चेयर

यूनेस्को के महानिदेशक और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अकादमिक निदेशक के बीच 1994 में हस्ताक्षरित एक करार (संविदा) के अन्तर्गत यूनेस्को द्वारा सांस्कृतिक विकास के लिए एक चेयर (पीठ) स्थापित की गई। इस चेयर का प्रयोजन सांस्कृतिक विकास के क्षेत्र में अनुसंधान, प्रशिक्षण, सूचना तथा प्रलेखन संबंधी गतिविधियों की एक समेकित प्रणाली को बढ़ावा देना है। यह एशिया में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त अनुसंधानकर्ताओं और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अनुसंधान दल के बीच परस्पर सक्रियता एवं संपर्क बनाए रखने का एक साधन होगी। इस परियोजना को चलाने के लिए प्रो० बी.एन. सरस्वती को यूनेस्को प्रोफेसर के रूप मे नियुक्त किया गया।

आलोच्य अवधि में, इस पीठ के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्यक्रम चलाए गए :

I अभिविन्यास कार्यक्रम

यूनेस्को चेयर की परियोजना के अन्तर्गत, शोध अध्येताओं के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम चलाया गया जिसका उद्देश्य इन अध्येताओं को परिस्थिति विज्ञान के अध्ययन की वर्तमान प्रवृत्ति तथा उसकी समस्याओं से परिचित कराना था। इस कार्यक्रम के बाद इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के दो शोध अध्येताओं का गढ़वाल हिमालय में क्षेत्रगत अध्ययन के लिए दौरा कराया गया।

II राष्ट्रीय कार्यशाला

अगस्त, 1995 में दो राष्ट्रीय कार्यशालायें आयोजित की गई । इनमें से पहली कार्यशाला "प्राथमिक शिक्षा में प्रयोग" विषय पर थी। पच्चीस विशेषज्ञों को उनके प्रयोगों तथा अनुभवों के आधार पर शिक्षा तथा पारिस्थितिक विज्ञान के सांस्कृतिक आयाम को स्पष्ट करने के लिए, आमंत्रित किया गया। पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा दिल्ली से प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी) की रिपोर्ट विचारार्थ प्राप्त हुई। प्राथमिक शिक्षा के जिन तीन प्रमुख विषयों पर चर्चा की गई वे थे: 1. ग्रामीण बच्चों के रूपान्तरण के लिए शिक्षा 2. शांति की संस्कृति के लिए शिक्षा, और 3. कलाओं के माध्यम से शिक्षा।

इन कार्यशालाओं में पर्यावरण प्रबन्ध के सांस्कृतिक आयाम पर विचार-विमर्श किया गया। बुद्धि की परम्परा पर विचार करते हुए, कार्यशाला में भाग लेने वाले विद्वानों ने पारिस्थितिक संकट के स्थायी हल के लिए महत्त्वपूर्ण स्वदेशी ज्ञान एवं अनुभव के प्रश्न पर विचार किया।

III अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

शिक्षा तथा पारिस्थिति विज्ञान के सांस्कृतिक आयाम विषय पर 13 से 16 अक्तूबर, 1995 तक एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों जैसे इंडोनेशिया, थाईलैंड, बंगलादेश, श्रीलंका तथा जिम्बाब्वे (अफ्रीकी देश) से अनेक विद्वानों ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

भवन परियोजना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की भवन परियोजना सर एडविन लुटियन द्वारा नई दिल्ली के लिए बनाई गई मास्टर प्लान को पूरा करने के लिए भारत सरकार द्वारा उठाया गया एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कदम है। सैंट्रल विस्टा क्षेत्र में लगभग 25 एकड़ के भू-खण्ड पर इस भवन संकुल का निर्माण अपने आप में एक चुनौती भरा काम है जिसमें केन्द्र के परिसर का औपनिवेशिक नगर योजना के साथ इस प्रकार मणि-कांचन योग बैठाना है कि वह बाह्य रूप में औपनिवेशिक प्लान के अनुरूप होते हुए भी स्वतंत्र भारत के वैभव को प्रतिबिम्बित करता हो और जिसके भीतरी खण्ड अत्यधिक कलात्मक प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए इस प्रकार बनाए गए हों कि वे कार्यकुशलता के साथ-साथ ऐसा परिवेश प्रस्तुत करें जो स्वरूप तथा स्वभाव में पूर्णतः भारतीय हों।

अनेक प्रारम्भिक कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने के बाद, परियोजना का भौतिक निर्माण कार्य जून, 1993 में पुस्तकालय भवन मौखिक निर्माण के साथ प्रारंभ हुआ। इमारत का ढांचा जिसमें दो गहरे तहखाने हैं, अपनी पूरी ऊंचाई तक बन गया है और अब आधारभूत ढ़ांचे की सेवाओं का काम प्रगति पर है।

जहां तक अन्य भवनों का प्रश्न है, भवन परियोजना समिति द्वारा अनुमोदन दिए जाने के बाद, सूत्रधार, भूमिगत गाड़ी स्थान 'ख' जनपद सम्पदा, प्रदर्शनी दीर्घाओं और आवासीय खंड का निर्माण कार्य हाथ में लेने के लिए सांविधिक अनुमति प्राप्त करने के उद्देश्य से प्रस्तुत किए जाने वाले कागज-पत्र नई दिल्ली नगरपालिका के पास भेज दिए गए थे। नई दिल्ली नगरपालिका ने प्रारम्भिक जांच के बाद, इन दस्तावेजों को हर तरह से पूर्ण पाया और फिर उन्हें आगे दिल्ली नगर कला आयोग तथा सैंट्रल विस्टा समिति के पास उनके विचार तथा अनुमोदन के लिए भेज दिया। दोनों ही उच्च शक्ति प्राप्त निकायों ने प्रस्तावों का अनुमोदन करके नई दिल्ली नगरपालिका के पास अपनी सिफारिशें भेज दी हैं। प्रधान अग्निशमन अधिकारी के कार्यालय में इन प्रस्तावों की गहराई से जांच की गई और प्रधान अग्निशमन अधिकारी ने भी इन योजनाओं को अनुमोदित कर दिया। अब सांविधिक प्राधिकारी यानी नई दिल्ली नगरपालिका द्वारा अनुमोदन की औपचारिकता शीर्घ ही पूरी किए जाने की आशा है।

अनुबन्ध

अनुबन्ध-1 पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्यों की सूची, अनुबन्ध-2 पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की सूची, अनुबंध-3 पर केन्द्र के अधिकारियों की सूची, अनुबंध-4 पर केन्द्र के परामर्शदाताओं की सूची, अनुबन्ध-6 पर वर्ष 1995-96 के दौरान हुई संगोष्ठियों/कार्यशालाओं की सूची, अनुबंध-7 पर वर्ष 1995-96 के दौरान हुई प्रदर्शनियों की सूची, अनुबंध-8 पर 31 मार्च, 1996 तक केन्द्र के प्रकाशनों की सूची, अनुबंध-9 पर केन्द्र में हुए फिल्म तथा वीडियो प्रलेखनों की सूची, और अनुबंध-10 पर अप्रैल, 1995 से 31 मार्च, 1996 तक हुई घटनाओं की तालिका संलग्न है।

अनुबन्ध - 1

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य

1. श्रीमती सोनिया गांधी — न्यास अध्यक्ष
   10, जनपथ,
   नई दिल्ली-110 011

2. श्री आर. वेंकटरामन
   "पोतिगै" ग्रीनवेज रोड,
   चेन्नई-600 028

3. श्री पी.वी. नरसिम्हराव
   7, रेसकोर्स रोड़,
   नई दिल्ली-110 011

4. माननीय वित्त मंत्री,
   नॉर्थ ब्लाक, नई दिल्ली,
   (पदेन)

5. माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री,
   शास्त्री भवन, नई दिल्ली (पदेन)

6. माननीय शहरी विकास मंत्री,
निर्माण भवन, नई दिल्ली
(पदेन)

7. अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली - 110 002
(पदेन)

8. उप-कुलपति,
जामिया मिलिया इस्लामिया,
जामिया नगर, नई दिल्ली
(पदेन)

9. श्री पी.एन. हक्सर
4/9 शांतिनिकेतन,
नई दिल्ली-110 021

10. श्री आबिद हुसैन,
मकान नं० 237, सैक्टर - 15-ए,
नोएडा, उत्तर प्रदेश

11. श्रीमति पुपुल जयकर,
हिम्मत निवास, भूमि तल,
31 डूंगरी रोड, मालाबार हिल्स,
मुम्बई-400 006

12. श्री रामनिवास मिर्धा,
अध्यक्ष, ललित कला अकादमी,
रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली-110 001

13. प्रो० यशपाल
11-बी, सुपर डीलक्स फ्लैट,
सैक्टर 15 ए, नोएडा, उ०प्र०

14. श्री सत्यम् जी. पित्रोदा,
44 लोदी एस्टेट,
नई दिल्ली-110 003

15. श्री एच.वाई. शारदा प्रसाद,
19 मैत्री अपार्टमेंट्स,
ए-3 पश्चिम विहार,
नई दिल्ली-110 063

16. श्री के. नटवर सिंह,
डी-1, 137, वसंत विहार,
नई दिल्ली-110 057

17. श्रीमती एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी,
'शिवम-शुभम',
11, पहली मेन रोड, कोट्टुरपुरम,
चेन्नई-600 085

18. श्री अशोक वाजपेयी,
सी-2/43, शाहजहां रोड़,
नई दिल्ली-110 011

19. डॉ. कपिला वात्स्यायन,
डी-1/23, सत्यमार्ग,
नई दिल्ली-110 021

20. श्री एम.सी. जोशी, — सदस्य सचिव
सी-2/64, शाहजहां रोड
नई दिल्ली-110 002

अनुबन्ध - 2

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्य

1. श्री पी.वी. नरसिम्हराव, — अध्यक्ष
7, रेसकोर्स रोड,
नई दिल्ली-110 011
(न्यास सदस्य)

2. डॉ. मनमोहन सिंह — सदस्य (पदेन)
वित्त मंत्री, भारत सरकार
नॉर्थ ब्लाक, नई दिल्ली
(न्यास सदस्य)

3. डॉ. पी.सी. एलेक्जेंडर, — सदस्य
राज्यपाल, महाराष्ट्र,
राजभवन, मालाबार हिल्स,
मुम्बई-400 035

4. श्री आबिद हुसैन, — सदस्य
मकान नं० 237,
सैक्टर-15ए, नोएडा
(न्यास सदस्य)

5.	श्री एच.वाई. शारदा प्रसाद 19, मैत्री, अपार्टमेंट्स, ए-3,पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110 063 (न्यास सदस्य)	सदस्य
6.	श्री प्रकाश नारायण, 11, तालकटोरा रोड, नई दिल्ली-110 001	सदस्य
7.	डॉ. कपिला वात्स्यायन डी-1/23, सत्यमार्ग, नई दिल्ली-110 021 (न्यास सदस्य)	अकादमिक निदेशक
8.	श्री एम.सी. जोशी सी-2/64, शाहजहां रोड, नई दिल्ली-110 011 (न्यास सदस्य)	सदस्य सचिव

अनुबन्ध - 3

अधिकारियों की सूची

डॉ. कपिला वात्स्यायन, अकादमिक निदेशक/आचार्या
श्री एम.सी. जोशी, सदस्य सचिव

कलानिधि प्रभाग

1.	डॉ. टी.ए.वी. मूर्ति	पुस्तकालयाध्यक्ष
2.	डॉ. सम्पत् नारायण	विषय स्कॉलर
3.	श्री ऋषि पाल गुप्ता	प्रशासन अधिकारी
4.	श्री आत्म प्रकाश गक्खड	उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
5.	डॉ. अरूप बनर्जी	असोशिएट प्रोफेसर
6.	श्री गोपाल सक्सेना	नियंत्रक, वीडियो प्रलेखन
7.	श्रीमती रेणुका कुमार	प्रशासन अधिकारी
8.	श्री जे.पी. सैनी	प्रशासन अधिकारी
9.	श्री बेअंत कृष्ण रामपाल	वरिष्ठ अनुलिपिक अधिकारी

10.	श्री वी. कोटनाला	अनुलिपिक अधिकारी
11.	डॉ. राधा बनर्जी	अनुसंधान अधिकारी

कलाकोश प्रभाग

मुख्यालय

1.	पं. सातकड़ि मुखोपाध्याय	समन्वायक
2.	श्री टी. राजगोपालन	प्रशासन अधिकारी
3.	डॉ. नारायण दत्त शर्मा	अनुसंधान अधिकारी
4.	श्री शुभदत्त डोगरा	सहायक सम्पादक
5.	डॉ. अद्वैतवादिनी कौल	सहायक सम्पादक

वाराणसी कार्यालय

6.	डॉ. आर.सी. शर्मा	अवैतनिक समन्वायक
7.	श्री वी.एन. मिश्र	अवैतनिक सलाहकार
8.	डॉ. उर्मिला शर्मा	अनुसंधान अधिकारी
9.	डॉ. सुकुमार चट्टोपाध्याय	अनुसंधान अधिकारी
10.	डॉ. नरसिंह चरण पण्डा	अनुसंधान अधिकारी

जनपद सम्पदा प्रभाग

1.	प्रो. बैद्यनाथ सरस्वती	यूनेस्को प्रोफेसर एवं परियोजना निदेशक
2.	डॉ. ए.के. दास	समन्वायक
3.	श्री वाई.पी. गुप्ता	प्रशासन अधिकारी
4.	डॉ. मौलि कौशल	अनुसंधान अधिकारी
5.	डॉ. बंसीलाल मल्ला	अनुसंधान अधिकारी
6.	डॉ. गौतम चटर्जी	सहायक सम्पादक
7.	श्री पी.टी. देशपांडे	कलाकार

इम्फाल कार्यालय

8.	श्री अरिबाम श्याम शर्मा	अवैतनिक समन्वायक

कलादर्शन प्रभाग

1.	श्री बसंत कुमार	संयुक्त सचिव(पी. एण्ड ई.)
2.	डॉ. मधु खन्ना	असोशिएट प्रोफेसर
3.	श्री श्यामल कृष्ण सरकार	कार्यक्रम निदेशक
4.	श्री एन.के. वर्मा	प्रशासन अधिकारी
5.	कु. सबीहा ए. जैदी	कार्यक्रम अधिकारी

सूत्रधार प्रभाग

1.	श्रीमती नीना रंजन	संयुक्त सचिव(आई. डी.)
2.	श्री एस.एल. टक्कर	निदेशक (ए. एण्ड एफ.)
3.	श्री एस.पी. अग्रवाल	मुख्यलेखा अधिकारी
4.	डॉ. के.के. कीर्ति	उप-सचिव
5.	श्री अभय मोहन लाल	परियोजना प्रबन्धक
6.	श्री संजय गोयल	परियोजना प्रबन्धक
7.	श्री पी.एन. झा	प्रणाली विशेषज्ञ
8.	श्री आर.सी. सहोत्रा	निजी सचिव
9.	श्री पी.पी. माधवन्	निजी सचिव
10.	श्री एस.एस. सैनी	अवर सचिव (एस.डी.)
11.	श्री भरत प्रसाद	अवर सचिव (एस. एण्ड एस.)
12.	श्री सर्वजीत सिंह	अवर सचिव (आई.डी.)
13.	श्री एन.जे. थॉमस	अवर सचिव (आई.डी.पी.)
14.	श्री पी.एस. ब्रह्मचारी	आंतरिक लेखापरीक्षा अधिकारी
15.	श्री एस.सी. जैन	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
16.	श्री एस.पी. शर्मा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
17.	श्री आर.के. गुप्ता	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
18.	श्री ओ.डी. डोगरा	निजी सचिव
19.	श्री एस.एल. दीवान	निजी सचिव

अनुबंध - 4

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में परामर्शदाताओं की सूची

1. डॉ. ललित मोहन गुजराल,
   परामर्शदाता,
   कलाकोश प्रभाग

2. प्रो. माधवान के. पालत,
   अवैतनिक परामर्शदाता,
   स्लाविक एवं मध्य एशियाई अध्ययन,
   कलानिधि प्रभाग

3. प्रो. तान चुंग,
   परामर्शदाता,
   चीनी-भारतीय अध्ययन,
   कलानिधि प्रभाग

4. श्री वी. रघुराम अय्यर,
   जन-सम्पर्क परामर्शदाता,
   सूत्रधार प्रभाग

5. सुश्री कृष्णा दत्त,
   परामर्शदाता,
   जनपद-सम्पदा प्रभाग

6. डॉ. आर.के. परती
   परामर्शदाता (अभिलेखागार)
   कलानिधि प्रभाग

7. सुश्री कृष्णा लाल,
   अवैतनिक सलाहकार,
   कलानिधि प्रभाग

8. श्री के.पी. ददलानी,
   परामर्शदाता,
   कलादर्शन प्रभाग

अनुबन्ध - 5

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में वरिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं/ कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं की सूची

कलानिधि प्रभाग

संदर्भ पुस्तकालय

1.	डॉ. जयश्री	वरिष्ठ अध्येता (चेन्नई)
2.	श्री जे. मोहन	कनिष्ठ अध्येता (चेन्नई)
3.	श्री पी.पी. श्रीधर उपाध्याय	कनिष्ठ अध्येता (चेन्नई)

सांस्कृतिक संग्रहालय

4.	श्रीमती नवीना जाफा	कनिष्ठ अध्येता

चीनी-भारतीय अध्ययन कक्ष

5.	सुश्री भाग्यलक्ष्मी	कनिष्ठ अध्येता

कलाकोश प्रभाग

1.	श्रीमती अंजु उपाध्याय	वरिष्ठ अध्येता
2.	डॉ. विजय शंकर शुक्ल	वरिष्ठ अध्येता
3.	डॉ. निहारिका लाल	कनिष्ठ अध्येता (वाराणसी)
4.	श्री सदानंद दास	कनिष्ठ अध्येता (वाराणसी)
5.	कु. प्रणति घोषाल	कनिष्ठ अध्येता (वाराणसी)

जनपद सम्पदा प्रभाग

1.	डॉ. नीता माथुर	वरिष्ठ अध्येता
2.	श्री रामाकर पंत	कनिष्ठ अध्येता
3.	श्री राकेश खंडूरी	कनिष्ठ अध्येता

अनुबध - 6

वर्ष 1995-96 के दौरान हुई प्रदर्शनियां

क्रं सं०	प्रदर्शनी का शीर्षक	अवधि	प्रभाग का नाम
1.	"तीसरी आंख" (थर्ड आई) आश्विन मेहता द्वारा छायाचित्रों की प्रदर्शनी	27 सितम्बर से 11 अक्तूबर, 1995	कलादर्शन
2.	"परमात्मा की नारीकृति" (दि फेमिनिन ऑफ गॉड) सिबैस्टिना पापा द्वारा प्रस्तुत एक चित्रकार का नारीविषयक चिन्तन	1 नवम्बर से 21 नवम्बर, 1995	कलादर्शन
3.	"प्रतीक तथा आख्यान" (सिंबल एण्ड नैरेटिव) समकालीन आस्ट्रेलियाई वस्त्र प्रदर्शनी	30 अक्तूबर से 5 नवम्बर, 1995	कलादर्शन
4.	"ऋत : ऋतु" (ब्रह्माण्ड व्यवस्था तथा ऋतु चक्र)	4 जनवरी से 30 मार्च, 1996	कलादर्शन

अनुबन्ध - 7

वर्ष 1995-96 के दौरान हुई संगोष्ठियां/कार्यशालाएं

क्रं सं०	शीर्षक	अवधि	प्रभाग का नाम
1.	"अन्तर्जात सांस्कृतिक आयाम के विकास में एकीभाव के लिए सूचना प्रतिमान" विषय पर कार्यशाला	19-23 अप्रैल, 1995	जनपद सम्पदा
2.	"पाण्डुलिपि विज्ञान तथा लिपि विज्ञान" पर कार्यशाला	5-24 जून, 1995	कलाकोश
3.	"भारतीय मुस्लिम संदर्भ में राजनय तथा प्रशासन" विषय पर संगोष्ठी	26-27 जुलाई, 1995	कलादर्शन

4.	"प्राथमिक शिक्षा तथा पारिस्थिति विज्ञान" विषय पर कार्यशाला	अगस्त, 1995	जनपद सम्पदा
5.	"वियतनाम तथा कम्बोडिया की कला" विषय पर संगोष्ठी	8 नवम्बर, 1995	कलानिधि
6.	"अनादि पूर्वोत्तर भारत की कालातीत जनजातीय कला" विषय पर संगोष्ठी	19-21 नवम्बर, 1995	जनपद-सम्पदा
7.	"भारत एवं चीन: परस्पर दृष्टि" विषय पर संगोष्ठी	16-18 नवम्बर, 1995	कलानिधि
8.	"ऋतु : ब्रह्माण्ड व्यवस्था तथा अव्यवस्था" विषय पर संगोष्ठी	18-22 दिसम्बर, 1995	कलादर्शन
9.	"वाक्" विषय पर संगोष्ठी	10-12 जनवरी, 1996	कलादर्शन

अनुबन्ध-8

मार्च, 1996 तक इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशनों की सूची

क. कलातत्त्वकोश ग्रन्थमाला

1. कलातत्त्वकोश : भारतीय कलाओं की आधारभूत अवधारणाओं का कोश, खण्ड - 1

यह एक आर्दश (मॉडल) खण्ड है जिसमें भारतीय कलाओं की आठ आधारभूत अवधारणाओं, अर्थात् ब्रह्म, पुरुष, आत्मन्, शरीर, प्राण, बीज, लक्षण और शिल्प का विवेचन किया गया है। ये पारिभाषिक शब्द बहुत व्यापक अर्थ लिए हुए हैं। इन शब्दों ने कलाओं के सिद्धांत तथा व्यवहार दोनों पक्षों को प्रभावित किया है। सुयोग्य विद्वानों तथा विशेषज्ञों द्वारा समालोचनात्मक पद्धति पर प्रस्तुत इन अवधारणाओं के विवेचन में उनके प्रयोग तथा उद्धरणों के माध्यम से अनेक बहुस्तरीय अर्थों को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बेट्टिना बॉमर
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि., 41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1988, पृष्ठ : xxviii + 189, मूल्य : 200 रुपए

2 कलातत्त्वकोश: भारतीय कलाओं की आधारभूत अवधारणाओं का कोश, खण्ड - 2

इस खण्ड में 'दिक्' और 'काल' विषयक बीजभूत पारिभाषिक शब्दों का विवेचन शामिल है। इन पारिभषिक शब्दों की तत्त्वमीमाँसा से लेकर विज्ञान तथा कलाओं तक के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित मूल ग्रंथों की व्यापक छानबीन के द्वारा विवेचन किया गया है। इन शब्दों पर लिखे गए निबंधों को पढ़कर पाठक विभिन्न संदर्भों में इन अवधारणाओं के बहुस्तरीय अर्थ समझ सकता है। इस खण्ड में सम्मिलित किए गए शब्द है: *बिन्दु, नाभि, चक्र, क्षेत्र, लोक, देश, काल, क्षण, क्रम, संधि, सूत्र, ताल, मान, लय, शून्य, पूर्ण* ।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बेट्टिना बॉमर
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स प्रा.लि.
41, यू.ए. बंगलो रोड़ जवाहर नगर, दिल्ली-110 007
1992, पृष्ठ : xxxvii + 478, मूल्य : 450 रुपए

ख. कलामूलशास्त्र ग्रंथमाला

3. मात्रालक्षणम् (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं.-1)

यह खण्ड इस कृति की पूर्ण रूप से उपलब्ध दो पाण्डुलिपियों पर आधारित है और साथ में इसका अंग्रेजी अनुवाद तथा विस्तृत टिप्पणियां भी दी गई हैं। यह खण्ड अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है क्योंकि संभवत: यह ऐसा प्रथम ग्रंथ है जिसमें समय की मात्रा की संकल्पना पर विचार किया गया है, यानी छंदों के लिखित रूप पर स्वराघात दर्शाने वाले उच्चरण चिह्न लगाने तथा उनका सस्वर पाठ करने की शैली को लिखित रूप में प्रस्तुत करने का यह प्रथम प्रयास है।

यह ग्रंथ संगीतज्ञों, संगीत शास्त्रियों, सामवेद के गायकों, यहां तक कि उन शोधकर्ताओं, के लिए भी अनिवार्य रूप से पठनीय है जो वैदिक संगीत के स्वरों तथा उनका भारत के शास्त्रीय और लोक संगीत पर प्रभाव, विषय पर शोधकार्य में रुचि रखते हैं।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : वेन हॉवर्ड
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1988, पृष्ठ : xvi + 98, मूल्य : 150 रुपए

4. दत्तिलम् (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 2)

यह 'गंधर्व' का सार-संग्रह है जो वैदिक संगीत का प्रतिरूप या प्रतिपक्ष और अवैदिक संगीत का मूलाधार है। यह अपनी ही कोटि का एक अनुपम ग्रंथ है और इसलिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह भरत के नाट्यशास्त्र में किए गए इस विषय के प्रतिपादन का निचोड़ प्रस्तुत करता है और साथ ही एक तरह से उसका अनुपूरक भी है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : मुकुन्द लाठ
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1988, पृष्ठ : xvii + 236, मूल्य : 300 रुपए

5. श्रीहस्तमुक्तावली (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 3)

भारत के विभिन्न भागों में 17वीं शताब्दी तक संगीत, नृत्य और नाट्य विषयों पर अनेक पुस्तकें लिखी जाती रहीं। 12वीं से 16वीं सदी के बीच क्षेत्रीय शैलियां उभर आई। सभी भागों में मध्यकालीन ग्रंथ खोजे गए हैं। उनमें से एक है *श्रीहस्तमुक्तावली* जो पूर्वी परम्परा से सम्बद्ध है। यद्यपि इसके उद्भव के विषय में अस्पष्टता है, इसका पाठ मैथिली तथा असमिया प्रतिलिपियों में पाया गया है। लेखक ने अपने प्रयास को 'हस्त' (हस्त संकेतों) के विस्तृत विवेचन तक ही सीमित रखा है। डॉ. महेश्वर नियोग ने बड़ी सावधानी से इसके पाठ का सम्पादन तथा अनुवाद किया है और साथ ही नाट्यशास्त्र तथा *संगीतरत्नाकर* की परम्परा से उसकी समानताओं तथा भिन्नताओं को दर्शाया है। यह ग्रंथ उन हस्तसंकेतों की भाषा पर पर्याप्त प्रकाश डालता है जो सम्भवत: पूर्वी प्रदेशों में अपनाए जाते रहे होंगे।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : महेश्वर नियोग
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1992, पृष्ठ : xii + 205, मूल्य : 300 रुपए

6. कविकर्णेरपाला, 4 खंडों में (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 4, 5, 6, 7)

17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बंगला भाषा में रचित कविकर्ण के "सोलोपाला" यानी सत्यनारायण के गुणानुवाद के 16 पदों का गायन समकालीन उड़ीसा में व्यापक रूप से प्रचलित है। सत्यनारायण की पूजा और व्रतकथा का वाचन तथा उसके पश्चात् "शिरनी" खास किस्म के मुस्लिम प्रसाद का वितरण जो "सत्यपीर" (जैसा कि पाला/पदों में सत्यनारायण को कहा गया है) को चढ़ाया जाता है। भारत में सर्वत्र हिन्दुओं द्वारा इसी समेकित प्रक्रिया को अपनाया जाता है। इन पालाओं सहित, सभी भारतीय भाषाओं में उपलब्ध व्रत कथाओं का उद्गम स्कंद पुराण के रेवा खंड में पाया जाता है परन्तु 'सत्यपीर' शब्द किसी भी व्रत कथा में नहीं मिलता, केवल कविकर्ण के पालाओं में ही प्रयुक्त हुआ है। एक मुस्लिम फ़कीर का अपने सभी पालाओं में उल्लेख करके और 'शिरनी' को 'प्रसाद' के तौर पर बंटवा कर कविकर्ण ने धार्मिक तथा कर्मकांडीय धरातलों पर सांस्कृतिक समन्वय स्थापित करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है जो राष्ट्रीय एकता की दिशा में एक बहुमूल्य योगदान है। कविकर्ण ने अपने 16 पालाओं को जिस क्रम में रखना चाहा था उसी क्रम को इस पुस्तक में अपनाया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : विष्णुपद पाण्डा
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1992, पृष्ठ : ci + 1182, मूल्य : 1200 रुपए (4 खण्ड).

7. बृहद्देशी खण्ड-1 (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 8)

संगीत के क्षेत्र में बृहद्देशी पहला उपलब्ध ग्रंथ है जिसमें *राग* का वर्णन किया गया है, *सारिगम* के विषय में बताया गया है, *श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्च्छना* आदि के बारे में नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है और देशी तथा उसके प्रतिरूप मार्ग की संकल्पना को प्रतिष्ठापित किया गया है।

यद्यपि पाण्डुलिपि की खोज के अभाव में, यह ग्रंथ अभी तक अपूर्ण है, तथापि यह संस्करण, जहां तक इसका व्याप्ति क्षेत्र है जो कि पर्याप्त रूप से विस्तृत है, अध्ययन एवं शोध के प्रयोजन से काफी उपयोगी होगा। सम्पूर्ण कृति तीन खण्डों में प्रकाशित की जाएगी।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : प्रेमलता शर्मा
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1992, पृष्ठ : xviii + 194, मूल्य : 275 रुपए.

8. कालिकापुराणे मूर्तिविनिर्देश: (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 9)

कालिकापुराणे मूर्तिविनिर्देश: कालिकापुराण में से लिए गए लगभग 550 श्लोकों का संग्रह है, जिसमें अनेक देवी-देवताओं तथा अंशावतारों का शारीरिक वर्णन किया गया है। उनमें कुछ तो केवल संकल्पनात्मक हैं, किन्तु कुछ अन्य पत्थर तथा धातु प्रतिमाओं के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।

कालिकापुराण ईसा की नौवीं शताब्दी के अंतिम दशकों या दसवीं शताब्दी के प्रारंभिक काल का एक महत्त्वपूर्ण उप-पुराण है। इसकी रचना प्राचीन असम (कामरूप) में मातृदेवी कामाख्या के गुणानुवाद और उसकी आराधना की कर्मकाण्डीय विधि बताने के लिए की गई थी। *कालिकापुराण* के विभिन्न अध्यायों में विभिन्न देवी-देवताओं के विषय में बिखरे हुए श्लोकों को प्रत्येक देवता का सम्पूर्ण चित्रण प्रस्तुत करने के लिए देवतानुसार संकलित किया गया है। संस्कृत मूलपाठ के साथ-साथ प्रत्येक श्लोक का अंग्रेजी में यथार्थ अनुवाद भी दिया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : विश्वनारायण शास्त्री
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xxxiv + 159, मूल्य : 250 रुपए

9. बृहद्देशी खण्ड - 2 (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 10)

इस खण्ड में *बृहद्देशी* के *प्रबन्धाध्याय* तक का सम्पूर्ण उपलब्ध पाठ प्रस्तुत किया गया है। यह *जाति* के विवेचन से प्रारंभ होकर *ग्रामराग* तथा *याष्टिक* एवं शार्दूल के अनुसार उनकी परिभाषायें देते हुए *देशी रागों* का आंशिक वर्णन करके प्रबन्धाध्याय के साथ समाप्त हो जाता है। इस खण्ड के मूलपाठ का कलेवर प्रथम खण्ड में प्रस्तुत पाठ से लगभग दोगुना है। मूल पाठ में दिए गए इन विषयों के विवेचन की प्रमुख विशेषताएँ 'विमर्श' में यत्र-तत्र इंगित की गई हैं। किन्तु ये केवल बिन्दुओं के अनुसार ही स्पष्टीकरण हैं। तृतीय खण्ड में जो समालोचना दी जाएगी वही सम्पूर्ण मूल ग्रंथ की विषयवस्तु की समीक्षा प्रस्तुत करेगी। उसमें पूर्ववर्ती तथा परवर्ती ग्रंथो के माध्यम से दृष्टिपात किया जाएगा।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : प्रेमलता शर्मा
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xviii + 320, मूल्य : 300 रुपए

10. काण्वशतपथ ब्राह्मणम् खण्ड-1 (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 12)

यह पहला अवसर है जबकि शुक्ल यजुर्वेद की काण्व शाखा के शतपथ ब्राह्मण का एक सम्पूर्ण आलोचनात्मक संस्करण अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। इस संस्करण में, तेलुगु लिपि में प्रकाशित पाठों के अलावा, कुछ अन्य पाण्डुलिपियों में उपलब्ध पाठान्तरों को भी ध्यान में रखा गया है, जो प्रो. कैलेंड को उपलब्ध नहीं थे जिन्होंने इसके प्रथम सात कांडों का समालोचनात्मक संस्करण निकाला था। यह सम्पूर्ण अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत करने का भी प्रथम प्रयास है निस्संदेह माध्यन्दिन तथा काण्व शाखा का शतपथ ब्राह्मण के पाठों में उसके अष्टम से षोडश तक के काण्डों में कोई विशेष अंतर नहीं है और पूर्वोक्त का प्रो० ईगलिंग का अनुवाद उपलब्ध है, फिर भी श्रौत यज्ञों के कर्मकांडों में सक्रिय रूप से संलग्न परम्परागत विद्वानों के साथ विशद विचार-विमर्श के फलस्वरूप परवर्ती भाग का नए सिरे से अनुवाद करना आवश्यक समझा गया ।

पाठान्तर-विशेष को अपनाने का आधार बताने के लिए मूलपाठ संबंधी टिप्पणियां मूलपाठ के अध्ययन के फलस्वरूप उत्पन्न हुए कुछ चुने हुए प्रश्नों पर चर्चा स्वरूप 'विमर्श' शीर्षक खण्ड; ब्राह्मण ग्रंथों के अनुसार विषयवस्तु की विस्तृत सूची और पारिभाषिक शब्दों की सूची इस प्रयास की कुछ अतिरिक्त विशिष्टताएँ हैं। श्रौत यागों के विशेषज्ञ परम्परागत विद्वानों से प्राप्त सुझाव और मार्गदर्शन इस संस्करण की श्रेष्ठता के प्रतीक हैं।

इस खण्ड में पहले काण्ड का पाठ अनुवाद के साथ पाठविमर्श सहित प्रस्तुत किया गया है। शेष भाग को कलामूलशास्त्र ग्रंथमाला के अन्य खण्डों में प्रकाशित किया जाएगा।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : सी.आर. स्वामिनाथन
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xxiii + 168, मूल्य : 300 रुपए

1. स्वायम्भुवसूत्र संग्रह : (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 13)

स्वायम्भुवसूत्र संग्रह : शैवसिद्धान्त के 28 आगमों की परम्परागत सूची में तेरहवां आगम है। शैव सम्प्रदाय के प्राचीनतम ाचार्यों में से एक आचार्य सद्योज्योति ने इसके विद्यापाद खण्ड पर एक टीका लिखी थी। इसमें जिन विषयों का विवेचन किया ाया है वे हैं : पशु अर्थात बंधनयुक्त जीवात्मा: पाश यानी बंधन; अनुर्गह अर्थात् प्रभुकृपा और अध्वन् यानी मुक्ति प्राप्ति के ार्ग। सद्योज्योति ने इन संकल्पनाओं द्वारा उठाई गई दार्शनिक समस्याओं पर सुनिश्चित एवं आत्यन्तिक दृष्टिकोण अपनाया ै। उसने उनके कर्मकांडीय आधार पर बल दिया है, जो कि तांत्रिक साहित्य की मूल प्रवृत्ति और शैव धर्म का मर्म है। इस ुस्तक में सद्योज्योति की टीका के मूलपाठ का समालोचनात्मक सम्पादन करके उसे अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया ाया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : पियरे सिलवैन फिलियोजा
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xxxviii + 144, मूल्य : 200 रुपए

12. मयमत खण्ड 1 व 2 (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 14 और 15)

मयमतम् एक वास्तुशास्त्रीय अर्थात् वास (घर) विषयक ग्रंथ है और इस प्रकार यह देवी-देवताओं तथा मनुष्यों के वासगृहों के संबंध में उनके निर्माणस्थल से लेकर मंदिर की दीवारों के प्रतिमा विज्ञान तक सभी पक्षों का विवेचन करता है। इसमें ग्रामों एवं नगरों तथा देवालयों, घरों, भवनों एवं प्रासादों के यथार्थ विवरण प्रचुर मात्रा में दिए गए हैं। यह ग्रंथ मकान के लिए उचित स्थान एवं दिशा, सही आयाम और उपयुक्त सामग्री के चयन के बारे में निर्देश देता है। यह एक ओर वास्तुविद् के लिए नियमपुस्तक है तो दूसरी ओर जनसाधारण के लिए मार्गदर्शक पुस्तक। दक्षिण भारत के पारम्परिक स्थपतियों के चिन्तन की उपज यह पुस्तक इस समय पर्याप्त रुचि का विषय है जब सभी क्षेत्रों में उपलब्ध तकनीकी परम्पराओं को इस उद्देश्य से जांचा-परखा जा रहा है कि क्या आज उनका उपयोग हो सकता है।

डॉ. ब्रूनो दाजां द्वारा तैयार किए गए इस द्विभाषी संस्करण में समालोचनात्मक रूप में सम्पादित संस्कृत मूलपाठ दिया गया है जो कि इसी सम्पादक द्वारा पहले सम्पादित उस संस्करण का संशोधित एवं परिष्कृत रूप है जो पांडिचेरी के फ्रेंच इंडोलॉजी संस्थान के प्रकाशनों में प्रकाशन संख्या-40 के रूप में प्रकाशित हुआ है। पूर्व-प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद भी अब प्रचुर टिप्पणियों के साथ संशोधित कर दिया गया है। इस संस्करण की उपयोगिता इसमें विश्लेषणात्मक विषयवस्तु की तालिका तथा विस्तृत शब्दावली जोड़ देने से और भी बढ़ गई है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला के

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्या
सम्पादक : ब्रूनो दा
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र त
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 00
1994, पृष्ठ : ci + 978, मूल्य : 1000 रुप

13. शिल्परत्नकोश (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 16)

शिल्परत्नकोश 17वीं शताब्दी में उड़ीसा के स्थापक निरंजन महापात्र द्वारा रचित ग्रंथ है जिसमें मंदिर के सभी भाग और उड़ीसा के मुख्य-मुख्य मंदिर रूपों, जैसे 'मुंजश्री' तथा 'खाकार' का वर्णन किया गया है। इसमें एक खंड मूर्तिकला (प्रासादमूर्ति) पर भी है और मूर्ति निर्माण (प्रतिमालक्षण) पर एक परिशिष्ट जोड़ा गया है। यह ग्रंथ यद्यपि इसमें वर्णित मंदिरों के निर्माण काल से बहुत बाद की रचना है, अपने समय की जीवंत परम्परा का चित्रण करता है और उड़ीसा के मंदिर स्थापत्य संबंधी शब्दावली को स्पष्ट करने में बहुत सहायक है। तथापि इस ग्रंथ का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान यह है कि इसने श्रीचक्र के साथ मंजुश्री मंदिर के तादात्म्य का निरूपण किया है जिसके फलस्वरूप लेखकों को भुवनेश्वर के राजराणी मंदिर के बारे में यह जानने में सहायता मिली है कि यह मंदिर श्रीचक्र के रूप में राजराजेश्वरी को समर्पित है।

इस प्रकाशन का मूल पाठ तीन तालपत्रीय पाण्डुलिपियों के आधार पर सम्पादित तथा अनूदित किया गया है और साथ में बहुत से चित्र (रेखाचित्र एवं तस्वीरें) दिए गए हैं। साथ में दी गई शब्दावली पुस्तक की उपयोगिता को बढ़ाती है। यह ग्रन्थ अब तक प्रकाशित शिल्प/वास्तु साहित्य की श्रीवृद्धि करने वाला एक महत्त्वपूर्ण प्रकाशन है और यह उड़ीसा के मंदिर स्थापत्य में रुचि रखने वाले जिज्ञासुओं के लिए बहुत उपयोगी होगा।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बेट्टिना बॉमर तथा राजेन्द्र प्रसाद दास
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xii + 229, प्लेटें, मूल्य : 400 रुपए

14. नर्तननिर्णय खण्ड-1 (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 17)

यह भारतीय संगीत एवं नृत्य पर, संगीत रत्नाकर के बाद रचे जाने वाले ग्रंथों में से एक है। यह अपने काल(ईसा की 16वीं शताब्दी) की इन कलाओं के सिद्धान्त और व्यवहार दोनों पक्षों की जानकारी के लिए एक प्रमाणिक स्रोत है। यद्यपि यह एक सीधी-सादी ओर सुस्पष्ट साहित्यिक शैली में लिखा गया है तथापि यह अपने चित्रोपम वर्णनों के माध्यम से विशद कल्पनाशीलता प्रस्तुत करता है।

एक अद्वितीय क्रमबद्ध योजना के अन्तर्गत, *नर्तननिर्णय* में उसके प्रथम तीन अध्यायों में नृत्य के प्रति क्रमशः करताल वादक, मृदंग वादक और गायक के योगदान का वर्णन करने के बाद अंतिम तथा सबसे लम्बे चतुर्थ अध्याय में नर्तक की कला

विवेचन किया गया है। इस अध्याय में कला से संबंधित वर्णमाला, शब्दावली, व्याकरण तथा मुहावरे के विषय में ही नहीं, पितु उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत की कुछ नृत्य शैलियों समेत (कुछ को तो वस्तुत: निरूपित किया गया है) प्रस्तुति संबंधी म्पराओं तथा रंगपटल में भी नई विशेषताओं का समावेश किया गया है। इसमें बंध नृत्य तथा अनिबंध नृत्य का जो विशद वेचन प्रस्तुत किया है वह परम्परावादी तथा नवाचारवादी दोनों प्रकार के नर्तकों के लिए गम्भीरतापूर्वक ध्यातव्य है।

इस ग्रंथ का सम्पूर्ण मूल पाठ एक विस्तृत एवं विद्वत्तापूर्ण टीका के साथ 3 खण्डों में प्रकाशित किया जाएगा।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : आर. सत्यनारायण
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xiii + 357, मूल्य : 450 रुपए

5. रिसाल-ए-रागदर्पण

तर्जुमा-ए-मानकुतूहल और रिसाल-ए-रागदर्पण एक संयुक्त ग्रंथ है जिसकी रचना नवाब सैफ ख़ान जो फ़कीरूल्लाह के ाम से ज्यादा मशहूर थे, ने की। रिसाल-ए-रागदर्पण तत्कालीन व्यवहृत संगीत विषय की एक मौलिक रचना है जबकि र्जुमा-ए-मानकुतूहल अनुवाद (तर्जुमा) मात्र है।

जैसा कि पाण्डुलिपि के पन्ने पर दर्ज किया गया है, फकीरूल्लाह इस नुस्खा (पाण्डुलिपि) के मालिक व मुसन्निफ़ (स्वामी एवं लेखक) दोनों थे। यह स्पष्ट है कि फकीरूल्लाह ने अपने इस अनुवाद तथा मूल रचना (तस्नीफ़) दोनों को एक साथ वर्ष 1076 हिजरी (1666 ई०) मे पूरा किया था।

फ़कीरूल्लाह का यह ग्रंथ 10 बाबों (अध्यायों) में है। पहले बाब में बताया गया है कि इस ग्रंथ की रचना क्यों की गई। दूसरे बाब में भिन्न-भिन्न रागों की पहचान बताई गई है। तीसरा बाब उन रागों से संबंधित ऋतु-काल के बारे में है जिसमें यह भी बताया गया है कि अमुक राग के लिए दिन अथवा रात का कौन सा प्रहर/समय उपयुक्त है। चौथा सुर (स्वर) बोध के विषय में, पांचवां विभिन्न साज़ (वाद्यों) की सही पहचान के बारे में है। छठे बाब में गोइन्दों (गीतकार तथा संगीतकार) के दोषों को स्पष्ट किया गया है। सातवां बाब आवाज की खासियतों (कण्ठ की विशेषताएं), उनकी श्रेणियों तथा हंजरा (स्वर यंत्र) के बारे में है। आठवें बाब में उस्ताज-ए-कामिल (कला-गुरु) की विशेषताओं का विवेचन किया गया है। नवां बाब वृंद (वाद्य वृंद) (ऑर्केस्ट्रा) की समझ और एक साथ मिलकर वाद्य बजाने के लाभों के बारे में है। दसवें बाब में समकालीन गोइन्दों (कवि संगीतज्ञों) का परिचय दिया गया हैं।

'खातिमा' यानी समाप्ति के रूप में पुस्तक के अंत में तत्कालीन कश्मीरी संगीत के विषय में लेखक ने अपनी संक्षिप्त टिप्पणी दी है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : शाहब सरमदी
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1996, पृष्ठ : ixviii + 314, प्लेटें 4; मूल्य : 500 रुपए

ग. कलासमालोचन ग्रंथमाला

16. राम लेजेण्ड एण्ड राम रिलीफ्स इन इंडोनेशिया

विलियम स्टटरहाइम द्वारा 1925 में लिखित *राम लेजेण्ड एण्ड राम रिलीफ्स* पुस्तक अपनी पुरातत्त्वीय सटीकता कारण तथा एशियाई कला के अध्ययन के लिए भाषायी विश्लेषण के सिद्धान्तों को लागू करने की नई विधि का सूत्रपात कर के कारण भी एक उच्च कोटि की कृति मानी गई है। इसमें इंडोनेशिया के प्रम्बनन मंदिर का विवेचन किया गया है।

लेखक : विलियम स्टटरहाइ

आमुख : कपिला वात्स्याय

सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथ

अभिनव पब्लिकेशन, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली-110 01

1989, पृष्ठ : xxx + 287 + 230 प्लेटें, मूल्य : 600 रुपए

17. द थाउजेंड आर्म्ड अवलोकितेश्वर

कला मर्मज्ञों एवं इतिहासज्ञों ने अवलोकितेश्वर की संकल्पना की नानाविध व्याख्या की है। यद्यपि अवलोकितेश्वर का मूल संस्कृत पाठ लुप्त हो गया फिर भी इसकी संकल्पना तथा छवि तिब्बत, चीन तथा जापान तक पहुंच गई। पुस्तक का मूल पाठ लिखित तथा मौखिक अनेक रूपों में उपलब्ध है।

प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन

मूलपाठ : लोकेश चन्द्र

सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

अभिनव पब्लिकेशन, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली-110 016

1988, पृष्ठ : viii + 303, मूल्य : 500 रुपए

18. सिलेक्टेड लेटर्स आफ आनन्द के. कुमारस्वामी

डा० आनन्द के. कुमारस्वामी की ग्रंथमाला के संग्रह ग्रंथ लेखक के संशोधनों तथा परिवर्तनों के साथ, विषयानुसार सुव्यवस्थित रूप में प्रकाशित किएं जायेंगे। इस ग्रंथमाला में उनके द्वारा, श्रीलंका, भारत, एशिया तथा यूरोप के शिल्प, कलाओं, खनिजों तथा भू-विज्ञान पर लिखी गई समग्र सामग्री सम्मिलित की गई है। सिलेक्टेड लेटर्स आफ आनंद कुमारस्वामी इस ग्रंथमाला का पहला पुष्प है। इस खंड में सम्मिलित किए गए पत्र जो पहली बार प्रकाशित हो रहे हैं, उनसे इस विलक्षण मनीषी के अनमनीय व्यक्तित्व का पता चलता है जो किसी प्रकार के सिद्धान्तों, विचारधाराओं अथवा राजनीतिक या दार्शनिक मतों या वादों में विश्वास नहीं करता था। एक भू-वैज्ञानिक के रूप में अपने प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त वैज्ञानिक सूक्ष्मता के साथ अपनी संवेदनशीलता का समन्वय करते हुए डॉ. आनन्द के० कुमारस्वामी ने इतिहास, दर्शन, धर्म, कला एवं शिल्प की विभिन्न विधाओं का अवगाहन किया है।

सम्पादक : एलविन मूर जूनियर और राम पी० कुमारस्वामी
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए.
लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110 001
1988, पृष्ठ : xxxiii + 479, मूल्य : 250 रुपए.

19. सिलेक्टेड लेटर्स आफ रोमांरोला

ये पत्र रोमांरोला की गम्भीर कला मर्मज्ञता और अत्यन्त हृदयस्पर्शी अन्तर्वैयक्तिक संवेदनशीलता की सुकोमलता के द्योतक हैं। ये उनकी इस प्रतिबद्धता को प्रमाणित करते हैं कि समग्र विश्व आध्यात्मिक दृष्टि से एक है। मानवता–देश व काल की सीमाओं में नहीं बंधी है।

सम्पादक : फ्रांसिस डोर एवं मैरी लौरे प्रेवोस्ट
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड, यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए.
लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110 001
1990, पृष्ठ : xvii + 139, मूल्य : 125 रुपए.

20. वॉट इज़ सिविलाइजेशन

इस खण्ड में प्रकाशित बीस निबंधों में ऐसे आधारभूत प्रश्न पूछे गए हैं जो कुमारस्वामी की अद्वितीय शैली में मर्मवेधी होने के साथ-साथ तीक्ष्ण भी हैं। प्रथम निबंध में "सभ्यता" शब्द के मूल, उसके अर्थ तथा संदर्भ की यूनानी तथा संस्कृत भाषाओं में गहराई तक खोज की गई है और एक साथ समग्र पाश्चात्य तथा प्राच्य सभ्यताओं का आद्योपांत विवेचन किया गया है

सम्पादक : आनंद के. कुमारस्वामी
प्राक्कथन : सैयद हुसैन नस्र
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए.
लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110 001
1998 पृष्ठ : xi + 193, मूल्य : 250 रुपए.

21. इस्लामिक आर्ट एण्ड स्पिरिच्युअलिटी

यह अंग्रेजी भाषा में ऐसी पहली पुस्तक है जिसमें इस्लामिक कला, जिसमें रूपंकर कलाएँ ही नहीं, साहित्य एवं संगीत भी शामिल हैं, के आध्यात्मिक महत्त्व का विवेचन किया गया है। इसमें इस्लाम की विभिन्न कलाओं के इतिहास का विवेचन करने या उनका विवरण देने के बजाय, विद्वान् लेखक ने इन कलाओं के रूप, विषयवस्तु, प्रतीकात्मक भाषा, अर्थ तथा उनकी उपस्थिति का इस्लामिक उद्भावना के मूल स्रोतों के साथ संबंध जोड़ा है।

लेखक : सैयद हुसैन नस्र
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए.
लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड़, नई दिल्ली-110001
1990, पृष्ठ : x + 213, मूल्य : 300 रुपए.

22. टाइम एण्ड ईटर्निटी

ऐस्कोना, स्विट्जरलैंड में 1947 में मुद्रित इसका प्रथम संस्करण कुमारस्वामी का अंतिम ग्रंथ था जो उनके जीवनकाल में प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक में वे यह प्रतिपादन करते हैं कि यद्यपि हम काल की सीमाओं में रहते हैं पर हमारी मुक्ति अनंतता में ही निहित है। सभी धर्म यह अंतर स्पष्ट करते हैं अर्थात् यह बताते हैं कि केवल शाश्वत् या चिरस्थायी क्या है और अनादि अनन्त क्या है।

लेखक : आनन्द के. कुमारस्वामी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
सिलेक्ट बुक्स, 35/3 ब्रिगेड रोड क्रॉस, बंगलौर-560 001
1990, पृष्ठ : viii + 107, मूल्य : 110 रुपए.

23. टाइम एण्ड ईटर्नल चेंज

मिथक और पुरातत्त्वीय खगोल दिज्ञान के अध्येता तथा खगोल भौतिकी में पारंगत होने के नाते, जॉन मैककिम मेलविले काल एवं परिवर्तन के संबंध में अनेक रूपकों के माध्यम से पाठक का मार्गदर्शन करते हुए बताते हैं कि काल के स्वरूप के विषय में प्राचीन ऋषियों को जो अन्तर्बोध हुए थे उनमें से कितनों को आधुनिक भौतिकी तथा खगोल विज्ञान ने अपनाया है।

लेखक : जॉन मैककिम मेलविले
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा० लि०,
एल० 10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110 016
1990, पृष्ठ : x + 112, मूल्य : 150 रुपए.

24. प्रिंसिपल्स ऑफ कॉम्पोजिशन इन हिन्दू स्कल्पचर

इस पुस्तक में हिन्दू मूर्तिकला के अब तक अछूते रहे एक पक्ष को प्रस्तुत किया गया है। इसमें पूर्व मध्यकालीन मूर्तिकला का विवेचन है और इस कला के ऐतिहासिक, सैद्धांतिक और सौंदर्यशास्त्रीय पक्षों को न छूते हुए, इससे अनन्य रूप से संरचना के प्रश्न पर ही ध्यान केन्द्रित किया गया है।

लेखक : एलिस बोनर
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा० लि०,
41, यू.ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-110 007
1990, पृष्ठ : xvii + 274 + चित्र, मूल्य : 450 रुपए.

25. इन सर्च ऑफ ऐस्थेटिक्स फॉर दि पपेट थिएटर

पुत्तलि रंगमंच के एक सर्वाधिक सृजनशील समकालीन कलामर्मज्ञ द्वारा रचित यह पुस्तक पुत्तलिकला जगत के सौंदर्य शास्त्र से संबंधित है। लेखक ने यह दर्शाया है कि पुत्तलिकला में *दिक्* और *काल* का विवेचन एक ही मंच पर कैसे किया जा सकता है जैसा कि ब्रह्मांड, आकाश और विभिन्न कालक्रमों का विवेचन किया जाता है।

लेखक : माइकेल मेश्के, मार्गरेटा सोरेनसन के सहयोग से
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
स्टर्लिंग पब्लिकेशन्स प्रा. लि.,
एल-10 ग्रीन पार्क एक्सटेशंन, नई दिल्ली-110 016
1992, पृष्ठ : 176, मूल्य : 300 रुपए.

26. एलोरा : कॉनसेप्ट एण्ड स्टाइल

यह ग्रंथ एलोरा की विश्वविख्यात शैलकृत्त गुफाओं के समन्वयात्मक विवेचन का निश्चयात्मक प्रयास है। इसका उद्देश्य भारतीय कला के अध्ययन के लिए एक रीतिनीति निर्धारित करने और कला के सामान्य इतिहास के प्रति इसके महान योगदान की ओर ध्यान आकर्षित करना है।

लेखक : कारमेल बर्कसन
प्राक्कथन : मुल्कराज आनंद
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई-37 हौजखास, नई दिल्ली-110 016
1992, पृष्ठ : 392 + 270 चित्र, मूल्य : 750 रुपए.

27. अंडरस्टैंडिंग कुचिपुड़ी

इस शताब्दी में पुनरुज्जीवित की गई भारतीय नृत्य की विभिन्न शैलियों/विधाओं में से कुचिपुड़ी नृत्य शैली का इतिहास सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक दोनों स्तरों पर बहुत की रोचक है। इसके अतिरिक्त, इस शैली के विकास का इतिहास अभी बन रहा है और इसका समकालीन पुनरुत्थान एवं इसकी लोकप्रियता मंचीय कलाओं के गतिविज्ञान पर पर्याप्त प्रकाश डालती है। कुचिपुड़ी का इतिहास न केवल मंदिर तथा प्रांगण के अन्योन्याश्रय संबंध को दर्शाता है अपितु नगरीय एवं ग्रामीण, नारी एवं पुरुष तथा तमिलनाडु एवं आन्ध्र प्रदेश के पारस्परिक संवाद को भी प्रकट करता है।

लेखक : गुरु सी.आर. आचार्य तथा मल्लिका साराभाई
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
दर्पण एकेडमी ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स, अहमदाबाद,
1992, पृष्ठ : 212, मूल्य : 200 रुपए

28. ऐसेज इन अर्ली इंडियन आर्किटेक्चर

भारत में स्थापत्य कला के इतिहास के प्रति कुमारस्वामी का योगदान सीमित होते हुए भी गुरु-गंभीर था। विशेष रूप से आदि भारत के असाधारण काष्ठ स्थापत्य के पुनर्निर्माण के उद्देश्य से उनके द्वारा किया गया ग्रंथो एवं स्थापत्य कृतियों का विश्लेषणात्मक विवेचन अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण था और एक ऐसा मूलाधार था जिसके ऊपर भारत की उत्कृष्ट स्थापत्य परम्परा के सभी परवर्ती इतिहासों का निर्माण किया गया है।

प्रधान सम्पादक : आनन्द के. कुमारस्वामी
सम्पादक : मिकाइल डब्लू. माइस्तर
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए.,
लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110 001
1992, पृष्ठ : xxxviii + 151, मूल्य : 400 रुपए

29. रिलीजन एण्ड दि एनवाइरनमेंटल क्राइसिस (एक प्रबन्ध ग्रंथ)

कुछ वर्ष पहले दिए गए एक स्मरणीय व्याख्यान में, सैयद हुसैन नस्र ने पर्यावरण के उस संकट के कारण का गंभीर विवेचन किया था जिसने आज विकसित तथा विकासशील दोनों वर्गों के विश्व को अपने चुंगल में फंसा लिया है।

लेखक : सैयद हुसैन नस्र
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली-110 016
1993, पृष्ठ : 32, मूल्य : शून्य

30. स्पिरिच्युअल अथॉरिटी एण्ड टेम्पोरल पावर इन दि इंडियन थ्योरी ऑफ गवर्नमेंट

कुमारस्वामी ने मूलपाठ्य स्रोतों के आधार पर भारतीय शासन सिद्धान्त की व्याख्या की है। समुदाय का कल्याण आज्ञापालन तथा निष्ठा की लम्बी शृंखला पर निर्भर करता है, जैसे प्रजा की राजा तथा पुरोहित, दोनों के प्रति भक्ति एवं निष्ठा, राजा की पुरोहित के प्रति निष्ठा और राजराजेश्वर के रूप में धर्मशास्त्र के सिद्धान्तों के प्रति सभी की निष्ठा।

लेखक : आनन्द के. कुमारस्वामी
सम्पादकगण : केशवराम एन.अय्यंगर तथा राम.पी. कुमारस्वामी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए.
लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड नई दिल्ली-110 001
1993, पृष्ठ : x + 127, मूल्य : 200 रुपए.

31. यक्षज : एसेज इन दि वाटर कॉस्मालजी

कुमारस्वामी ने वैदिक, ब्राह्मण तथा उपनिषद् साहित्य के संदर्भ में यज्ञों की उत्पत्ति की जांच की और आर्येत्तर तथा आर्य-पूर्व संस्कृति के अधिक महत्त्वपूर्ण काल में यक्षों तथा याक्षिणियों की संकल्पना के विषय में स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करने के लिए सामग्री एकत्र की। कलात्मक मूलभाव को स्पष्ट करते हुए, उन्होंने जलीय ब्रह्मांड विज्ञान के अनछुए क्षेत्रों का गहराई से अवगाहन किया।

लेखक : आनन्द के. कुमारस्वामी
सम्पादक : पॉल श्रोडर
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, वाई.एम.सी.ए.,
लाईब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110 001
1993, पृष्ठ : xvii + 339, मूल्य : 500 रुपए.

32 हजारी प्रसाद द्विवेदी के पत्र खंड-1

पुस्तक में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी को लिखे गए पत्रों का संग्रह है। पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के गुरु, मार्गदर्शक तथा उससे भी अधिक उनके मित्र थे। आचार्य द्विवेदी अपने सुख-दुख की बात चतुर्वेदी जी से कहा करते थे। इस पृष्ठभूमि के साथ, ये पत्र द्विवेदी जी के व्यक्तिगत जीवन की कई घटनाओं का चित्रण करते हैं। और विभिन्न साहित्यिक समस्याओं के विषय में उनके विचारों से अवगत होने का अवसर देते हैं, जो संभवत: औपचारिक रचनाओं में नहीं मिल सकता।

ये पत्र ऐसे जीवंत प्रलेख हैं जो एक साहित्य पंडित तथा शोधकर्ता दोनों के लिए समान उपयोगी हैं। ये पत्र आचार्य द्विवेदी के जीवन पर शोध कार्य करने के लिए प्रचुर सामग्री उपलब्ध कराते हैं।

सम्पादक : मुकुन्द द्विवेदी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,
1-बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110 002
1994, पृष्ठ : 205, मूल्य : 125 रुपए.

33. एक्सप्लोरिगं इंडियाज सैक्रिड आर्ट

यह खण्ड स्टेला क्रैमरिश की चुनी हुई रचनाओं का संग्रह है। स्टेला भारतीय कला तथा उनके धार्मिक संदर्भ की अग्रणी व्याख्याकार थी। यह ग्रंथ स्टेला के समग्र व्यक्तित्व व कृतित्व का नहीं, बल्कि उनके भावबोध तथा सूक्ष्मदृष्टि का रस लेने का एक साधन है।

इस खण्ड में संगृहीत शोधपत्र क्रैमरिश द्वारा लगभग पचास वर्षों में लिखे गए थे जो भारतीय कला के सांस्कृतिक तथा प्रतीकात्मक मूल्यों पर बल देते हैं। प्रथम भाग में कलाओं के सामाजिक तथा धार्मिक संदर्भों की चर्चा की गई है। उसके बाद के लेख मंदिर स्थापत्य, मूर्तिकला तथा चित्रकला के औपचारिक तथा तकनीकी पक्षों का उनके प्रतीकात्मक अर्थ के संदर्भ में विवेचन करते हैं। ग्रंथ 150 से भी अधिक चित्रों से सुसज्जित है जो स्टेला की रचनाओं को महत्त्वपूर्ण दृश्य आयाम प्रदान करते हैं। इसमें बारबरा स्टोलर मिलर द्वारा लिखा गया एक जीवनी लेख भी है।

लेखक : स्टेला क्रैमरिश
सम्पादक : बारबरा स्टोलर मिलर
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41, यू.ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर, नई दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xii + 356, मूल्य : 600 रुपए

34. विद्यापति पदावली

मैथिली भाषा के अत्यन्त विख्यात कवि विद्यापति ठाकुर ने पदों की एक माला की रचना की, विषय था राधा एवं कृष्ण के नाम से परमात्मा तथा जीवात्मा की प्रणय लीला। उन्होंने ग्रामीण भारत की रोजमर्रा की साधारण गतिविधियों को आध्यात्मिक महत्त्व प्रदान किया। उनकी राधा एक गांव की गोरी है जो अपने परमप्रभु के प्यार की दीवानी है और उसी से प्रेमक्रीड़ाएँ करती है। इसी प्रकार कृष्ण भी कोई ऐतिहासिक व्यक्तित्व नहीं, बल्कि परब्रह्मपरमात्मा के अवतार हैं। इस प्रकार एकात्मता तथा समग्रता के सिद्धान्त को बोधगम्य विधि से प्रतिपादित किया गया है।

कुमारस्वामी ने राधा कृष्ण की प्रेमलीलाओं को अत्यन्त साधारण रीति से व्यक्त करने वाले इन पदों के बहु-स्तरीय प्रतीकवाद को अंग्रेजी भाषा में व्यक्त करने की आवश्यकता महसूस की और उसके फलस्वरूप इस पुस्तक का निर्माण हुआ।

अपने वर्तमान रूप में इस पुस्तक में पदावली का बंगला तथा देवनागरी लिपियों में मूलपाठ दिया गया है और साथ ही उनका अंग्रेजी अनुवाद भी प्रस्तुत किया गया है।

लेखक : विद्यापति ठाकुर
अनुवादक : आनन्द के. कुमारस्वामी तथा अरुण सेन
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
क्लैरियन बुक्स, 18-19, जी.टी. रोड,
दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110 095
1994, पृष्ठ : 360, मूल्य : 550 रुपए

5. थर्टी सांग्स फ्रॉम पंजाब एण्ड कश्मीर

श्रीमती एलिस कुमारस्वामी ने लेखिका के रूप में भारतीय नाम रतन देवी का प्रयोग करते हुए, ये गीत रिकार्ड किए थे ो आनन्द कुमारस्वामी की प्रस्तावना तथा अनुवाद के साथ इस पुस्तक में छपे हैं। एलिस ने कपूरथला के उस्ताद अब्दुल हीम से भारतीय शास्त्रीय संगीत सीखा था, और आगे चलकर उन्होंने अपने सीखे हुए गीतों में से कुछ को संगीत तथा शब्दों ें लिपिबद्ध किया। उनके द्वारा स्वरबद्ध किए गए तीस गीत ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, दादरा आदि शैलियों तथा राग-रागिनियों ें रचे गए हैं।

प्रस्तुत खण्ड में उपर्युक्त संकलन को भाग-एक के रूप में शामिल किया गया है और भाग-दो में इन गीतों को सारिगम स्वरांकन के साथ देवनागरी लिपि में, हिन्दी अनुवाद के साथ प्रस्तुत किया गया है और साथ ही राग, ताल तथा मूलपाठ पर हिन्दी अंग्रेजी में टिप्पणियां दी गई हैं। कुशल संगीतज्ञा प्रो. प्रेमलता शर्मा ने बड़ी मेहनत करके भाग-दो का पाठ तैयार किया है।

सम्पादक : प्रेमलता शर्मा
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा. लि.,
एल-10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110 016
1994, पृष्ठ : xv + 177, मूल्य : 500 रुपए

36. इंडियन आर्ट एण्ड कॉनिसाशिप

यह प्रकाशन ऐसे 25 निबंधो का संग्रह है जो ब्रिटिश म्यूजियम के भारतीय कला विभाग के भूतपूर्व कीपर डूगलस बैरेट के भारतीय कला अध्ययन के प्रति योगदान को मान्यता प्रदान करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों द्वारा लिखे गए हैं। ये निबंध 5 भागों में विभाजित हैं : भाग 1 प्राचीन भारत, भाग 2 उत्तर भारतीय चित्रकला, भाग 3 दक्षिण भारतीय मूर्तिकला, भाग 4 भारतीय चित्रकला, भाग 5 इस्लामिक कला। सभी निबंध चित्रों से सुसज्जित किए गए हैं, जिनमें से कुछ रंगीन चित्र भी हैं। इसमें भारतीय कला विषय पर डूगलस बैरेट के लेखों की संपूर्ण सूची भी शामिल की गई है।

योगदान करने वाले लेखक हैं : टी.के. विश्वास, विद्या देहजिया, साइमन डिग्बी, क्लौस फिशर, बैसिल ग्रे, जॉनी गाइ, जे. सी. हार्ले, हरबर्ट हर्टल, जॉन इर्विन, कार्ल खंडालावाला, जे.पी. लॉस्टी, टी.एस. मैक्सवेल, आर. नागस्वामी, प्रतापादित्य पाल, आर. पिंडर विल्सन, एच.के. स्वाली, रॉबर्ट स्केल्टन, एम. टैडी, एण्ड्रू टॉम्सफील्ड, एम.सी. वेल्स, जोअन्ना विलियम्स आदि।

सम्पादक : जॉन गाइ
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मेपिन पब्लिशिंग प्रा.लि., चिदम्बरम्, अहमदाबाद-380 013
1995 : 22 रंगीन तथा 211 श्वेतश्याम चित्रों के साथ;
पृष्ठ : 360, मूल्य : 1200 रुपए

37. इंडियन टेम्पल आर्किटेक्चर फॉर्म एण्ड ट्रांसफॉर्मेशन

भारतीय मन्दिरों के रूपों में परिवर्तन एक दोहरी प्रक्रिया के माध्यम से होता रहा है। समय और स्थान के माध्यम से होने वाले रूपांतरण की ये दो पद्धतियां एक दूसरी में बहुत कुछ प्रतिबिम्बित होती हैं। दोनों में ही आविर्भाव, विकास तथा विस्तार की प्रक्रियाएँ अंतर्निहित हैं, जिनमें एक साथ पृथक होने तथा एक होने अर्थात् एकत्व से बहुत्व और उसी में लय होने की क्रियाएं चलती रही हैं।

भारत में मंदिर निर्माण की सबसे समृद्ध परम्पराओं में से एक वह थी जो ईसा की 7वीं शताब्दी में अस्तित्व में आई थी और उस प्रदेश में केन्द्रित रही थी जो आजकल कर्नाटक राज्य कहलाता है। यह परम्परा 13वीं शताब्दी तक विद्यमान रही थी। यह द्रविड़ यानी दक्षिणी मंदिर स्थापत्य कला की दो मुख्य शाखाओं में से एक थी। इसी के अन्तर्गत विरूपाक्ष, पट्टडकल, कैलास, एलोरा और होयसलेश्वर, हलेबिड जैसे विख्यात मंदिरों का निर्माण हुआ था। इस विशाल अध्ययन ग्रंथ में इन प्रसिद्ध मंदिरों के साथ-साथ 250 से भी अधिक अन्य भवनों के स्थापत्य का विश्लेषण किया गया है और इसमें पहली बार द्रविड़ कर्नाटक परम्परा को एक सतत तथा सुसंबद्ध विकास के रूप में स्पष्ट किया गया है।

इस पुस्तक का इसमें अनेक विश्लेषणात्मक रेखाचित्रों के कारण विद्वत्समाज में स्वागत होगा क्योंकि इनसे यह पता चलता है कि इन विशाल एवं महत्त्वपूर्ण भवनों पर किस तरह दृष्टिपात किया जाए। वास्तव में इनसे इनका जटिल स्थापत्य बोधगम्य हो गया है। इससे यह स्पष्ट पता चलता है कि एक मंदिर की रूपात्मक संरचना अव्यक्त को किस प्रकार एक ठोस रूप में अभिव्यक्त करती है और शाश्वत तथा अनंत सत्ता का पहले बहुविध रूपों में अंतरण होता है और फिर वही नाना रूपात्मक वस्तुजगत उस असीम में विलीन हो जाता है, जिसमें वह अलग सत्ता में आया था।

लेखक : ऐडम हार्डी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशंस, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली
1995, पृष्ठ : xix + 810, ग्रंथ सूची, सूचक, हाफ्टॉन चित्र,
158 रेखाचित्र, 217 नक्शे व 3 चार्ट, मूल्य : 2000 रुपए

38. डिक्शनरी ऑफ इंडो-पर्शियन लिटरेचर

इस साहित्य कोश में भारतीय उप-महाद्वीप के फारसी लेखकों का संक्षेप में परिचय दिया गया है। ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों पर उनका आधिपत्य था। यह तथ्य उनके द्वारा रचित ग्रंथों के विस्तार तथा विविधता से प्रमाणित होता है। उनकी कृतियां विविध प्रकार की हैं और विभिन्न विषयों से संबंध रखती हैं। जैसे सूफीवाद, कवियों तथा संतों की चुनी हुई रचनाओं के संग्रह, पैगम्बर की परम्पराओं के भाषांतरण और न्यायशास्त्र विषयक मूल सार-संग्रह, इतिहास, डायरियां, संस्मरण, विज्ञान, चिकित्साशास्त्र, सरकारी विज्ञप्तियां आदि। भारतीय दर्शन और विज्ञान विषयक संस्कृत ग्रंथों के फ़ारसी अनुवादों ने भी इस भारतीय इस्लामिक/फ़ारसी साहित्य में एक नया आयाम जोड़ा। मानव जातीय दृष्टि से एक-दूसरे से भिन्न होते हुए भी इन लेखकों ने बुद्धिबल और जिज्ञासा के प्रयोग में उल्लेखनीय समानता प्रकट की है। अलबेरुनी से इकबाल तक की नौ शताब्दियों में साहित्य की श्रीवृद्धि करने वाले उत्कृष्ट लेखकों की लम्बी परम्परा रही है, जिन्होंने फ़ारसी की प्रतिष्ठा में चार चांद

ाए और अपनी सामूहिक प्रतिभा के द्वारा भारत के वैचारिक भंडार को समृद्ध किया। अनेक कारणों से गुणवत्ता बराबर ी, जिनमें मुख्य थे शासक वर्ग का संरक्षण तथा खुले हाथ से आर्थिक सहायता, विद्वत्ता को मिलने वाला मान-सम्मान और स अवधि में फारसी का दरबारी भाषा होना।

कोशकार : नबी हादी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई -37 हौजखास, नई दिल्ली-110 016
1995, पृष्ठ : xiv + 757, मूल्य : 750 रुपए

9. दि टेम्पल ऑफ मुक्तेश्वर ऐट चौदण्डपुर

कर्नाटक का उत्तरी भाग भारत के उन समृद्ध क्षेत्रों में से एक है जहां कला की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्मारक हुतायत से पाए जाते हैं। यहां ईसा की 10वीं, 11वीं, 12वीं तथा 13वीं शताब्दियों में अनेक राजवंशों अर्थात् कल्याण के ालुक्य, कालचूरी तथा सेउण वंश का शासन रहा है। यह काल सांस्कृति सुरुचि एवं उत्कर्ष का काल था। इसी अवधि ा कालामुख-लाकुल शैव आन्दोलनों का अधिकतम विस्तार हुआ और वीरशैव मत को चरमोत्कर्ष मिला। चौदण्डपुर (धारवाड ेला) में मुक्तेश्वर का मंदिर उस समय की उत्कृष्ट शैली तथा उच्च संस्कृति का सुन्दर नमूना है। वहां बड़े-बड़े सात शिला ट्टों पर मध्ययुगीन साहित्यिक कन्नड भाषा में सुन्दरता से उत्कीर्ण किए गए सात लम्बे शिलालेख है जिनसे इस मंदिर के तिहास का पता चलता है। इनसे स्थानीय शासकों-गुट्टल नरेशों के विषय में बहुत-कुछ जानकारी मिलती है, जो स्वयं को ुप्त वंशीय बतलाते थे। इसके अलावा, मंदिर परिसर में निर्मित कुछ भवनों, देवताओं को भेंट किए गए दान तथा कुछ प्रमुख र्मगुरुओं/महात्माओं के बारे में भी इन शिलालेखों से बड़ी रोचक जानकारी मिलती है। इसमें एक लाकुलशेव संत मुक्तजीयार ौर एक वीरशैव संत शिवदेव के जीवन पर भी प्रकाश डाला गया है। ये संत 19 अगस्त, 1225 ई. को इस स्थान पर आए ा और फिर उन्होंने यहीं पर त्याग-तपस्या तथा आध्यात्मिक उत्कर्ष का लम्बा जीवन बिताया। घोर शैवमत के युग की यह रोहर स्थापत्य तथा मूर्तिकला का उत्कृष्ट नमूना है। यह एक ही प्रस्तर खंड से निर्मित मंदिर है। इस निर्माण शैली को क्कणाचारी शैली या कभी-कभी कल्याण-चालुक्य शैली भी कहते हैं। इसे कल्याण-चालुक्य शैली के नाम से अभिहित करना इसलिए भी उपयुक्त नहीं है क्योंकि इसी शैली के और बहुत से मंदिर कालचूरी, सेउण वंशों के संरक्षण में भी बने हैं। प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक परिचय, सम्पूर्ण पाठ, अनुवाद तथा शिलालेखों का अर्थ, विशद सर्वेक्षण के साथ एक स्थापत्य कलात्मक विवरण तथा एक प्रतिमा-वैज्ञानिक विश्लेषण भी दिया गया है।

लेखक : वसुन्धरा फिलियोजा
स्थापत्य : पिएर सिलवैन फिलियोजा
प्राक्कथन : मुनीश चन्द्र जोशी
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली-110 016
1995, पृष्ठ : xv + 212,
परिशिष्ट, ग्रंथसूची, हाफ्टॉन चित्र 12,
रंगीन चित्र 16, चार्ट 5, मूल्य : 700 रुपए

40. दि ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ नेचर इन आर्ट

यह प्रकाशन इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशन कार्यक्रम के अन्तर्गत ए.के. कुमारस्वामी के संग्रह ग्रंथों व पुस्तकमाला का नौवां पुष्प है। डॉ. कपिला वात्स्यायन द्वारा सम्पादित यह संस्करण स्वयं लेखक के प्रमाणिक संशोधनों प आधारित है।

इस खंड में, कुमारस्वामी ने मध्ययुगीन यूरोप तथा एशिया की कला, विशेषत: भारत की कला के पीछे जो सिद्धान्त है उसकी व्याख्या करने का प्रयास किया है। कुमारस्वामी इसमें भारतीय सिद्धान्त के साथ-साथ चीनी सिद्धान्त को भी प्रस्तुत करते हैं। उनके मतानुसार पहला सिद्धान्त यह है कि कला का अस्तित्व स्वयं अपने लिए नहीं है, यह किसी धार्मिक स्थिति अथवा अनुभूति के माध्यम के रूप में व्यक्त होती है। इस प्रसंग में मध्ययुगीन यूरोप की कला से जो तुलना की ग है वह बहुत ही ज्ञानवर्द्धक है। वे आगे यह दर्शाते हैं कि ये दोनों पुनर्जागरणोत्तर कला से बिल्कुल भिन्न है।

कुमारस्वामी ने प्रथम अध्याय में एशिया में प्रचलित कला के सिद्धान्त का विवेचन किया है। उनका कहना है कि भारतीय कलाकार प्रकृति के व्यामोह में नहीं भटका, अपितु उसने सदा विषय का सच्चा स्वरूप अभिव्यक्त करने का प्रयास किया। दूसरे अध्याय में कुमारस्वामी ने 14वीं शताब्दी के जर्मन रहस्यवादी माइस्तर ऐकहार्ट द्वारा प्रस्तुत मानदंडों के आधार पर मध्यकालीन यूरोप के सौंदर्यशास्त्र की जांच की है। परवर्ती अध्यायों में, भारतीय मूल ग्रंथों के माध्यम से भारतीय कला-दृष्टि का विवेचन किया गया है। साथ ही प्रतिमा वैज्ञानिक अनुदेशों के लिए एक मध्ययुगीन हिन्दू विश्वकोश क विश्लेषण किया गया है जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ आदर्श निरूपण के भारतीय सिद्धान्त, चित्रकला के स्वरूप तथ परिप्रेक्ष्य के उपयोग पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है और अन्तत:, भारत में प्रतिमाओं के उद्भव तथा उपयोग के विषय में अंतिम अध्याय में चर्चा की गई है।

यह पुस्तक कला का इतिहास जानने के इच्छुक पाठकों के लिए ही नहीं अपितु कलाकारों के लिए भी उपयोगी है।

प्राक्कथन, प्रस्तावना, सम्पादन : कपिला वात्स्याय
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
तथा स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा. लि
एल-10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110 016
1995, पृष्ठ : xxv + 189, मूल्य : 350 रुपए

41. एसेज इन आर्किटेक्चरल थ्योरी

यह ग्रन्थ इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशन कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रकाशित की जाने वाली ए.के. कुमारस्वामी की ग्रंथमाला का 10 वां पुष्प है। कुमारस्वामी की स्थापत्य संबंधी ग्रंथमाला का प्रथम खंड था : आनन्द के. कुमारस्वामी-एसेज इन अर्ली इंडियन आर्किटेक्चर (1992), जो उपलब्ध प्रतिमाओं तथा मूलपाठों के सूक्ष्म विश्लेषण पर आधारित एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है जिसका विषय है पारिभाषिक शब्दावली, आयोजन, आकृति विज्ञान, तथा नागरिक बोलचाल की भाषा का वाक्य-विन्यास और प्राचीन भारत में पवित्र वास्तुशिल्प।

"आनन्द के. कुमार स्वामी : एसेज इन आर्किटेक्चरल थ्योरी'' नामक इस द्वितीय खंड में क्रमिक रूप से कुमार स्वामी के उन निबंधों को संकलित किया गया है जो स्थापत्य के भाष्य विज्ञान अर्थात् उसके विधि (कैसे) पक्ष की अपेक्षा "कारण'' (क्यों) पक्ष पर कुमारस्वामी के तेजी से विकासशील चिन्तन के सर्वोत्तम द्योतक हैं।

लेखक : आनन्द के. कुमारस्वामी ;
सम्पादक : मिकाइल डब्लू माइस्तर
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए., लाइब्रेरी बिल्डिंग,
जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110 001.

4. स्तूप एण्ड इट्स टेक्नोलॉजी : ए टिबेटो-बुद्धिस्ट पर्स्पेक्टिव

विश्व के समस्त धार्मिक स्मारकों में, स्तूप का ऐतिहासिक विकास सर्वाधिक लम्बे समय तक अबाध गति से हुआ है। भारत के बाहर विश्व के सभी देशों में जहां-जहां भी बौद्ध धर्म फला-फूला, स्तूप तथा तत्संबंधी स्थापत्य का पर्याप्त विकास हुआ, हालांकि उसका मूल प्रतिरूप भारतीय ही रहा। समय के साथ-साथ, भारत में तथा अन्य एशियाई बौद्ध देशों में भी स्तूप के संरचनात्मक स्वरूप में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए।

प्रस्तुत अध्ययन में यह दर्शाया गया है कि तिब्बत किस प्रकार बौद्ध संस्कृति तथा साहित्य का खजाना बना। साथ ही, इसमें स्तूप स्थापत्य विषयक महत्त्वपूर्ण पुस्तकों पर भी प्रकाश डाला गया है। स्तूप के निर्माण से संबंधित विभिन्न कर्मकाण्डीय क्रियाकर्मों का विवरण दिया गया है और साथ ही तिब्बती-बौद्ध स्तूपों के आठ मूलभूत प्रकारों तथा उनके मुख्य संरचनात्मक घटकों का वर्णन भी किया गया है। ऊपरी सिन्धु घाटी के लेह क्षेत्र में मिले स्तूपों का सर्वेक्षण भी प्रस्तुत किया गया है। अंतिम के परिशिष्ट में चार महत्त्वपूर्ण तिब्बती मूलपाठों का अंग्रेजी में लिप्यन्तरण तथा अनुवाद दिया गया है जिससे पुस्तक का महत्त्व और भी बढ़ गया है।

लेखक : पेमा दोरजी;
प्राक्कथन : एम. सी. जोशी
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर दिल्ली-110 007
1996; पृष्ठ : xxxiv + 189; मूल्य : 450 रुपए.

3. एस्थेटिक्स एण्ड मोटिवेशन्स इन आर्ट एण्ड साइन्स

यह खंड उन बारह शोधपत्रों का संग्रह है जो शांति निकेतन में आयोजित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए आमंत्रित किए गये थे। ये शोधपत्र नोबेल पुरस्कार विजेता एस. चन्द्रशेखर की बीजभूत कृति "ट्रूथ एण्ड ब्यूटी : ऐस्थेटिक्स एण्ड मोटिवेशन्स इन साइन्स" पर आधारित थे। इन शोधपत्रों के लेखक कलाओं, ललित कलाओं तथा विज्ञान विषयों के मर्मज्ञ थे, जिन्होंने अपनी विशेषज्ञता के अलग-अलग विषयों में सर्जनात्मकता, सौन्दर्य और सत्य के विषय में अपने शोध निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं। आशा है, इस प्रकाशन से कलाओं तथा विज्ञानों के क्षेत्र में व्यवसाय करने वाले व्यक्ति परस्पर संवाद के लिए प्रेरित होंगे।

सम्पादक : किरण सी. गुप्ता;
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
न्यू एज इंटरनेशनल प्रा.लि. पब्लिशर्स;
4835/24, अंसारी रोड, नई दिल्ली-110 002;
1996; पृष्ठ : xiii - 183; मूल्य : 450 रुपए.

44. गिफ्ट्स ऑफ अर्थ : टेराकोटास एण्ड क्ले स्कल्पचर्स ऑफ इंडिया

भारत में कार्यरत कुम्हारों की संख्या साढ़े तीन लाख से भी अधिक है, इतनी विश्व के और किसी देश में नहीं है। ह र समुदाय, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, आमतौर पर अपना एक कुम्हार अवश्य रखता है, और नगरों तथा शह की तो बात ही क्या, जहां कुम्हारों की आबादी काफी ज्यादा है। चूंकि ये शिल्पी तरह-तरह की उप-संस्कृतियों, परम्परा तथा पर्यावरणों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, इसलिए उनके बर्तन तथा अन्य उत्पाद भी आमतौर पर कई तरह होते हैं। वे हर किस्म के घरेलू इस्तेमाल के लिए बर्तन बनाते हैं–मिट्टी के साधारण दीपक, हांडी-कूंडे से लेकर आठ फु ऊंचे अनाज के कोठे तक। वे धार्मिक उत्सवों, पर्वों में काम आने वाली प्रतिमाएं बनाते हैं। इनमें से कुछ मूर्तियां छोटे-छोटे खिलौने मात्र होती हैं पर कुछ शानदार हाथी-घोड़ों की मूर्तियां होती हैं जिनकी ऊंचाई 18 फुट से भी अधि होती है–इतनी बड़ी मिट्टी की प्रतिमायें मानवता के इतिहास में शायद ही कभी बनाई गई हैं।

लेखक : स्टीफेन पी. हुयल
प्राक्कथन : कपिला वात्स्याय
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र त
मेपिन पब्लिशिंग प्रा.लि., चिदम्बर
1996; पृष्ठ : 232; मूल्य : 2,250 रुप

घ. कलादर्शन

45. कॉन्सेप्ट्स एण्ड रेस्पान्सिज : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के लिए अंतर्राष्ट्रीय वास्तुशिल्पी डिजाइन प्रतियोगिता

यह अद्वितीय स्थापत्य दायित्व अर्थात् एक विशाल सांस्कृतिक संकुल जो नई दिल्ली में 10 हेक्टेयर क्षेत्र में बनाया जाएगा इसका डिजाइन तैयार करने के आह्वान के उत्तर में देश-विदेश से प्राप्त हुए अनेक प्रारूपों एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रारूप प्रतियोगिता में 37 देशों से 194 प्रविष्टियां प्राप्त हुई। इस पुस्तक में कोई 50 प्रस्तावों को चुनकर प्रस्तुत किया गया है, जिनमें पुरस्कार जीतने वाली वे पांच प्रविष्टियां भी हैं जो विख्यात वास्तुविद् अच्युत पी. कर्नावंदे द्वारा प्रस्तुत की गई थीं। यह पुस्तक सभी तरह के छात्रों एवं वास्तुविदों के लिए उपयोगी सूचना का बहुमूल्य स्रोत है।

प्रस्तावना : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मैपिन पब्लिकेशन प्रा.लि.,
चिदम्बरम्, अहमदाबाद-380 013
1992, पृष्ठ : 184, मूल्य : 1200 रुपए

छायाकंन माध्यम ग्रंथमाला

46. राबारी : ए पेस्टॉरल कॉम्युनिटी ऑफ कच्छ

फ्लावोनी की यह कृति *राबारी-ए-पेस्टॉरल कॉम्युनिटी ऑफ कच्छ* मानव जाति वर्णन की सामग्री के अनावश्यक बोझ दबी है। यह जनसामान्य में प्रचलित परम्पराओं के विषय में, जिन्हें, हम इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की भाषा में ोक परम्परा' कहते हैं, एक बहुमूल्य परिचायक पुस्तक का काम देती है। एक चित्रात्मक पुस्तक के रूप में यह एक च्चकोटि की कला-कृति है और एक वर्णनात्मक सामग्री के रूप में जीवन शैली की एक अभिनव अभिव्यक्ति है जिसमें लेखक अपनी सूक्ष्म दृष्टि के बल पर विषय की पूरी जानकारी दी है। इसे पढ़ने में आनंद आता है।

मूल पाठ एवं छायाचित्र : फ्रांसिस्को डि ओराजी फ्लावोनी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ब्रजवासी प्रिंटर्स प्रा. लि., ई-46ए11,
ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज II, नई दिल्ली-110 020
1990, पृष्ठ : 31 + 100 प्लेटें + ग्रंथ सूची, मूल्य : 575 रुपए

च. आकाश/अंतरिक्ष एवं काल की अवधारणा

47. कॉन्सेप्ट्स ऑफ स्पेस : ऐन्श्येण्ट एण्ड मॉडर्न

इस ग्रंथ में अन्तर्विषयक अध्ययन के क्षेत्र में नई जानकारियां दी गई हैं जिससे यह उन लोगों के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो गया है जो चिन्तनमनन का आंतरिक जीवन और गतिशीलता तथा सक्रियता का बाह्य जीवन जीते हैं। इस द्विविध जीवन का अन्योन्य संबंध और सम्पूर्णता का मूल विषय ही इस खंड में सम्मिलित किए गए बहु-विषयोन्मुख निबंधों की मूलभूत एकता का आधार है।

सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली
1991, पृष्ठ : xxiv + 665 प्लेटें, मूल्य : 1200 रुपए

48. कॉन्सेप्ट्स ऑफ टाइम : ऐन्श्येण्ट एण्ड मॉडर्न

यह खण्ड उन चुने हुए 54 शोधपत्रों का संकलन है, जो नवम्बर, 1990 में नई दिल्ली में हुई संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए थे। प्रत्येक शोधपत्र में उस सर्वव्यापी काल तत्त्व का सूक्ष्मता से विवेचन किया गया है, जिसके चिन्तन में मानव अपने अस्तित्व बोध के आदिकाल से ही ध्यानमग्न रहा है। इन शोधपत्रों को आठ भागों में विभाजित किया गया है : (1) काल : संकल्पनाएँ, (2) काल : दार्शनिक प्रवचन, (3) काल : भू-वैज्ञानिक तथा जीव वैज्ञानिक; (4) काल : सामाजिक तथा सांस्कृतिक; (5) काल : चेतना; और (6) काल : ज्ञानातीततत्त्व तथा सर्वव्यापित्व।

सम्पादक : कपिला वात्स्यायन

सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र त
स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा.
एल-10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110 0
1996; पृष्ठ : xxxviii + 562; मूल्य : 1,250 रु

छ. शैलकला ग्रंथमाला

49. रॉक आर्ट इन दि ओल्ड वर्ल्ड

इस पुस्तक में कुछ ऐसे चुने हुए शोधपत्र प्रकाशित किए गए हैं जो 1988 में डारविन (आस्ट्रेलिया) में आयोजि विश्व-शैलकला महासम्मेलन (कांग्रेस) में प्रस्तुत किए गए थे। पहली बार, अफ्रीका, एशिया तथा यूरोप के महाद्वीपों के इत व्यापक भौगोलिक क्षेत्रों की शैलकला का एक ही पुस्तक में विवेचन करने का सफल प्रयास किया गया है। इस प्रकाशन समाहित शोधपत्र इस बात के विश्वसनीय प्रमाण हैं कि शैलकला का अध्ययन केवल पुरातत्त्व की दृष्टि से ही नहीं अपितु मान जाति, विज्ञान तथा जीवन शैली अध्ययन के लिए भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसका व्यापक परिदृश्य यह दर्शाता है कि वै तो शैलकला अनुसंधान का भी एक इतिहास है पर एक नई ज्ञान विधा के रूप में यह विकास की विभिन्न सरणियों की खो में संलग्न है। बहुत से शोधपत्रों से भारत में हुए व्यापक शोध कार्यों का पता चलता है।

यह अद्वितीय खंड इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की शैलकला अध्ययन संबंधी शृंखला की पहली कड़ी है। यह मान इतिहास तथा कला में रुचि रखने वाले छात्रों तथा विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों के लिए भी उपयोगी है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्याय
सम्पादक : माइकेल लौरब्लांश
वितरक : यू.बी.एस. पब्लिशर्स डिस्ट्रिब्यूटर्स, लि०, नई दिल्ली
1992, पृष्ठ : xxxii + 540, मूल्य : 750 रुपए, 50 डालर (विदेश में)

50. डीअर इन रॉक आर्ट ऑफ इंडिया एण्ड यूरोप

इस पुस्तक में भारत तथा यूरोप की शैलकला में मृग के स्थान का उल्लेख करते हुए आगे चलकर ऐतिहासिक काल में उसके चित्रण से अवगत कराया गया है।

पुस्तक के भारत संबंधी भाग में अनेक स्थलों से प्राप्त बहुमूल्य साक्ष्य को भी प्रस्तुत किया गया है। मनुष्य के जीवन में तथा उन्मुक्त प्रकृति में मृग के गंभीर एवं संवेदनशील पक्ष का जो मार्मिक चित्रण भारतीय साहित्य परम्परा में उपलब्ध है उसकी एक झलक दिखाई गई है। यूरोप संबंधी भाग में मृग के विषय में गढ़ी गई जन्तु कथाओं, मिथकों तथा दन्तकथाओं के साथ-साथ यह भी बताया गया है कि यूरोप के किन-किन भागों में मृगों की कौन-कौन सी प्रजातियां पाई जाती हैं।

सम्पादकगण : गियाकामो कैमुरी, ऐंजलो फोसाती तथा यशोधर मठपाल
(गैब्रियला गट्टी तथा गियानेट्टा मुसितेली के योगदान के साथ)
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
वितरक : स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा. लि.,
एल-10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110 016
1993, पृष्ठ : xvi + 170, प्लेटें, मूल्य : 450 रुपए

1. रॉक आर्ट इन कुमाऊं हिमालय

यह इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा अपने 'आदि दृश्य' कार्यक्रम के अन्तर्गत शैल कला विषय पर प्रकाशित तीसरी तक है।

यह पुस्तक कुमाऊं हिमालय में, जो अपेक्षाकृत एक अज्ञात क्षेत्र है, पूर्व-ऐतिहासिक शैल कला के विभिन्न पक्षों को उजागर रती है। इस कृति में अब तक अज्ञात रहे विभिन्न शैल कला तथा शैल शरण स्थलों का विवरण देने का प्रयास किया गया । इस खंड में शामिल की गई सामग्रियां अति विशिष्ट तथा निश्चित रूप से नई हैं। इस क्षेत्र में देखे गए शैल चित्र मनुष्य ा प्रकृति के पारस्परिक सामान्य संबंधों का एकपक्षीय निरूपण प्रस्तुत करते हैं। कुमाऊं अंचल में मिलने वाली सर्वाधिक चक चित्रकारियां विभिन्न प्रकार के नृत्य दृश्य प्रस्तुत करती हैं, उनके बाद ढोल पीटने वालों, शिकारियों तथा अन्य दृश्यों चित्रों की बारी आती है।

इस पुस्तक में लेखक अपनी सरल भाषा में विषय वस्तु का विवेचन करते हुए क्षेत्र की शैल कला को सुरक्षित रखने की कनीक, शैली तथा वर्तमान स्थिति का विवरण देता है और साथ ही पूर्व-ऐतिहासिक काल के कलाकार की कलात्मक गुणवत्ता था प्रेरणा स्रोत के बारे में बताता है। इस खंड में विषय को स्पष्ट करने के लिए उदाहरणस्वरूप दिए गए चित्र जलरंगों बने हैं जो लेखक ने वहां क्षेत्र में ही बनाए थे। ये चित्र काफी रोचक हैं और मध्य हिमालय अंचल की शैल कला के बारे सही प्रभाव छोड़ते हैं।

इन चित्रकारियों के अतिरिक्त, कुमाऊं क्षेत्र में पाई गई नक्काशी तथा शैल कृतियां रूप तथा विषय वस्तु की दृष्टि से बहुत निराली हैं और पड़ोसी हिमाचल प्रदेश के पड़ोसी क्षेत्र तथा ऊपरी हिमालय अंचल में लद्दाख क्षेत्र में प्राप्त कृतियों से सर्वथा न्न हैं।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : यशोधर मठपाल
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
आर्यन बुक इंटरनेशनल,
पंजीकृत कार्यालय : 4378/4-बी पूजा अपार्टमेंट्स,
4, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
1995; पृष्ठ : xxiv + 137, मूल्य : 700 रुपए

ज. कला एवं सौन्दर्यशास्त्र ग्रंथमाला

52. आर्ट एज डायलॉग

यह पुस्तक सौन्दर्यानुभूति की संकल्पना को समझने के लिए एक पूर्णतः नई विधि पर ध्यान केन्द्रित करती है। इसके विषय क्षेत्र में मनुष्य तथा कला के पारस्परिक संबंधों की पूर्व-भाषाई, भाषाई तथा परा-भाषाई अवस्थाओं पर प्रकाश डाला गया है।

लेखक : गौतम विश्वास
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एफ-52,
बालि नगर, नई दिल्ली-110 015
1995, पृष्ठ : + 155 मूल्य : 200 रुपए

53. इंटरकल्चरल डायलॉग एण्ड दि ह्यूमन इमेज

इस पुस्तक में प्रो० मौरिस फ्रीडमैन के भाषणों, चर्चाओं तथा विचार-विनिमयों का संग्रह है जो कई स्तरों पर हुए उ अन्तर-सांस्कृतिक संवादों के दौरान प्रस्तुत किए गए थे जो मानव कल्पना की परिधि में आते हैं। यह सब इन्दिरा गांध राष्ट्रीय कला केन्द्र में, दार्शनिक मानव विज्ञान, कला-दर्शन, सामाजिक विज्ञान दर्शन, धर्म दर्शन और नैतिक दर्शन आ विषयों पर चल रहे कार्य की सम्पूर्ण दृष्टि से मेल खाता है।

लेखक : मौरिस फ्रीडमै
प्राक्कथन : कपिला वात्स्याय
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथ
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एच.-12
बालि नगर, नई दिल्ली-110 01
1995, पृष्ठ : 299, मूल्य : 600 रुपए

झ. प्रकृति

54. प्रकृति : दि इंटिग्रल विजन

इस पुस्तक में एक के बाद एक हुई परस्पर संबद्ध उन पांच संगोष्ठियों की शृंखला के निष्कर्षों पर प्रकाश डाला गय है, जिनसे अन्तर-सांस्कृतिक तथा बहु-विषयक समझबूझ को प्रोत्साहन मिला था। यह पांच खंडों का सैट अपनी किस्म क पहला ग्रंथ है जिसमें महाभूतों (आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी आदि) की इस संकल्पना पर विचार किया गया है कि वे सभ्यता तथा संस्कृति के विकास के लिए उत्तरदायी हैं।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एफ-12,
बालि नगर, नई दिल्ली-110 015
1995, पृष्ठ : xviii + 190, मूल्य : 600 रुपए

55. प्राइमल एलिमेंट्स : दि ऑरल ट्रडिशन

प्रथम खंड उन सामंजस्यपूर्ण समुदायों के उच्चारण के संबंध में है जिनका तत्त्वों/महाभूतों के साथ अबाध गति से सत्त संवाद चलता है। प्रकृति समुदायों के लिए बुद्धि विद्‌ग्धता का विषय नहीं है, अपितु यह यहां और इसी समय के जीवन का प्रश्न है, जो उनके आद्य मिथकों और कर्मकाण्डों में प्रकट होता है। इनके द्वारा प्रकृति की उपासना की जाती है ताकि मनुष्य विश्व के अभिन्न अंग के रूप में रह सके।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : सम्पत नारायण
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एफ-12,
बालि नगर, नई दिल्ली-110 015
1995, पृष्ठ : xiv + 153, मूल्य : 600 रुपए

56. वैदिक, बुद्धिस्त एण्ड जैन ट्रडिशन्स

दूसरे खंड में वैदिक कर्मकांड, उपनिषदिक दर्शन, ज्योतिष शास्त्र और बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म में महाभूतों की संकल्पना अभूतपूर्व विवेचन पर विचार किया गया है। इसमें भारत की भिन्न-भिन्न विचारधाराओं के बीच दृष्टिकोणों की अनेक मानताओं तथा भिन्नताओं को भी उजागर किया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एफ-12,
बालि नगर, नई दिल्ली-110 015
1995, पृष्ठ : xviii + 190, मूल्य : 600 रुपए.

57. दि आगमिक ट्रडिशन एण्ड दि आर्ट्स

इस तीसरे खंड में सुव्यवस्थित रूप से यह बताया गया है कि भारतीय कलाओं तथा उनकी आगमिक पृष्ठभूमि में महाभूतों की अभिव्यक्ति किस प्रकार हुई है। यहां संरचनात्मक कलाओं को वास्तुविद, मूर्तिकार, चित्रकार, संगीतज्ञ तथा नर्तक की अलग-अलग अनुकूल स्थिति से, उनके आद्य स्तर पर समझने का फिर से प्रयास किया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बेट्टिना बॉमर
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एच-12,
बालि नगर, नई दिल्ली-110 015
1995, पृष्ठ : xiv + 193, मूल्य : 600 रुपए.

58. दि नेचर ऑफ मैटर

चौथे खंड में मात्रा सिद्धान्त और प्रारंभिक कणों, सजीव पदार्थ का विकास, पदार्थ का स्वरूप तथा कार्य, वैज्ञानिक दर्शन तथा बौद्ध चिन्तन, पदार्थ के विषय में सांख्य सिद्धान्त, प्राचीन तथा मध्ययुगीन जीवविज्ञान, रहस्यवाद तथा आधुनिक विज्ञान, परम्परागत ब्रह्मांड विज्ञान, पदार्थ तथा औषधि, पदार्थ तथा चेतनता आदि पर महत्त्वपूर्ण चर्चा की गई है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : जयंत वी. नारलीकर
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज एच-12,
बालि नगर, नई दिल्ली-110 015
1995, पृष्ठ : xiv + 228, मूल्य : 600 रुपए.

59. मैन इन नेचर

पांचवें तथा अंतिम खंड में कुछ विशेष समाजों के मिथक तथा ब्रह्मांड विज्ञान और वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, मा विज्ञानियों, पारिस्थिति-विज्ञानियों तथा कलाकारों के अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की संस्कृति पर विचार किया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्याय
सम्पादक : बैद्यनाथ सरस्व
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र त
डी. के. पिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एच-1
बालि नगर, नई दिल्ली-11001
1995, पृष्ठ : xii + 270,. मूल्य : 600 रूप

ञ. जीवन शैली अध्ययन ग्रंथमाला

60. कॉम्प्यूटराइजिंग कल्चर्स

यह पुस्तक एक यूनेस्को-कार्यशाला के कार्य-विवरण का भाग है, जो नई दिल्ली में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परिसर में आयोजित की गई थी, और उसका विषय था, "संकर सांस्कृतिक जीवन-शैली अध्ययन, बहु-माध्यमिक कम्प्यूटरकरणीय प्रलेखन के साथ"। इस पुस्तक में संग्रहीत निबंध सांस्कृतिक डेटा के प्रलेखन तथा कम्प्यूटरीकरण से संबंधित सैद्धान्तिक तथा तकनीकी समस्याओं का विवेचन करते हैं।

इस शानदार पुस्तक के प्रतिभाशाली लेखकों ने ऐसी नई संकल्पनाओं तथा उपयुक्त तकनीकों का पहली बार उपयोग करने का प्रयास किया है जो संस्कृतियों के बहु-आयामी संरूपण को समझने में सहायक होती हैं। स्वदेशी श्रेणियों पर बल देते हुए और अनेक दृष्टि बिन्दुओं को अपनाते हुए, चिन्तनात्मक दृष्टिकोण स्पष्ट किया गया है।

मनुष्य द्वारा कम्प्यूटर के इस्तेमाल के दौरान जो भी सैद्धांतिक तथा विध्यात्मक समस्याओं का अनुभव किया जाता है, उनका, अनेक लेखकों ने बड़ी कुशलता के साथ निरूपण किया है। ऐसा करते हुए लेखकों ने भारत, पाकिस्तान, थाईलैंड, इंडोनेशिया तथा जापान विषयक सांस्कृतिक डेटा के विषय में व्यापक दृष्टिकोण अपनाया है। कम्प्यूटर वैज्ञानिकों तथा तकनीकी विशेषज्ञों ने ऐसे आकर्षक उदाहरण प्रस्तुत किए हैं जिनसे बहु-माध्यमिक कम्प्यूटरकरणीय प्रलेखन कार्य के सम्पन्न करने में हार्डवेयर/ सॉफ्टवेयर की उपादेयता स्पष्ट प्रमाणित होती है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
न्यू एज इंटरनेशनल (प्रा. लि.) प्रकाशक,
4835è24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002,
1995 : पृष्ठ : xx + 242;

61. दि रिच्युअल ऑफ तेय्यम एण्ड भूताराधना

इस पुस्तक में भूताराधना तथा तेय्यम की कर्मकाण्डीय कला का विवरण दिया गया है, जैसी कि वह केरल तथा कर्नाटक कुछ आदिम जातीय समुदायों में देखने को मिलती है। तेय्यम तथा भूत परम्पराओं की शोध संबंधी संभावनाओं को देखते इस पुस्तक में प्रामाणिक सामग्री संग्रहीत करने तथा उसकी व्याख्या करने का प्रयास किया गया है।

इस पुस्तक में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि जन-जीवन में किस प्रकार अतीन्द्रिय एवं दुर्बोध घटनाएं घटित ती हैं और फिर वे लोक परम्परा में किस प्रकार प्रतिबिम्बित होती हैं। तेय्यम भूत-प्रेतात्माओं से क्षतिपूर्ति प्राप्त करने के ए अभिनीत किया जाता है। लेखक ने इस कर्मकाण्ड की विभिन्न क्रियाओं का विवरण देने का प्रयास किया है। प्रस्तुतिकर्ता क्रियाओं में इतना मग्न हो जाता है कि वह अपने अस्तित्व को भूलकर, मानसिक रूप से प्रकृति की अदृश्य शक्तियों के तार में पहुंच जाता है और देवी-देवताओं का अभिनय करते हुए अपने अलौकिक हाव-भाव द्वारा तथाकथित दैवी शक्ति का दर्शन करता है। इस पुस्तक में तेय्यम की कर्मकाण्डीय कला से जुड़े हुए अन्य अनेक कलारूपों का भी विवेचन किया गया , जैसे, कर्मकाण्डीय चित्रकारियों की कला, शीर्ष-परिधान बनाने से संबंधित शिल्प एवं पद्धतियां, मंचनीय कलाएं आदि।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : सीता के. नाम्बियार
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
तथा नवरंग बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स,
आर.बी.-7 इंद्रपुरी, नई दिल्ली-110002
1996; पृष्ठ : xvi + 159;

ः. क्षेत्र सम्पदा ग्रंथमाला

62. तंजवुर बृहदीश्वर-एन आर्किटेक्चरल स्टडी

चोल स्मारकों, विशेषत: तंजवुर स्थित बृहदीश्वर मंदिर तथा गंगैकोंडा चोलपुरम मंदिर ने पुरातत्त्वविदों, पुरालेख शास्त्रियों, साहित्यिक समालोचकों, संगीतज्ञों, नर्तकों, शिल्प विशेषज्ञों, समाज वैज्ञानिकों तथा मानव वैज्ञानिकों का ध्यान अपनी और आकर्षित किया है।

बृहदीश्वर मंदिर के स्थापत्य पर प्रकाशित यह ग्रंथ एक परियोजना के अन्तर्गत प्रकाशित किए जाने वाले तकनीकी प्रबन्धों की शृंखला का पहला खंड है। यह वस्तुत: समीचीन ही है कि स्मारक की स्थापत्य योजना (नक्शा) का विवेचन मंदिर की भीतरी तथा बाहरी दीवारों पर उत्कीर्ण प्रतिमाओं तथा लेखों, गर्भगृह में उपलब्ध भित्ति चित्रों, ऊपरी मंजिलों, के 'कारणों', शिलालेखों और अन्य सभी विषयों से संबंधित अध्ययनों से पहले किया जाना चाहिए। एक मानक कूट (कोड) तैयार कर लिया गया है, जिसका परवर्ती सभी अध्ययनों में पालन किया जाएगा। यह एक ऐसा स्मारक है जो इस क्षेत्र को केन्द्रीयता प्रदान करता है और अन्य पक्षों पर आगे अध्ययन के लिए आधारभूत ढांचे का काम करता है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : पिएर पिनो
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
आर्यन बुक इंटरनेशनल, 4378e4-बी. पूजा अपार्टमेंट्स,
4, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
1995; पृष्ठ : 24

63. गोविन्ददेव–डायलॉग इन स्टोन

यह खंड पहली बार गोविन्ददेव के डिजाइन तथा प्रतिमा विज्ञान के विस्तृत अध्ययन को, छायाचित्रों तथा आलेखों, पूर्णत: सुसज्जित रूप में प्रस्तुत करता है। अन्य अध्यायों में इसके निर्माण तथा औरंगजेब के शासन में इसे अपवित्र कि जाने के इतिहास पर चर्चा की गई है। साथ ही यह भी बताया गया है कि जब श्री गोविन्द देव की प्रतिमा को जयपुर उसके वर्तमान देवालय तक लाया गया तो उस यात्रा के मार्ग में कहां-कहां मंदिर बनाए गए। पाण्डुलिपियों के अभिलेखागा से प्राप्त प्रलेखों से मंदिर के पुजारियों की वंशपरम्परा का पता चलता है और पाण्डुलिपिक स्रोतों से मंदिर की कर्मकाण्डी गतिविधियों का विवरण प्राप्त होता है। लेखकगण भारत, अमरीका तथा यूरोप के जाने-माने विद्वान हैं।

सम्पादक : मार्गरेट एच. के
प्रस्तावना : कपिला वात्स्याय
प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्
वितरणकर्ता : आर्यन बुक्स इंटरनेशन, 4378/4 बी, पूजा अपार्टमेंट्स,
4, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
1996; पृष्ठ : xxi + 305, चित्र, 267, मूल्य : 2000 रुपए

64. ईवनिंग ब्लॉसम्स : टेम्पल ट्रडिशन ऑफ सांझी इन वृंदावन

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में 'सांझी' ने मंदिर कला का रूप ले लिया था। प्रारंभ में कुमारी कन्याओं द्वारा घर की दीवारों पर गोबर पुती पृष्ठभूमि पर बनाई जाने वाली सांझी आगे चलकर पुजारियों द्वारा मंदिर के भीतर वेदी के ऊपर बनाई जाने लगी। इस प्रकार की सांझी, जो संभवत: धूलिचित्र बनाने की प्राचीन कला से निकली थी, प्रारंभ में प्राकृतिक पदार्थों यानी कुमकुम, गुलाल आदि से तूलिका की सहायता से बनाई जाती थी; पर अब इसमें रंगीन पाउडरों का इस्तेमाल होने लगा है। जंगली फूलों का स्थान अब बेलों ने ले लिया है। जिनसे "हौदा" यानी डिजाइन का मध्य भाग बनता है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : असिमकृष्ण दास
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र,
तथा स्टर्लिंग पब्लिशर्स, प्रा. लि.,
एल-10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110 016
1996; पृष्ठ 113, प्लेटें : 58, मूल्य : 750 रुपए

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सचित्र पोस्ट कार्डों की सूची (1994 तक)

1. इंडियन पिजन्स एण्ड डव्ज, 1988, मूल्य : 10 रुपए प्रति सैट
2. हिमालय पर्वतमालाओं की दृश्यावली, 1988, मूल्य : 10 रुपए प्रति सैट
3. भीमबेटका के शैल चित्र, 1988, मूल्य : 10 रुपए प्रति सैट
4. ब्रूनर की चित्रकारियां, 1988, मूल्य : 10 रुपए प्रति सैट
5. दि इंडियन पिजन्स एण्ड डव्ज, 1990, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
6. दि बर्ड्स ऑफ पैराडाइज, 1990, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
7. दि कैलिको पेंटिंग एण्ड प्रिंटिंग, 1990, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
8. भारत में प्राचीन स्थापत्य कला, 1990, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
9. दि आर्ट ऑफ दुनहुआंग ग्रोटोज, 1992, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
10. राजा लाला दीनदयाल के छायाचित्र, 1993, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
11. भीमबेटका की शैल-कला, 1993, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
12. चीन के मार्ग से भारत की सुरम्य यात्रा, 1993, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट

ड. कैटलॉग

1. खम् : स्पेस एंड दि एक्ट ऑफ स्पेस, 1986
2. काल : ए मल्टीमीडिया प्रेजेंटेशन ऑन टाइम, 1990-91
3. मोगाओ ग्रोट्टोज दुनहुआंग : बुद्धिस्त केव पेटिंग्स फ्रॉम चाइना, 1991
4. प्रकृति : मैन इन हारमनी विद एलीमेंट्स, 1993
5. ऋत: ऋतु: कास्मिक आर्डर एण्ड साकिल ऑफ सीज़न्स, 1996

अनुबन्ध-9

फिल्म/वीडियो प्रलेखनों की सूची

नृत्य/अभिनय

1. **बिदेसिया**
   राजन द्वारा
   निर्देशित

"बिदेसिया'' बिहार का एक जनप्रिय लोक-नाट्य रूप है जो लुप्त होने के किनारे पर है। इस प्रलेखन के दो भाग हैं-(1) "बिदेसिया'' के निर्माता श्री ठाकुर का जीवन वृत्त, (30 मिनट), और (2) तीन लोक-नाटक जो बिहार में स्थानीय कलाकारों के साथ मंचित और फिल्मांकित किए गए हैं।

2. **महारास**
   अरिबाम श्याम शर्मा
   द्वारा निर्देशित

रासलीला मणिपुर की बहु-गौरवमयी संस्कृति का प्रमुख अंग है। इस फिल्म में इम्फाल के श्री गोविन्द जी के मंदिर में वस्तुत: प्रस्तुत 'महारास' का फिल्मांकन किया गया है।

गुरु-शिष्य परम्परा

1. **असगरी बाई**
   श्याम शर्मा
   द्वारा निर्देशित

इस फिल्म में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन संगीत की महान् विभूति 85 वर्षीया असगरी बाई के साथ उनके जीवन तथा कला पर कलामर्मज्ञों द्वारा की गई गंभीर भेंट वार्ता प्रस्तुत की गई है।

महान् गुरुजन

1. **एलिजाबेथ ब्रूनर**
   उषा जोशी
   द्वारा निर्देशित

हंगरी की प्रसिद्ध चित्रकार एलिजाबेथ ब्रूनर, जो इस समय 80 वर्ष से अधिक आयु की हैं, अपने समकालीन महानुभावों जैसे श्री बी.सी. सान्याल, डॉ. लोकेशचन्द्र, डॉ. कपिला वात्स्यायन और गेज़ा बेथलन फाल्वी के साथ वार्तालाप में अपने जीवन तथा कला के विषय में अपने रोचक संस्मरण इस फिल्म में प्रस्तुत करती हैं।

2. **रहमत खान लंगा**
   (केवल श्रव्य)
   दलीप कुमार द्वारा
   निर्देशित
   भेटवार्ताकार : प्रिया देश

रहमत खान लंगा राजस्थान के एक जाने-माने लोक कलाकार हैं, जो हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन संगीत को राजस्थान की लोक गीत शैली के साथ मिलाकर अपनी 'बंदिश' को सजधज के साथ अनूठे ढंग से प्रस्तुत करते हैं। इस रिकार्डिंग में उनकी भेंटवार्ता तथा संगीत प्रस्तुति दोनों का सुंदर संगम है।

अ य

1.	**गंभीर भेंटवार्ता एवं साक्षात्कार** गोपाल सक्सेना एवं निर्देशित	गंभीर साक्षात्कारों की इस शृंखला में कुछ सुप्रसिद्ध महानुभावों एवं विद्वानों, जैसे डॉ. राजा राव (लेखक), कु० ऐन्न मैरी शिम्मेल (सूफीवाद की अध्यापिका विदुषी), डॉ. प्रेमलता शर्मा (संगीत विज्ञानी) तथा प्रो० फ्रित्स स्टाल (संस्कृत विद्वान् एवं दार्शनिक) से डॉ. कपिला वात्स्यायन द्वारा भेंटवार्ता की गई। अपरंच, भारत के विख्यात पुरातत्त्वज्ञ डॉ. कृष्ण देव से एम.सी. जोशी ने साक्षात्कार किया।
2	**शास्त्रीय नृत्य**	देश की कुछ जानी-मानी शास्त्रीय नृत्यांगनाओं, जैसे मालविका सारुक्कै (भरतनाट्यम), भारती शिवाजी (मोहिनीअट्टम), तथा माधवी मुदगल (ओडिसी) की नृत्य प्रस्तुतियों को सी.पी.सी. दूरदर्शन में रेकार्ड किया गया है। इनके कुछ अंशों का उपयोग इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की "गीतगोविन्द" विषयक बहु-माध्यमिक परियोजना में किया जाएगा। इन उद्धरणों को ताजगी प्रदान करने के लिए डॉ. कपिला वात्स्यायन ने इनमें से कुछ कलाकारों के साथ स्टूडियों में नृत्य की कुछ बारीकियों, तकनीकीबातों तथा सूक्ष्म भेदों के विषय में चर्चा की। नृत्यांगनाओं द्वारा विषय को और स्पष्ट करने के लिए नृत्य प्रदर्शन भी किया गया।

र्जन/प्राप्ति

(क) इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्रोतों से निम्नलिखित मशहूर फिल्में तथा वीडियों ार्यक्रम प्राप्त किए :-

(1) **स्टोरी ऑफ इन्टीर्गेशन**	:	गौतम हलदर द्वारा निर्देशित
(2) **कृष्णा इन स्प्रिंग**	:	देबेन भट्टाचार्य द्वारा निर्देशित
(3) **राग**	:	देबेन भट्टाचार्य द्वारा निर्देशित
(4) **जीसस ऐंड दि फिशरमैन**	:	कृष्णराव केशव द्वारा निर्देशित
(5) **राणप्पा टेम्पल**	:	कृष्णराव केशव द्वारा निर्देशित
(6) **तेरुकूतु**	:	राम नारायण द्वारा निर्देशित
(7) **आर्टिस्टिक हाइट्स**	:	कु० चन्द्रमणि द्वारा निर्देशित

(ख) दूरदर्शन द्वारा "महान् गुरुजन शृंखला" (ग्रेट मास्टर्स सिरीज़) के अन्तर्गत प्रस्तुत किए गए, विख्यात व्यक्तित्त्वों के विषय में निम्नलिखित कार्यक्रम भी इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सांस्कृतिक अभिलेखागार में जोड़े गए :-

(I) सत्यजित राय

(II) जतिन दास

(III) वृंदावन लाल वर्मा

(IV) सी.आर. आचाररुलु

(V) निखिल घोष

(VI) पंडित रामनारायण

(VII) डॉ. शिवराम कारन्त

(VIII) भूपेन हजारिका

(IX) किशन महाराज एवं के. शिवरामन उमायलपुरम के. शिवरामन

आन्तरिक प्रलेखन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा आयोजित विभिन्न संगोष्ठियों/कार्यशालाओं/समारोहों के श्रव्य तथा दृश्य प्रलेखन आन्तरिक रूप से केन्द्र में ही तैयार किए गए। इनमें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण थे जनवरी, 1996 में आयोजित "ऋत-ऋतु" प्रदर्शनी के श्रव्य अभिलेख तथा निश्चल चित्र।

अनुबन्ध - 10

अप्रैल, 1995 से 31 मार्च, 1996 तक हुई गतिविधियों/घटनाओं की तालिका

	आयोजित वार्ताएं/ समारोह	दिनांक
1.	"पहचान के धागे : राबारियों की कशीदाकारी व सजावट" विषय पर जूडी फ्रैटर का भाषण	03-04-1995
2.	"19-20 वीं शताब्दी में रूसी इतिहास एवं संस्कृति" विषय पर आंतरिक चर्चा	06-04-1995
3.	"एशियाटिक सोसाइटी और भारत के इतिहास का निर्माण" विषय पर डॉ. ओ.पी. केजरीवाल का भाषण	24-04-1995
4.	"राजकुमार विक्रमादित्य का पिता कौन है ? शिवदास की वेतालपचविंशतिका में प्रतीकवाद" विषय पर डॉ. चन्द्र राजन का भाषण	28-04-1995
5.	फिल्म शो : "रिडाफाइनिंग दि आर्ट्स"-निर्देशक अरुण कौल	04-05-1995
6.	"माइक्रोफिल्मों के कैटलॉग तथा पुनरुद्धार की प्रणाली" विषय पर आंतरिक चर्चा	10-05-1995
7.	"भारत की मुद्रा टंकण कलाएं" विषय पर संगोष्ठी	17-05-1995 और 18-05-1995
8.	"खगोल वैज्ञानिक समय" विषय पर डॉ. निरुपमा राघव का भाषण	22-05-1995
9.	"गुणवत्ता प्रबन्ध-1" विषय पर आंतरिक चर्चा	23-05-1995
10.	"गुणवत्ता प्रबन्ध-2" विषय पर आंतरिक चर्चा	24-05-1995
11.	"पाण्डुलिपि विज्ञान तथा लिपि-विज्ञान" विषय पर कार्यशाला	05-06-1995 से 24-05-1995 तक
12.	"चतुर्वेदी संग्रह" विषय पर आंतरिक चर्चा	06-06-1995
13.	"प्राचीन मिस्र'' विषय पर प्रो० लौरी बरगेस का भाषण	08-06-1995
14.	"शास्त्राचार एवं लोकाचार" विषय पर आंतरिक चर्चा	14-06-1995
15.	"प्रलेखन टी. बृन्दा" विषय पर आंतरिक चर्चा	22-06-1995
16.	"कुमाऊँ की पहाड़ियां" विषय पर श्री विलियम विनान्स का भाषण एवं स्लाइड शो	28-06-1995
17.	(क) "टैगोर की आवाज"	29-06-1995

(ख) "गीतगोविन्द से अष्टपदी" विषयों पर आंतरिक ऑडियो-रिकार्डिंग/रिले

18.	"नीचे से त्याग" विषय पर डॉ. विनय कुमार श्रीवास्तव का भाषण	30-06-1995
19.	"पुलिस तथा नागरिक" विषय पर श्री वेद मारवाह का भाषण	07-07-1995
20.	"यू.एन.डी.पी. प्रोजेक्ट" विषय पर आंतरिक चर्चा	12-07-1995
21.	फिल्म शो : "अभिनय दर्पण" सरस्वती स्वामिनाथन द्वारा निर्देशित	19-06-1995
22.	फिल्म शो : (1) कलामण्डलम् कल्याणिक् कुट्टी अम्मा द्वारा मोहिनी अट्टम, सरस्वती स्वामिनाथन द्वारा निर्देशित (2) "उदयशंकर", देबेन भट्टनाचार्य द्वारा निर्देशित	20-06-1995
23.	फिल्म शो : (1) "कलर्स ऑफ एब्सेन्स", अरुण खोपकर द्वारा निर्देशित (2) "गगनेन्द्रनाथ टैगोर", आलोक बनर्जी द्वारा निर्देशित	21-07-1995
24.	"काल, अमरत्व तथा नई भौतिकी" विषय पर श्री सी.के. राजू का भाषण	28-07-1995
25.	"प्राथमिक शिक्षा में स्वदेशी प्रयोग" विषय पर संगोष्ठी	03-08-1995
26.	"पारिस्थितिकी : बुद्धिमानी की परम्परा" विषय पर संगोष्ठी	07-08-1995 व 08-08-1995
27.	"पुस्तकों के कैटलॉग निर्माण तथा पुनरुद्धार की प्रणाली" विषय पर आंतरिक चर्चा	09-08-1995
28.	"भ्रमरगीत'' पर वीडियो फिल्म शो	17-08-1995
29.	"प्रतिबद्धता तथा लेखक का संकट" विषय पर श्री अमृत राय का आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारक व्याख्यान	19-08-1995
30.	"शंकर का संदेश : यह ज्ञान की भक्ति है अथवा ज्ञानी की भक्ति है" विषय पर प्रो० वी० कृष्णमूर्ति का भाषण	25-08-1995
31.	"आद्य पारिस्थितिकी-1" विषय पर आंतरिक चर्चा	23-08-1995
32.	"आद्य पारिस्थितिकी-2" विषय पर आंतरिक चर्चा	30-08-1995
33.	"स्लाइडों के कैटलॉग निर्माण तथा पुनरुद्धार की प्रणाली" विषय पर आंतरिक चर्चा	06-09-1995
34.	"पुनर्जागरण मानस" विषय पर डॉ. उत्पल के. बैनर्जी का भाषण	11-09-1995

35.	फिल्म शो : "रावण छाया"	04-10-1995
36.	"धरती और बीज" विषय पर श्री राजेन्द्र राजन चतुर्वेदी का भाषण	20-09-1995
37.	"बौद्ध जातक कथाओं का उद्भव तथा विकास" विषय पर पंडित सातकड़ि मुखोपाध्याय का भाषण	22-09-1995
38.	"नेपाल में तंत्र परम्परा" विषय पर डॉ. मार्क दिक्जकोवस्की का भाषण	26-09-1995
39.	"चम्बा (हिमाचल प्रदेश) में उस्ताद चित्रकार" विषय पर डॉ. एबरहर्ड फिशर का भाषण	06-10-1995
40.	"गांधी जी का पर्यावरणवाद" विषय पर डॉ. टी.एन. खोशू का भाषण	11-10-1995
41.	"सभ्यतात्मक समझबूझ की ओर" विषय पर आंतरिक चर्चा	18-10-1995
42.	"प्रतीक तथा आख्यान : समकालीन आस्ट्रेलियाई वस्त्र" प्रदर्शनी का उद्घाटन	30-10-1995
43.	"परमात्मा की नारी कृति : एक चित्रकार का नारी विषयक चिन्तन" विषय पर सिबैस्टिना पापा द्वारा प्रस्तुत प्रदर्शनी का उद्घाटन	01-11-1995
44.	"आस्ट्रेलियाई समकालीन वस्त्र" विषय पर कु० पामेला गॉन्ट का भाषण	03-11-1995
45.	"वियतनाम तथा कम्बोडिया की कला" विषय पर संगोष्ठी	08-11-1995
46.	"संसार की संकल्पना : सामाजिक सिद्धान्त तथा अनुसंधान के लिए तात्पर्य" विषय पर प्रो. टी.के. ऊमन का भाषण	13-11-1995
47.	"भारत-चीन : परस्पर दृष्टि" विषय पर संगोष्ठी	16-11-1995
48.	आंतरिक फिल्म शो : (1) "दि रिक्लूज", अरविन्द सिन्हा द्वारा निर्देशित (2) "जलतरंग" ए.एस. गणेशन द्वारा निर्देशित	29-11-1995
49.	"मौलाना दाउद तथा चंडायन" विषय पर प्रो० श्याम मनोहर पाण्डे का भाषण	01-12-1995
50.	वीडियो फिल्म की आंतरिक स्क्रीनिंग : (1) कावेरी गांग (2) भूपेन हजारिका	13-12-1995
51.	"ऋत : ब्रह्मांड व्यवस्था तथा अस्तव्यवस्तता" विषय पर संगोष्ठी	18-12-1995 से 22-12-1995 तक
52.	"जापान का परम्परागत तथा समकालीन नृत्य" विषय पर प्रो० सुमिओं मोरीमिरी का सोदाहरण भाषण	24-12-1995

53.	"ऋत-ऋतु" ब्रह्मांड व्यवस्था तथा ऋतु चक्र, विषयक प्रदर्शनी का उद्घाटन	18-12-1995
54.	"वाक्" विषय पर प्रो. आर. पणिक्कर का भाषण एवं संगोष्ठी	10-01-1996
55.	"उत्तरांचल : एक कलाकार की दृष्टि में" विषय पर श्री विलियम विनान्स का व्याख्यान	17-01-1996
56.	"फिल्म शो : वाल्मीकि रामायण''	18-01-1996
57.	प्रो. बी.कुमार भट्टाचार्य द्वारा प्रो. एन.के. बोस स्मारक व्याख्यान	22-01-1996 से 23-01-1996
58.	"गिफ्ट्स ऑफ दि अर्थ" पुस्तक का विमोचन समारोह	08-02-1996
59.	"नीले-बर्फीले स्वप्न लोक में : पश्चिमी तिब्बत में कैलास-मानसरोवर की तीर्थयात्रा" विषय पर श्री शेखर पाठक का भाषण	09-02-1996
60.	"टैगोर : प्रथम भारतीय अभिव्यंजनावादी चित्रकार" विषय पर श्रीमती जयश्री सेनगुप्ता का भाषण	15-02-1996
61.	"भारत-चीन : परस्पर दृष्टि" विषय पर संगोष्ठी	01-03-1996
62.	"शंकर का संदेश : यह एक ज्ञानी की भक्ति है अथवा एक भक्त का ज्ञान है"	08-03-1996
63.	"संगीत परम्पराओं का प्रलेखन" विषय पर प्रो० वुल्फगैंग लाडे का भाषण	12-03-1996
64.	फिल्म शो : "काल"	13-03-1996
65.	"यूरोप की वैज्ञानिक क्रांति और उसकी एशियाई पृष्ठभूमि" विषय पर प्रो. फ्रित्स स्टाल का भाषण	14-03-1996
66.	"सिख धर्म ग्रंथों में विश्वजनीनता का संदेश" विषय पर डॉ. हरनाम सिंह शान का भाषण	20-03-1996